नई दिल्ली
शुक्रवार
17 मई, 2024
वर्षः 10, अंकः 255
पृष्ठः 08, मूल्य 2 रु0

E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

सद्भावना टुडे

आवाज़ अधिकार की

डराना छोड़, अपने वादों का लेखाजोखा जनता के...पेज-08

DELHIN/2014/58158

राजद और कांग्रेस वाले ही हिन्दू-मुस्लिम में...पेज-05

हिन्दी में प्रकाशित होने वाला सबसे लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र
'सद्भावना टुडे'
में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :-
011-43678240
E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

एक नजर

अमरनाथ यात्रा की तैयारियों की समीक्षा करने के लिए शाह पहुंचे श्रीनगर

श्रीनगर,एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह कश्मीर घाटी की दो दिवसीय यात्रा के लिए गुरुवार को श्रीनगर पहुंचे। अधिकारियों ने बताया कि श्री शाह इस दौरान वार्षिक अमरनाथ यात्रा की व्यवस्था की समीक्षा करेंगे। यात्रा जून में शुरू होने वाली है। वह प्रदेश के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेतृत्व से भी मिलेंगे और जम्मू-कश्मीर में संसदीय चुनाव के बाद राजनीतिक घटनाक्रम पर चर्चा करेंगे। उनके समाज के विभिन्न वर्गों के कुछ प्रतिनिधिमंडलों से भी मिलने की संभावना है। इससे पहले भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री सुनील शर्मा ने कहा कि श्री शाह का दौरा राजनीतिक है। उन्होंने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों के लोग, जिनमें गुज्जर, बेकरवाल, दल निवासी शामिल हैं, नागरिक समाज के सदस्य और अन्य लोग उनसे मिल सकते हैं, क्योंकि मिलने पर कोई प्रतिबंध नहीं होगा।

कपिल सिब्बल एससीबीए के अध्यक्ष चुने गए

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) के गुरुवार को हुए चुनाव में वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल को नया अध्यक्ष चुना गया। इस चुनाव में उपाध्यक्ष पद पर रचना श्रीवास्तव और सचिव पद पर विक्रांत यादव ने बाजी मारी। पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री सिब्बल ने 1,066 मतों के साथ जीत दर्ज की। उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी वरिष्ठ वकील प्रदीप राय 689 मत मिले। श्री सिब्बल इससे पहले तीन बार एससीबीए के अध्यक्ष रह चुके हैं। उन्होंने वर्ष 2001-02,1997-1998, 1995-1996 के चुनावों में जीत दर्ज की थी।

गुजरात के नर्मदा नदी में डूबे छह के शव बरामद

नर्मदा,एजेंसी। गुजरात में नर्मदा जिले के राजपीपणा के पोइचा गांव के निकट नर्मदा नदी में डूबे सात में से छह लोगों के शव गुरूवार को बरामद किए गए। मामलतदार डिजास्टर ने बताया कि राजपीपणा की एक, वडोदरा की दो, भरूच की एक, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की एक टीम ओर स्थानीय तैराकों ने नर्मदा नदी में डूबे सात में से तीन लोगों के शव बुधवार को तथा तीन अन्य शव आज बरामद किए गए । मृतकों की पहचान भावेश व. हडीया (15), भार्गव अ. हडीया (15), व्रजभाई हि. बलदाणिया, भरतभाई मे. बलदाणिया (45), आरनव भ. बलदाणिया (12) के रूप में हुई है। एक की पहचान अभी नहीं हो सकी है, जबकि अन्य एक की तलाश की जा रही है।

विपक्षी दल उनकी सरकार की नीतियों से हैं घबराए हुएः मोदी

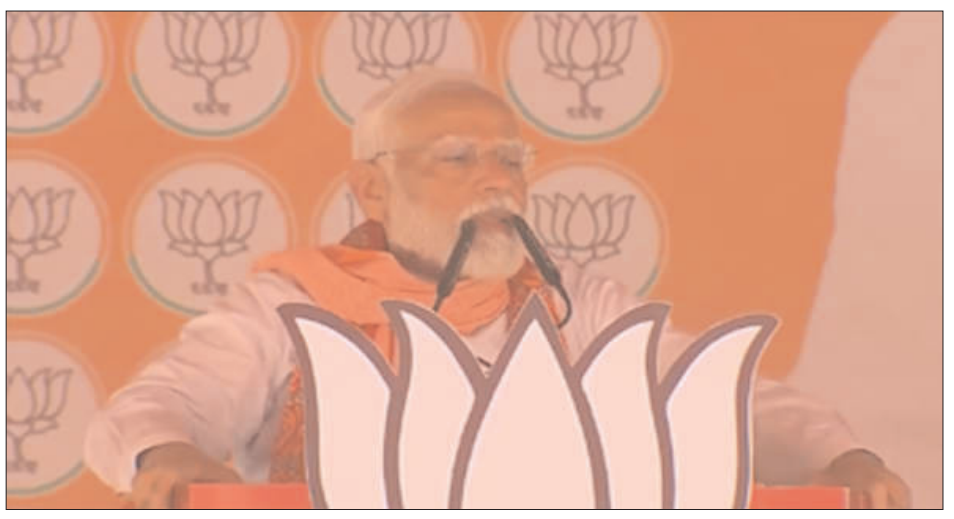

आजमगढ़,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि उनकी सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की वजह से विपक्षी दल घबराए हुए हैं और तरह-तरह का दुष्प्रचार कर रहे हैं। श्री मोदी ने गुरुवार को आजमगढ़ की लालगंज लोकसभा क्षेत्र के गंधुई में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि जनता जनार्दन का आशीर्वाद भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) साथियों पर है और जहां भी जाते हैं एक ही स्वर सुनाई देता है एक ही नारा गूंज रहा है और वह है एक बार फिर मोदी सरकार। आपका प्रेम और आपका आशीर्वाद हमारे पास है। दुनिया देख रही है कि भारत के लोगों को मोदी की गारंटी पर कितना भरोसा है।

उन्होंने नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (सीएए) कानून का जिक्र करते हुए 70 वर्षों में हजारों परिवार प्रताड़ना झेल करके अपनी बेटियों की इज्जत बचाने के लिए, अपना धर्म अपने परंपरा को बचाने के लिए मजबूरन मुसीबत के मारे भारत में आकर के शरण लिया, लेकिन कांग्रेस ने उनकी कभी सुध नहीं ली। इन शरणार्थियों में सबसे ज्यादा ज्यादातर दलित भाई बहन है। इन पर वहां तो जुल्म हुआ ही हुआ, कांग्रेस की सरकारों ने भी और उनके साथियों ने भी इन पर जुल्म करने में कोई कमी नहीं रखी। समाजवादी पार्टी (सपा), कांग्रेस और इंडिया समूह वालों ने उनके साथ क्या किया। इन्होंने सीएए के नाम पर झूठा दुष्प्रचार फैलाया और अब कहते हैं कि जिस दिन मोदी जाएगा इस कानून को खत्म कर दिया जाएगा। इसी तरह आज कांग्रेस पार्टी वाले कहते हैं की मोदी ने भले अनुच्छेद 370 हटाया ऐसा ही जब हमको मौका मिलेगा हम अनुच्छेद 370 को भी वापस ले आएंगे। उन्होंने कहा कि देश में कहीं भी घटनाएं होती थी तो सबसे पहले लोगों का ध्यान आजमगढ़ की तरफ जाता था, लोग आजमगढ़ की चर्चा करते थे और तब यहां सपा की सरकार थी। आजमगढ़ की प्रतिष्ठा के लिए ना कुछ सोचती थी ना कुछ करती। आतंकियों के समर्थन में दंगाइयों का सम्मान करते थे। घटना को अंजाम देने वाले आतंकियों को छोड़ा जाता था। राजनीतिकरण कर दिया जाता था। अनेक माताएं बहनें अपने बच्चों को बर्बाद होते देखी थी। अब ये इंडिया समूह वाले ट्रिपल डोज लेकर आए। एक तरफ ये लोग आदिवासी का आरक्षण छीनकर अपने वोट बैंक को देना चाहते हैं। यह लोग देश के बजट का 15 प्रतिशत भी सीधा अल्पसंख्यक के नाम पर अपने वोट बैंक को ही देना चाहते हैं। ये अंबेडकर के भावनाओं के संविधान का हनन करना चाहते हैं। श्री मोदी ने कहा कि इंडिया समूह तुष्टिकरण के दलदल में पूरी तरह धंस चुकी है। उन्होंने कहा कि सपा के शीर्ष नेता राम मंदिर को लेकर आए दिन घटिया बातें कर रहे हैं। कांग्रेस के शहजादे राम मंदिर को गालियां देने का मिशन ही चला रखा है। सिर्फ वोट बैंक को खुश करने के लिए यह लोग हमारी आस्था पर चोट कर रहे हैं। देश की महिलाओं का सम्मान बढ़ाने के लिए, मोदी आपका जीवन बेहतर बनाने के लिए दिन-रात एक कर रहा है। आज हर गरीब को मुफ्त अनाज मिल रहा है। हर गरीब को मुफ्त इलाज मिला और नल में जल, सस्ता सिलेंडर ऐसी अनेक सुविधाएं दी जा रही है। कांग्रेस की सरकार में उन लोगों ने आपकी कभी चिंता की नहीं की। उन्होंने कहा की मेरा तो मंत्र है सबका साथ सबका विकास। उन्होंने कहा कि बुजुर्गों के सम्मान में अब 70 साल के ऊपर के बुजुर्गों का भी मुक्त इलाज किया जाएगा। यह चिंता आपका बेटा मोदी करेगा। मोदी ने सौर ऊर्जा के माध्यम से एक और योजना शुरू की है इसमें बिजली बिल जीरो हो जाता है, आप हीरो बन जाएंगे। आज भाजपा सरकार में उत्तर प्रदेश का तेज विकास हो रहा है। आजमगढ़ में मंजरी एयरपोर्ट बना है, महाराजा सुहेलदेव यूनिवर्सिटी बनी है। किसान कल्याण के काम हो रहे हैं लेकिन उत्तर प्रदेश के शहजादे को इन कामों से पेट में क्यों दर्द होने लगता है इन्हें इस बात की चिंता है कि इनकी दुकान कैसे चलेगी। श्री मोदी ने कहा कि योगी जी दंगाइयों की माफियाओं की अपहरण करने वालों का स्वच्छता अभियान चला रखा है। अब उत्तर प्रदेश में तेजी से आधुनिक सेवाएं बनाई जा रही है। मुबारकपुर का साड़ी उद्योग हो या फिर निजामाबाद की मिट्टी के बर्तन या फिर यहां का और काम।

अपराधियों को पनाह देने से कनाडा में होगा गैंगवारः जयशंकर

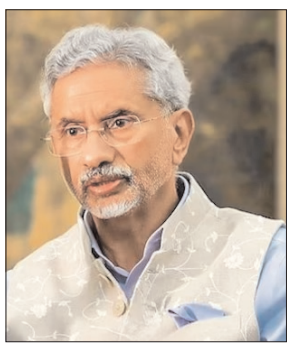

नासिक,एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गुरुवार को कहा कि खालिस्तान समर्थक अलगाववादी तत्वों को आश्रय देने के कारण कनाडा के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध खराब हो गए हैं। श्री जयशंकर ने यहां एक कार्यक्रम में सवालों को जवाब देते हुए कहा, ऐसे लोग जो अपराधी हैं, उनके कारण कनाडा अपने क्षेत्र में गिरोह युद्ध होते देखेगा। उन्होंने कहा, हर कोई जानता है कि इन दिनों कनाडा के साथ हमारे संबंध थोड़े खराब हो गए हैं, और इसका कारण कनाडा की घरेलू राजनीति है।

उन्होंने कहा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता किसी विदेशी देश में हिंसा की वकालत करने, अलगाववाद या आतंकवाद का समर्थन करने की स्वतंत्रता नहीं हो सकती है। लेकिन खालिस्तानियों का एक समूह है, जिसने कनाडा में दी गई स्वतंत्रता का दुरुपयोग किया है-अभी ही नहीं, वे वर्षों से ऐसा कर रहे हैं। विदेश मंत्री ने कहा, कनाडा की राजनीति में ये तत्व वोट बैंक की राजनीति का हिस्सा हैं, और उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। उन्होंने कहा, आज मैं एक तथ्य बताऊंगा कि इन लोगों की गतिविधियों के कारण हमारे द्विपक्षीय संबंध क्यों खराब हो गए हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय राजनयिकों को खालिस्तानी तत्वों द्वारा धमकियों दी जाती हैं और एक बार राजदूत के घर पर धुआं बम फेंका गया था। उन्होंने कहा कि जिसने भी भारत के खिलाफ अलगाववाद का समर्थन किया, उसे उस देश में आश्रय दिया गया। श्री जयशंकर ने कहा, हमें लगता है कि कनाडा की सरकार और राजनीति को इस पहलू पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। हमने उन्हें इस बारे में कई बार समझाने की कोशिश की है कि भले ही हमारे संबंध खराब हो जाएंगे, लेकिन ऐसे लोगों को शरण देना कनाडा के हित में नहीं है, जो अपराधी हैं - मैं इन तत्वों का वर्णन करने के लिए इससे बेहतर शब्द नहीं सोच सकता-क्योंकि वे कनाडा में भी गैंगवार लाएंगे। उन्होंने कहा, इसलिए उन्हें हमारा मामला समझना चाहिए, लेकिन अपनी आंतरिक राजनीति के कारण उन्होंने हमारी बात मानने से इनकार कर दिया है। ऐसे लोग भी हैं, जो इस पहलू का पूरा फायदा उठा रहे हैं। गौरतलब है कि विदेश मंत्री की टिप्पणी तब आई है, जब पिछले साल कनाडा में अलगावादी नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के मामले में कनाडा द्वारा चार भारतीय नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है और उन पर हत्या का आरोप लगाया गया है। निज्जर की हत्या के सिलसिले में करण बराड़, कमलप्रीत सिंह, करणप्रीत सिंह और अमनदीप सिंह को गिरफ्तार किया गया है।

नकारात्मक राजनीति करती है भाजपाः पवन खेड़ा

रायबरेली,एजेंसी। कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन पवन खेड़ा ने अमेठी के विकास में गांधी परिवार के योगदान का बखान करते हुये आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नकारात्मक राजनीति करती है। श्री खेड़ा ने गौरीगंज स्थित केंद्रीय कांग्रेस कार्यालय पर पत्रकारों से बातचीत में कहा अमेठी से चुनकर गये राजीव गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व कार्यकाल में भोजन का अधिकार, सूचना का अधिकार, जमीन के अधिकार, शिक्षा का अधिकार देश की जनता को दिये। वह सूचना संचार क्रांति लाए, इसलिये समूची कांग्रेस अमेठी की माटी की ऋणी है। उन्होने कहा कि भाजपा सिर्फ लड़ाने का काम करती है, और नकारात्मक राजनीति करती है, पिछले 10 साल में जो स्थिति इस देश के नौजवानों की हुई, इस देश के किसानों की हुई, वह सब सामने है। देश के छोटे उद्योग धंधे बंद हो गए, सेना का जवान चार साल में रिटायर किया जाएगा, जबकि प्रधानमंत्री 75 साल में भी मौका मांग रहे हैं। आखिर देश के नौजवानों का क्या दोष है क्या आप उन्हें 22 - 23 साल की उम्र में रिटायर कर रहे हैं, यह कहां का न्याय है। खेड़ा ने कहा कि यह ऐसे लोग हैं जो समाज में बांटने काम करते हैं बल्कि कांग्रेस के जो नेता स्वर्ग सिधार गये हैं, उनको भी विवाद में दिखाने बांटने की कोशिश करते हैं ऐसे लोगों को सत्ता से बाहर करना हम लोगों का परम कर्तव्य है। उन्होने कांग्रेस प्रत्याशी के.एल.शर्मा को जिताने की अपील करते हुए कहा कि आज अमेठी के लोगों को डराया जाता है, धमकाया जाता है, कोई काम नहीं किया और सवाल पूछने पर मुकदमे लिखवाये जाते हैं। अमेठी की जनता से देश के लोगों को बहुत उम्मीद है वह इसलिए की अमेठी की जनता इतिहास रचती है , इस बार देश को बचाने का जिम्मा अमेठी के लोगों है।

क्या अरविंद केजरीवाल ने ही पिटवाया स्वाती मालीवाल कोः भाजपा

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाती मालीवाल के साथ दुर्व्यवहार करने वाले को संरक्षण देने का आरोप लगाते हुए उनसे आज पूछा कि क्या सुश्री मालीवाल के साथ यह दुर्व्यवहार मुख्यमंत्री के इशारे पर ही किया गया है।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद स्वाती मालीवाल के साथ दुर्व्यवहार के मामले में श्री केजरीवाल पर जमकर हमला किया। श्री भाटिया ने कहा कि एक महिला सांसद के साथ हुए दुर्व्यवहार पर श्री केजरीवाल की चुप्पी से स्पष्ट होता है कि महिला सम्मान उनके लिए कोई मायने नहीं रखता है।

विपक्ष की नेत्री होने के बावजूद भारतीय जनता पार्टी सुश्री मालीवाल के लिए न्याय की लड़ाई लड़ रही है। नारीशक्ति के सम्मान के लिए भाजपा दल गत राजनीति की कभी परवाह नहीं करती है। उन्होंने कहा कि महिला सांसद के साथ दुर्व्यवहार का आरोपी अरविंद केजरीवाल के संरक्षण में उनके साथ घूम रहा है और वे समाजवादी पार्टी के मुख्यालय में भी दिखाई दिया। देश की जनता की ओर से भाजपा ने अरविन्द केजरीवाल से सवाल पूछे और जवाब की उम्मीद की है कि शीश महल में हो रहे पाप पर अरविंद केजरीवाल का क्या रुख है? जिस पर केजरीवाल को कार्रवाई करनी थी वह जुड़वा भाई बनकर उनके साथ घूम रहा है, क्यों? भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने यह स्पष्ट कर दिया है कि महिला सम्मान के लिए उनके पास कोई जगह नहीं है, कोई प्रतिबद्धता नहीं है कि वे कार्रवाई करें। उन्होंने पूछा कि क्या स्वाति मालीवाल को दबाव बनाकर जबरन कहीं रखा गया है? क्या श्री केजरीवाल के इशारे पर दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास पर स्वाति मालीवाल के साथ हुई मारपीट और दुर्व्यवहार की गई थी?

कांग्रेस ने पिछड़ों को कभी नहीं दी उचित हिस्सेदारीः शाह

सीतामढ़ी,एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह ने आरोप लगाया कि आजादी के बाद से कांग्रेस ने कभी भी पिछड़ों को उचित हिस्सेदारी नहीं दी वहीं नरेंद्र मोदी सरकार ने न केवल उन्हें उचित सम्मान दिया बल्कि शासकीय सेवाओं एवं शैक्षणिक संस्थानों में उनके लिए आरक्षण सुविधाओं का भी विस्तार किया। शाह ने सीतामढी लोकसभा सीट से राजग उम्मीदवार देवेश चंद्र ठाकुर के समर्थन में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी के बाद से कांग्रेस ने कभी भी पिछड़ों को उचित हिस्सेदारी नहीं दी। काका कालेलकर समिति ने वर्ष 1955 में अपनी रिपोर्ट दी थी, जिसमें सरकारी सेवाओं में पिछड़ों को आरक्षण देने की सिफारिशें की गई थी लेकिन पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाली तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने इसे ठंडे बस्ते में डाल दिया था।

पाकिस्तानी कर रहे भारत की तारीफः राजनाथ सिंह

संजय सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

लखनऊ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को कहा कि पाकिस्तान में भारत की तारीफ की जा रही है मगर यहां कुछ लोग झूठ बोल कर अपनी राजनीति को परवान चढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अपने संसदीय क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी के तौर पर एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुये उन्होने कहा पाकिस्तान की संसद में एक संसद सदस्य ने भारत की तारीफ करते हुए कहा है कि आज भारत विश्व की महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है जबकि वह हमारे बारे में अच्छी बात सोचता नहीं है। यह मोदी की गारंटी ही है, जो उसने मान लिया है कि भारत विकास के पथ पर तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। वहीं यहां पर कुछ राजनीतिक पार्टियां अपने निजी स्वार्थ के लिए पाकिस्तान का समर्थन करती हैं। यह झूठ बोलकर हमारे बीच गलतफहमी पैदा करती हैं।

उन्होने कहा भारतीय जनता पार्टी कभी झूठ बोलकर राजनीति नहीं करती है। हम एक सार्थक और जनहित की राजनीति करते हैं। भाजपा सरकार बनाने के लिए नहीं बल्कि देश बनाने के लिए राजनीति करती है।

राजाजीपुरम में आयोजित जनसभा में उन्होने कहा कि किसी भी प्रदेश का विकास बिना कानून व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त किये बिना नहीं किया जा सकता है। योगी के नेतृत्व में प्रदेश की कानून व्यवस्था काफी सुदृढ़ हुई है, जिसकी वजह से प्रदेश विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। रक्षा मंत्री ने कहा बर्बाद पाकिस्तान खुद को बचाने के लिए दुनिया के सामने भीख मांग रहा है। वहां पर हिंदुस्तान के समर्थन में नारे लग रहे हैं। वहीं यहां पर कुछ राजनीतिक फायदे के लिए पाकिस्तान की तरफदारी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्व के जाने माने राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार देश में एनडीए 400 से अधिक सीटों का नेतृत्व करने जा रही है, लेकिन यह ये लोग मानने को तैयार नहीं है। यह जनता जनार्दन के भारतीय जनता पार्टी पर विश्वास और उत्साह को समझने को तैयार नहीं हैं। रक्षा मंत्री ने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि यह सिर्फ झूठ की राजनीति करते हैं। इंदिरा गांधी ने वर्ष 1975 में इमरजेंसी लगाकर लोकतंत्र का गला घोंटा गया था। इन्होंने 132 बार संविधान में बदलाव का काम किया है। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने दस वर्ष के कार्यकाल में एक भी संविधान में बदलाव नहीं किया है। इनके पास मुद्दों का आकाल है इसलिए यह अनाप शनाप बातें कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले भारत की बात कोई गंभीरता से नहीं सुनता है, लेकिन आज पूरी दुनिया का ध्यान भारत की ओर है। आज विश्व के बड़े बड़े विद्वानों का कहना है कि वर्ष 2027 तक भारत दुनिया की टॉपर थ्री अर्थव्यवस्था वाला देश होगा।

मालीवाल मारपीट मामलाः मालीवाल ने पुलिस को बयान देकर कार्रवाई की उम्मीद जताई

नई दिल्ली,एजेंसी। आम आदमी पार्टी की सांसद स्वाति मलीवाल ने उनके साथ हुई दुर्व्यवहार की घटना को दुखद करार देते हुए कहा है कि उन्होंने पुलिस को बयान दिया है और उचित कार्रवाई की उम्मीद है।

सुश्री मालीवाल ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास पर हुई बदसलूकी के बारे में पुलिस को दिये बयान के बारे एक्स पर साझा किया। उन्होंने कहा, मेरे साथ जो हुआ वो बहुत बुरा था। मेरे साथ हुई घटना पर मैंने पुलिस को अपना बयान दिया है। मुझे आशा है कि उचित कार्रवाई होगी। पिछले दिन मेरे लिए बहुत कठिन रहे हैं। जिन लोगों ने प्रार्थना की उनका धन्यवाद करती हूँ। जिन लोगों ने चरित्र हनन करने की कोशिश की, ये बोला की दूसरी पार्टी के इशारे पर कर रही है, भगवान उन्हें भी खुश रखे। उन्होंने कहा, देश में अहम चुनाव चल रहा है, स्वाति मालीवाल ज़रूरी नहीं है, देश के मुद्दे ज़रूरी हैं। भाजपा वालों से ख़ास गुज़ारिश है इस घटना पर राजनीति न करें। ग़ौरतलब है सुश्री स्वाति के साथ मंगलवार को मुख्यमंत्री आवास पर श्री केजरीवाल के निजी सहायक विभव कुमार ने दुर्व्यवहार किया था। इस घटना की पार्टी की ओर से बुधवार कोनिंदा की गई और कहा गया कि मुख्यमंत्री ने इसे गंभीरता से लिया है।

सफदरजंग अस्पताल ने विश्व हीमोफीलिया दिवस मनाया

मो. हबीबुल्लाह उर्फ मुन्ना,
सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। सफदरजंग अस्पताल के हेमेटोलॉजी विभाग ने सोसाइटी फॉर हीमोफिलिया केयर ऑफ इंडिया के सहयोग से 15 मई को विश्व हीमोफिलिया दिवस मनाया। इसमें हीमोफीलिया के 70 रोगियों और उनके परिवार के सदस्यों, सफदरजंग अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक और अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक और हेमटोलॉजी विभाग के डॉक्टरों और कर्मचारियों सहित लगभग 120 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य हीमोफीलिया के प्रति लोगों को जागरूक करना था। एसजेएच केंद्र सरकार का एकमात्र अस्पताल है जहां हेमेटोलॉजी विभाग है। एसजेएच में हेमेटोलॉजी विभाग कई वर्षों से हीमोफिलिया के रोगियों का इलाज कर रहा है। एसजेएच में पहली बार विश्व हीमोफीलिया दिवस मनाया गया।

इस वर्ष विश्व हीमोफीलिया दिवस का विषय सभी के लिए समान पहुंच था, जिसका अर्थ है कि हीमोफीलिया से पीड़ित प्रत्येक रोगी को फैक्टर थेरेपी के साथ इलाज का समान अधिकार है। सफदरजंग अस्पताल केंद्र सरकार के धन के माध्यम से ऑन डिमांड थेरेपी के रूप में फैक्टर कंसंट्रेट निःशुल्क प्रदान करता है। अस्पताल सीजीएचएस और ईएसआई लाभार्थियों को भी सेवा प्रदान करता है जो नियमित कारक प्रोफिलैक्सिस पर भी हैं। सफदरजंग अस्पताल में हीमोफीलिया के मरीजों का विकलांगता प्रमाणपत्र भी जारी किया जाता है। सफदरजंग अस्पताल में हीमोफीलिया के निदान के लिए प्रशिक्षित प्रयोगशाला सुविधाएं और इस बीमारी के इलाज के लिए हेमेटोलॉजिस्ट हैं। सफदरजंग अस्पताल का हेमेटोलॉजी विभाग एक समर्पित हीमोफिलिया डे केयर सेंटर और क्लिनिक शुरू करना चाहता है जो हीमोफिलिया के रोगियों को व्यापक देखभाल प्रदान करेगा यह जानकारी हेमेटोलॉजी के एचओडी डॉ. जेएम खुंगर ने दी। अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वंदना तलवार ने फैक्टर के साथ-साथ गैर-फैक्टर उपचारों की खरीद में हेमेटोलॉजी विभाग के दृष्टिकोण का समर्थन किया। डॉ. वंदना तलवार को हीमोफीलिया के रोगियों के लिए एक व्यापक डे केयर सेंटर की आवश्यकता भी महसूस हुई। चर्चा के दौरान, हेमेटोलॉजी सलाहकार डॉ. सुमिता चौधरी ने सफदरजंग अस्पताल के आपातकालीन विभाग में कारक सहायता प्रदान करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान, क्लिनिकल हेमेटोलॉजी के सहायक प्रोफेसर डॉ अंकुर जैन ने हीमोफिलिया के उपचार के लिए कारक सांद्रता के साथ प्रारंभिक पहचान और समय पर उपचार के बारे में जागरूकता बढ़ाई। उचित अनुवर्ती कार्रवाई के लिए रोगियों को हेमेटोलॉजी के बाह्य रोगी विभाग में पंजीकृत कराना आवश्यक है। जागरूकता और संयुक्त प्रयासों से हीमोफीलिया एक इलाज योग्य बीमारी है।

लोकसभा चुनाव के मतदान शुरू, बुजुर्गों व दिव्यांगों से घर जाकर लिया जा रहा मतदान

सैफुल्लाह सिद्दीकी, सद्भावना टुडे

नई दिल्ली। दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए मतदान शुरू हो गए हैं। 85 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्ग व दिव्यांग मतदाता जिन्होंने फार्म भरकर घर से वोट देने की सुविधा मांगी थी, उनसे मतदान कराए जा रहे हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी की ओर से एक्स पर पोस्ट डालकर इसकी जानकारी दी गई है। दिल्ली में सात लोकसभा सीटें हैं, जिनके लिए सातवें चरण में 25 मई को मतदान होने हैं।

85 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाता जिन्होंने घर से मतदान करने के लिए आवेदन किया है, उनके लिए मतदान की प्रक्रिया दिल्ली में शुरू हो चुकी है। चुनाव आयोग की ओर से आदेश दिया गया था कि लोकसभा क्षेत्र के रिटर्निंग ऑफिसर तारीख और समय निर्धारित कर घर से मतदान करने वालों का मतदान ले सकते हैं। मतदान लेने से पहले राजनीतिक पार्टियों को भी सूचना देने को कहा गया था। मतदाताओं को पहले से सूचित करके टीम मतदान लेने के लिए मतदाता के घर पहुंच रही हैं। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी की ओर से ट्विटर (एक्स) पर पोस्ट डालकर दिल्ली के राजौरी गार्डन और पालम इलाके में जानकारी दी गई है। बीएलओ, पुलिस व अन्य स्टाफ मतदताओं से मतदान लेने के लिए जा रहे हैं। बता दें कि 25 मई को मतदान होने हैं। ऐसे में इससे पहले ही उन सभी दिव्यांगजनों व बुजुर्गों से घर पर जाकर मतदान लेना है, जिन्होंने इसके लिए आवेदन किया था। पोस्टल बैलेट के जरिए मतदान लिए जा रहे हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी पी. कृष्णमूर्ति ने हाल ही में बताया था कि दिल्ली में कुल 5472 मतदाताओं ने पोस्टल बैलेट के जरिए मतदान करने के लिए फार्म 12 डी भरा था।

पिकअप एंड ड्रॉप की मिलेगी सुविधा

दिल्ली में इस बार 85 वर्ष से अधिक मतदाताओं की संख्या 97823 है। वहीं, 77480 दिव्यांग मतदाता हैं। ऐसे मतदाता जिन्होंने फार्म 12 डी भरा हुआ था, रिटर्निंग ऑफिसर उनकी स्थिति को देखते हुए तय करेंगे कि घर से वोट लेना है या कैब से उन्हें मतदान केंद्र तक लाना है। इसके लिए सभी रिटर्निंग ऑफिसर को मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने वाहनों को हायर करने के लिए कहा था। मतदान केंद्र पर मतदाताओं की सुविधा के लिए 8000 वॉलंटियर्स, 4000 व्हील चेयर की व्यवस्था की गई है। वहीं, दृष्टिबाधित मतदाताओं के लिए ब्रेल लिपि में वोटर आईडी कार्ड बनाए गए हैं। पोस्टल बैलेट पर भी ब्रेल लिपि दर्ज है। जिससे आसानी से बैलेट पेपर छूकर दृष्टिबाधित चुनाव चिह्न को पहचान सकें।

ग्रीष्मोत्सव में बच्चे खेल-खेल में सृजनात्मक कलाओं में होंगे निपुण

नई दिल्ली। गर्मी छुट्टी में बच्चों के लिए राष्ट्रीय बाल भवन द्वारा ग्रीष्मोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। बच्चे सृजनात्मक गतिविधियों से खेल-खेल में विभिन्न कलाएं सीख सकेंगे। ग्रीष्मोत्सव में बच्चे विज्ञान, सृजन, प्रदर्शन कलाएं, संग्रहालय तकनीक सहित कई दूसरी गतिविधियों में हिस्सा ले सकेंगे। इसको लेकर बाल भवन द्वारा सूचना जारी कर दी गई है। बच्चों के लिए ग्रीष्मोत्सव 29 मई से 28 जून तक आयोजित किया जाएगा। मिली जानकारी के अनुसार पांच से लेकर 16 वर्ष के बच्चों के लिए सृजन कलाओं में चित्रकला, हस्तकला, बुनाई, सिलाई, काष्ठ शिल्प, मिट्टी का काम, फोटोग्राफी की गतिविधियां शामिल की गई है। बच्चे कंठ संगीत, वाद्य संगीत, शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य और नाट्य कला में भी महारत हासिल कर सकेंगे। ग्रीष्मोत्सव में बच्चों को पुस्तकालय कार्यकलाप, संग्रहालय तकनीक, गृह प्रबंधन एवं खाना पकाना जैसी चीजें भी सिखाई जाएंगी। विज्ञान से जुड़ी गतिविधियों में बच्चों के लिए खगोल विज्ञान, मछली घर, भौतिक विज्ञान, मशीन मॉडलिंग, पर्यावरण, प्राकृतिक विज्ञान के विषय को शामिल किया गया है। बच्चों में शारीरिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए बैडमिंटन, टेबल टेनिस, जूडो, स्केटिंग, क्रिकेट जैसे शारीरिक कार्यकलाप वाले खेल शामिल किए गए हैं। इसके अलावा बाल भवन में बच्चों के लिए कई दूसरी गतिविधियां भी है। ग्रीष्मोत्सव में हिस्सा लेने के लिए पहले आवेदन करना होगा। एक अधिकारी ने बताया कि आवेदन फॉर्म राष्ट्रीय बाल भवन में उपलब्ध होंगे।

जनता बनाम मनोज तिवारी में जीतेगी जनता: कन्हैया कुमार

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली से लोकसभा उम्मीदवार डॉ. कन्हैया कुमार ने आज सीमापुरी के काली माता मंदिर, नंद नगरी से शुरू हुई पदयात्रा का ऑटो मार्केट, संतोषपुरी होते हुए ष्ठ-3 ब्लॉक-58 चौक-बुद्ध विहार तक पदयात्रा निकाली। यात्रा के समापन पर डॉ. कन्हैया कुमार ने कहा कि इस यात्रा में शामिल होकर जिस तरह से जनता ने अपना प्यार और आशीर्वाद दिया इससे साफ हो गया है कि उत्तर पूर्वी दिल्ली में अब परिवर्तन होकर रहेगा।

डॉ. कन्हैया कुमार ने कहा कि ये चुनाव दो व्यक्तियों या दो पार्टियों के बीच नहीं है। ये चुनाव जनता बनाम सांसद मनोज तिवारी है। जनता सांसद से परेशान है, सांसद ने 10 सालों में उनके लिए कुछ नहीं किया, उनके सुख-दुख में उनका साथ नहीं दिया, जाम-जलभराव जैसी उनकी समस्याओं का समाधान नहीं किया। इसलिये इस बार का चुनाव जनता खुद लड़ रही है। डॉ. कन्हैया कुमार ने कहा कि मतदाताओं का एक वोट देश भर में हो रहे भयंकर भेदभाव और अन्याय को मिटाएगा। आपको अधिकार देने वाले संविधान की रक्षा करेगा। उन्होंने उत्तर पूर्वी दिल्ली के मतदाताओं से अपील की कि आपका एक वोट अपनी सरकार चुनने का अधिकार सुरक्षित कर लोकतंत्र बचाएगा। इसके साथ ही वंचितों के हक, भागीदारी और आरक्षण की रक्षा करेगा आपका एक वोट।

एमसीडी में भ्रष्टाचार करने वालों पर पैनी नजर

शबाना मलिक, संवाददाता

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में आम से लेकर खास और कर्मचारी से लेकर व्यापारी तक हर कोई नगर निगम से किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ है। दिल्ली नगर निगम चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी ने स्ष्ठ को मोस्ट करप्ट डिपार्टमेंट का नाम दिया था। अब क्क सत्ता में है। भ्रष्टाचार पर कितना अंकुश लगा है, इसे देखना होगा। विकास कार्यों के लिए राजस्व जुटाना जरूरी है। रेवेन्यू मिलेगा, तभी MCD काम कर पाएगी। कर्मचारियों को भी समय पर सैलरी मिल सकता है। दिल्ली नगर निगम में जब तक ठीके पर कर्मचारी रखने का प्रथा चलेगा, पक्के कर्मचारी नही रखा जाता तब तक दिल्ली नगर निगम से भ्र्ष्टाचार समाप्त नही हो सकता !इसके लिए इसमें स्टैंडिंग कमेटी की जरूरत है !कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी निगम के अंदर 18,20 बर्षों से काम करते आ रहे हैं,अभी तक कच्चे कर्मचारियों को पक्का नहीं किया गया है !जैसा कि सूत्रों से पता चला कि लाजपत नगर सेंट्रल जोन में हीरा-बेलदार जो करीब20 बर्षो से जे.एल.ओ.के ऑफिस में चाय,पानी,साफ सफाई के नाम पर कार्यरत है। जे.एल.ओ.आफिस में काम न करके जे.एल.ओ/ए एल ओ की मिली भगत के चलते बिल्डिंग डिपार्टमेंट में ए. ई और जे .ई के साथ भ्रष्टाचार में संलिप्त है,ऐसे लोगों के खिलाफ सम्पति की जांच तो होना ही चाहिए। सम्पति का उल्लेख पूरे सबूत के साथ दूसरे सम्पादकीय लेख में होगा।

छह झपटमार गिरफ्तार, नौ मोबाइल फोन व दो मोटरसाइकिल बरामद

नई दिल्ली। पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र थाना पुलिस ने दो दिनों में छह कुख्यात झपटपारों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से नौ मोबाइल फोन और वारदात में इस्तेमाल दो मोटरसाइकिलें बरामद हुई हैं। आरोपी दिल्ली-एनसीआर में वारदात को अंजाम देते थे। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। पुलिस उपायुक्त अपूर्वा गुप्ता ने बताया कि 13 मई को थाने की पेट्रोलिंग टीम को रात करीब आठ बजे एक झपटमार के आईएसबीटी आनंद विहार डिपो के पास आने की सूचना मिली। पुलिस ने मौके पर आरोपी को झपटे हुए एक मोबाइल फोन के साथ दबोच लिया। उसकी पहचान शिवम उर्फ अट्टू के रूप में हुई। पूछताछ में उसने पुलिस को उदय, नितेश उर्फ निक्की की संलिप्तता के बारे में बताया। साथ ही कहा कि मोबाइल फोन कल्याणपुरी निवासी जसवंत उर्फ मटरू को बेचा है। शिवम की निशानदेही पर पुलिस ने जसवंत को गिरफ्तार कर आठ मोबाइल फोन बरामद कर लिए। साथ ही पुलिस ने उदय व नितेश को देहरादून से मोटरसाइकिल समेत गिरफ्तार कर लिया। शिवम पर 12 व नितेश पर चार आपराधिक मामले पहले से दर्ज हैं। इस बीच थाने की एक अन्य टीम ने 14 मई को युवती महिमा के साथ ईडीएम मॉल के पास हुई लूट के मामले को सुलझाते हुए दो अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान न्यू सीमापुरी के आलिम और अनवर हुसैन के रूप में हुई। उनके पास से एक मोबाइल फोन व एक मोटरसाइकिल बरामद हुई है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने के कविता की जमानत याचिका पर सीबीआई से मांगा जवाब

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को शराब घोटाला के संबंध में भ्रष्टाचार के एक मामले में बीआरएस नेता के कविता की जमानत याचिका पर केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) से रुख पूछा। न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा ने सुनवाई के दौरान याचिका पर सीबीआई को नोटिस जारी किया है। हाईकोर्ट ने ईडी के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जमानत की मांग करने वाली के कविता की एक अन्य याचिका के साथ इस मामले को 24 मई के लिए सूचीबद्ध किया है। हाईकोर्ट ने नोटिस जारी किया और ट्रायल कोर्ट के आदेश के खिलाफ के कविता की एक अन्य याचिका पर सीबीआई से जवाब मांगा, जिसने जांच एजेंसी को हिरासत में उससे पूछताछ करने की अनुमति दी थी। कथित शराब घोटाले के संबंध में ईडी और सीबीआई द्वारा दर्ज दोनों मामलों में कविता न्यायिक हिरासत में हैं। उनका प्रतिनिधित्व वरिष्ठ अधिवक्ता विक्रम चौधरी और वकील नितेश राणा ने किया।

वहीं, ईडी मामले में उनकी जमानत याचिका उच्च न्यायालय के समक्ष लंबित है, जिसने एजेंसी को अपना जवाब दाखिल करने के लिए कहा है। उन्होंने ट्रायल कोर्ट के 6 मई के आदेश को चुनौती दी थी, जिसके तहत भ्रष्टाचार मामले के साथ-साथ मनी लॉन्ड्रिंग मामले में उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी गई थी। यह घोटाला 2021-22 के लिए दिल्ली सरकार की उत्पाद शुल्क नीति में कथित भ्रष्टाचार और मनी लॉन्ड्रिंग से संबंधित है। बता दें, ईडी ने के कविता (46) को 15 मार्च को हैदराबाद में बंजारा हिल्स स्थित उनके आवास से गिरफ्तार किया था। जबकि सीबीआई ने उन्हें तिहाड़ जेल से गिरफ्तार किया। ईडी मामले में अपनी जमानत याचिका में, बीआरएस नेता ने कहा कि उनका उत्पाद शुल्क नीति से कोई लेना-देना नहीं है। उनके खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय की सक्रिय मिलीभगत से केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा रचित एक आपराधिक साजिश है।

दिल्ली भाजपा प्रदेश कार्यालय में शॉर्ट सर्किट से लगी आग, 15 मिनट में पाया काबू

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में आए दिन शॉर्ट सर्किट से आग लगने की घटनाएं सामने आ रही हैं। दिल्ली बीजेपी प्रदेश कार्यालय में गुरुवार शाम अचानक आग लग गई। घटना की जानकारी मिलने के बाद फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची। इसके बाद 15 मिनट में आग पर काबू पा लिया गया। वहीं, राहत की बात है कि आग लगने की घटना में किसी भी व्यक्ति के घायल होने की खबर नहीं है। बताया जा रहा है कि दिल्ली भाजपा प्रदेश कार्यालय में अचानक से शाम करीब 4ः15 बजे बिजली मीटर बॉक्स में शॉर्ट सर्किट हो गया, जिसके चलते आग लग गई। कार्यालय स्टाफ ने मौके पर एनडीएमसी के बिजली कर्मचारी और फायर ब्रिगेड को घटना की सूचना दी। जहां टीमों ने 15 मिनट के अंदर ही आग पर पूरी तरह से काबू पा लिया। इसके बाद दिल्ली भाजपा प्रदेश कार्यालय के परिसर की बिजली फिलहाल काट दी गई है।

हालांकि, बिजली मीटर बॉक्स को ठीक करने के बाद पहले जैसा ही बिजली कनेक्शन शुरू कर दिया जाएगा। वहां मौजूद लोगों ने बताया कि शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगने के समय लोग घटनास्थल पर ही मौजूद थे। इसलिए तुरंत समय पर बिजली काट दिया गया। इसके कारण से आग ज्यादा नहीं फैल सकी। फिर बिजली विभाग के कर्मचारियों ने तुरंत आग पर काबू पा लिया। बता दें, दो दिन पहले भी दिल्ली के इनकम टैक्स ऑफिस के बिल्डिंग में आग लग गई थी। इस घटना पर फायर ब्रिगेड की 21 गाड़ियों ने काबू तो पा लिया लेकिन एक 46 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई। वहीं, बीते बुधवार की सुबह को पूर्वी दिल्ली के शकरपुर इलाके में स्थित एक कागज फैक्ट्री से अचानक आग लग गई थी। इस घटना में वेयरहाउस में काम कर रहे एक मजदूर की जलकर मौत हो गई।

चोरी कर ऑटो से हो जाते थे नौ दो ग्यारह, 2 शातिर बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने दो ऐसे शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है जो ऑटो से चोरियों को अंजाम दिया करते थे। शाहदरा जिला अंतर्गत मानसरोवर पार्क थाना पुलिस ने इन दोनों चोरों के पास से ऑटो रिक्शा बरामद किया है जिसका अपराध करने में इस्तेमाल किया जाता था। इन दोनों आरोपियों की पुलिस सरगर्मी से तलाश में जुटी हुई थी, इन्होंने नत्थूम कालोनी चौक इलाके में 1 मई को चोरी की वारदात को अंजाम दिया था।

मुखबिर से प्राप्तल सूचना के आधार पर इन दोनों को सीमापुरी इलाके से गिरफ्तार किया गया है। शाहदरा जिला पुलिस उपायुक्तआ सुरेंद्र चौधरी के मुताबिक नत्थूत कालोनी चौक पर 1 मई, 2024 को चोरी हुई थी जिसके बारे में एमएस पार्क थाने में शिकायत दर्ज करवायी गई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की, मामले की जांच के लिए एक टीम का गठन किया गया। जिसमें एएसआई सतपाल, एएसआई कुलदीप, हेड कांस्टेरबल अनुज और हेड कांस्टेपबल प्रदीप को शामिल रहे।

इस टीम को गुप्तप सूचना मिली कि 1 मई को चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले चोर सीमापुरी इलाके में श्मगशान घाट के पास खड़े ऑटो रिक्शो में मौजूद हैं। इसके बाद पुलिस ने तुरंत सूचना पर कार्रवाई करते हुए आरोपियों के खिलाफ दबिश दी और उनको दबोच लिया गया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान अमन निवासी जगतपुरी, शाहदरा, दिल्ली और साकिर निवासी अशोक नगर, गाजियाबाद, यूपी के रूप में की गई है। दोनों आरोपियों से लगातार पूछताछ की गई जिसके बाद उन्होंने नत्थूी कालोनी चौक की चोरी की वारदात को अंजाम देने की बात को कबूल कर लिया है। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार करने के बाद घटनास्थल से ऑटो रिक्शा को बरामद कर लिया है जिसका क्राइम में इस्तेमाल होता था।

भूमि की बिक्री पर विवाद कि स्थिति में हाईकोर्ट ने जामिया से मांगा जवाब

शाहनवाज सैफ, संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने जामिया मिलिया इस्लामिया (जेएमआई) से एक पूर्व रजिस्ट्रार द्वारा लगाए गए आरोप पर स्पष्टीकरण मांगा है कि विश्वविद्यालय ने अपनी प्रमुख भूमि को किसी तीसरे पक्ष को बेचने की अनुमति देने के लिए एक अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) पिछली तारीख पर जारी किया था, ताकि प्रतिकूल अदालती आदेश को दरकिनार किया जा सके।

हाल ही में रजिस्ट्रार रहे नाज़िम हुसैन अल जाफ़री ने एक चौंकाने वाले खुलासे में अदालत को बताया कि एनओसी जारी करने से इनकार करने के बावजूद, जेएमआई ने उस भूमि की बिक्री को मंज़ूरी दे दी, जिस पर उसके पास अग्रिम अधिकार हैं। जाफ़री कार्यकारी परिषद के सचिव भी थे - निर्णय लेने वाली संस्था जिसमें भारत के राष्ट्रपति, जेएमआई के विज़िटर के तीन नामित व्यक्ति भी शामिल हैं। एक हलफ़नामे में, जाफ़री ने प्रस्तुत किया कि जब भूमि की बिक्री की अनुमति देने का निर्णय लिया गया था, तब वह रजिस्ट्रार के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले साल 4 अगस्त को ईसी की बैठक के तुरंत बाद, तत्कालीन कुलपति ने उनसे तीसरे पक्ष के पक्ष में एनओसी जारी करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया क्योंकि उनके पास गंभीर आपत्तियाँ थीं। जाफ़री ने कहा कि 23 अगस्त को, मामला अचानक चरम पर पहुँच गया क्योंकि उनसे कुलपति ने संपर्क किया जो बहुत ही उत्तेजित मूड में लग रहे थे और मुझे जबरन कहा गया कि तुरंत एक पिछली तारीख का एनओसी जारी करें क्योंकि हाईकोर्ट में एक रिट याचिका दायर की गई थी और उसी को अगले ही दिन सूचीबद्ध किया जाना था। जब अदालत ने पहली सुनवाई में ही प्रस्तावित बिक्री पर रोक लगा दी, तो खरीदार ने एक खंडपीठ का रुख किया, जहाँ जेएमआई ने एक एनओसी पेश किया और दावा किया कि यह पहले ही जारी किया जा चुका है। इसका हवाला देते हुए, जाफ़री ने दावा किया कि ऐसा कोई निर्णय नहीं लिया है! जेएमआई प्रशासन द्वारा अवैध रूप से एक पिछली तारीख का एनओसी तैयार किया गया था। विजिटर मनोनीतियों का प्रतिनिधित्व करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता विभा डी मखीजा और एम. सरवर ने पहले इस बात पर प्रकाश डाला था कि मनोनीतियों ने, जो तटस्थ पक्ष हैं, इस आधार पर जकिया जहीर नामक एक व्यक्ति को एनओसी दिए जाने का विरोध किया था कि यह जेएमआई के हितों के खिलाफ है। अदालत जामिया मिडिल स्कूल में वर्तमान में शारीरिक शिक्षा शिक्षक के रूप में कार्यरत और जामिया स्कूल शिक्षक संघ के निवर्तमान सचिव हरीसुल हक की याचिका पर विचार कर रही है, जिसमें इस आधार पर बिक्री को चुनौती दी गई है! विश्वविद्यालय उचित कानूनी प्रक्रियाओं का पालन किए बिना एनओसी जारी करने का प्रयास कर रहा है। हक की ओर से पेश हुए अधिवक्ता अमित जॉर्ज ने तर्क दिया कि विश्वविद्यालय के एक जिम्मेदार पदाधिकारी ने ही बिक्री प्रक्रिया में अवैधताओं के बारे में खुलासा किया था। नामांकितियों की असहमति के बावजूद, विश्वविद्यालय ने एनओसी जारी करने के साथ आगे बढ़ते हुए दावा किया कि बैठक होने के साथ कुछ मिनटों में इसे मंजूरी दी गई थी, भले ही मिनटों पर हस्ताक्षर नहीं किए गए थे, याचिका में आरोप लगाया गया है।

एक नजर

हरियाणा से लाई 10 हजार क्वार्टर शराब बरामद

नई दिल्ली। द्वारका जिला के स्पेशल स्टाफ और एंटी ऑटो थेफ्ट स्क्वाड की ज्वाइंट पुलिस टीम ने शराब तस्करी के एक बड़े मामले का खुलासा किया है। इस मामले में 10 हजार क्वार्टर शराब बरामद की गई है। पुलिस टीम ने शराब तस्करी करने वाले मास्टरमाइंड को भी गिरफ्तार किया है। उसकी पहचान अतुल के रूप में हुई है। वह उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर का रहने वाला है। डीसीपी द्वारका अंकित सिंह ने बताया कि शराब तस्करी को रोकने के लिए पुलिस की आपरेशन सेल की टीम को लगाया गया है। इसी को देखते हुए पुलिस टीम लोकल इनफॉर्मर और अपने सोर्स की मदद से लगातार पता लगा रही है। पहले भी शराब की खेप स्पेशल स्टाफ, एएटीएस के द्वारा बरामद की जा चुकी है। इसी कड़ी में स्पेशल स्टाफ और एएटीएस के इंचार्ज इंस्पेक्टर कमलेश कुमार की टीम को शराब तस्करी के बड़े मामले के बारे में पता चला था। उस सूचना पर एसआई दिनेश कुमार, एएसआई रेशम सिंह, तोपेश, हेड कॉन्स्टेबल विजेंदर, राजवीर, हेमचंद और कांस्टेबल प्रदीप की टीम ने जानकारी को डेवलप करना शुरू किया। जैसे ही जानकारी कंफर्म हुई कि शराब की एक बड़ी खेप हरियाणा से बड़े टेंपो में भरकर दिल्ली लाई जा रही है। इसे डाबड़ी इलाके में सप्लाई किया जाएगा। पुलिस टीम ने ट्रैप लगाया, उस टेंपो को डाबड़ी इलाके में पहुंचते ही पुलिस टीम ने रोक लिया। उसकी तलाशी ली गई तो उसके अंदर 200 कार्टून शराब के भरे हुए थे, जिसमें शराब के 10 हजार क्वार्टर भरे हुए थे। जो सिर्फ हरियाणा में ही बिकने के लिए मान्य थे। पुलिस टीम ने टेंपो के ड्राइवर अतुल को गिरफ्तार कर लिया। उसने बताया कि वह राजेश के डायरेक्शन पर शराब तस्करी का यह गोरखधंधा कर रहा था। उसे डाबड़ी में शराब की सप्लाई करनी थी, क्योंकि उसे शॉर्ट कट से अच्छे पैसे की कमाई हो रही थी। पुलिस टीम अब इस मामले में आगे की और छानबीन कर रही है। पुलिस अब सप्लायर तक पहुंचने की कोशिश कर रही है।

यादव सिंह की गिरफ्तारी पर रोक

नई दिल्ली/नोएडा। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को अरबों रुपये के भ्रष्टाचार के मामले में आरोपी और नोएडा प्राधिकरण के पूर्व मुख्य अभियंता यादव सिंह को बड़ी राहत देते हुए उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। शीर्ष अदालत ने मामले में सीबीआई द्वारा विशेष अदालत में पूरक आरोपपत्र दाखिल किए जाने के बाद जारी गिरफ्तारी वारंट को चुनौती देने वाली सिंह ओर से दाखिल याचिका विचार करते हुए यह अंतरिम आदेश दिया है। जस्टिस ऋषिकेश रॉय और प्रशांत कुमार मिश्रा की पीठ ने यह आदेश तब दिया, जब सिंह की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता नीरज किशन कौल ने कहा कि मामले में सीबीआई द्वारा पूरक आरोपपत्र दाखिल करने के बाद उनके मुवक्किल के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। उन्होंने याचिकाकर्ता सिंह की गिरफ्तारी की आशंका जताते हुए, इस पर रोक लगाने की मांग की। वरिष्ठ अधिवक्ता कौल की दलीलों पर संज्ञान लेते हुए, पीठ ने उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी। पीठ ने यादव सिंह की याचिका को चार सप्ताह बाद सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया है। साथ ही, याचिका पर सीबीआई को नोटिस जारी कर अपना जवाब दाखिल करने का आदेश दिया है। भ्रष्टाचार के मामले में आरोपी सिंह की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कौल ने पीठ को बताया कि इस मामले में उनके मुवक्किल के तीन साल से अधिक समय तक जेल में रहने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें जमानत दी थी। उन्होंने पीठ से कहा कि मामले में नया पूरक आरोपपत्र दाखिल किए जाने के बाद नए सिरे से गिरफ्तारी की आशंका है। मामले में सीबीआई को नोटिस जारी करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगले आदेश तक याचिकाकर्ता सिंह के खिलाफ किसी तरह की कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की जाएगी। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने अक्तूबर, 2019 को यादव सिंह को जमानत देते हुए रिहा कर दिया था। यह था मामला - भ्रष्टाचार के इस मामले में सिंह पर दिसंबर 2011 में कथित तौर पर 954 करोड़ रुपये के 1280 रखरखाव ठेकों का काम महज आठ दिन में कराने का आरोप था। सीबीआई ने जनवरी 2012 में सिंह के खिलाफ भ्रष्टाचार और अन्य आरोपों में मुकदमा दर्ज किया था।

सोसाइटी की दसवीं मंजिल से कूदकर छात्रा ने जान दी

ग्रेटर नोएडा। ग्रेनो वेस्ट की सोसाइटी में रहने वाली 12वीं कक्षा की छात्रा ने गुरुवार सुबह दसवीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा कि हाल में आए बोर्ड परीक्षा के रिजल्ट में कम अंक आने से छात्रा परेशान थी। इसके चलते उसने यह कदम उठाया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। बिसरख कोतवाली पुलिस के मुताबिक एग्जॉटिका ड्रीम वैली सोसाइटी में चक्रेश जैन परिवार के साथ रहते हैं। चक्रेश जैन की 17 वर्षीय बेटी ईशानी ने 12वीं कक्षा की परीक्षा दी थी। पुलिस के मुताबिक 12वीं परीक्षा के रिजल्ट में छात्रा के कम अंक आए थे, जिसकी वजह से वह परेशान थी। पिछले दो-तीन दिन से वह मानसिक तनाव में चल रही थी। इसी तनाव के चलते ईशानी ने गुरुवार की सुबह सोसाइटी की दसवीं मंजिल से छलांग लगा दी। सोसाइटी के लोगों ने ईशानी को नजदीक के अस्पताल में भर्ती करवाया। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। हादसे की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की छानबीन की। पुलिस का कहना है कि परिवार से बातचीत की गई है। परिवार से बातचीत में भी परीक्षा में कम अंक आने पर छात्रा के तनाव में होने की बात सामने आई है।

दिल्ली में 18 मई से चुनाव प्रचार का आगाज करेंगे राहुल गांधी

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी शनिवार, 18 मई, 2024 से चांदनी चौक लोकसभा क्षेत्र की वजीरपुर विधानसभा के अशोक विहार स्थित रामलीला मैदान में विशाल जनसभा को सम्बोधित करके दिल्ली में लोकसभा चुनाव के प्रचार का आगाज करेंगे। चांदनी चौक लोकसभा से कांग्रेस उम्मीदवार जय प्रकाश अग्रवाल मैदान में है।

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने आज अशोक विहार के रामलीला मैदान में होने वाली विशाल जनसभा की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि दिल्ली के कांग्रेस कार्यकर्ताओं और नेताओं का आव्हान किया कि जन नायक राहुल गांधी को सुनने के लिए हजारों की संख्या में चांदनी चौक लोकसभा क्षेत्र सहित दिल्ली भर से हजारों लोग 18 तारीख को अशोक विहार के रामलीला मैदान पहुँचेंगे। देवेन्द्र यादव ने कहा कि जनसभा की तैयारियों के लिए हमें मिलकर सारे इंतजाम करने है। आने वाले लोगों के बैठने की व्यवस्था, गर्मी के मौसम में पीने के पानी की व्यवस्था आदि सब ठीक ठाक हो, इसका विशेष ख्याल रखना होगा। साथ ही साथ सभी जिला अध्यक्षों विशेषकर आदर्श नगर जिला और चाँदनी चौक जिला अध्यक्षों को लोगों को व्यवस्थित तरीके से राहुल गांधी की जनसभा में पहुंचने के लिए अपने-अपने क्षेत्रों में ई रिक्शा और ऑटो रिक्शा द्वारा प्रचार करने लिए कहा है। उन्होंने कहा कि जो क्षेत्रीय लोग और कार्यकर्ता रैली में आएंगे उनके लिए रामलीला मैदान में पर्याप्त व्यवस्था करने की जिम्मेदारी भी जिला अध्यक्षों की दी गई है। 18 मई को होने वाली राहुल गांधी जनसभा की तैयारियों को जायजा लेने वालों में प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के अलावा कम्युनिकेशन विभाग के चेयरमैन एवं पूर्व विधायक अनिल भारद्वाज, पूर्व विधायक राजेश जैन, अ0भा0क0 कमेटी के पूर्व सचिव मनीष चतरथ, वरिष्ठ नेता चत्तर सिंह, कमल कांत शर्मा, अ0भा0क0 कमेटी के पूर्व सचिव तरुण कुमार, जे.एस. न्योल, मुदित अग्रवाल, जिला अध्यक्ष मनोज यादव सहित क्षेत्रीय नेता भी उपस्थित थे।

नोएडा पुलिस की कस्टडी में युवक की मौत के बाद बड़ा एक्शन, पूरी चौकी सस्पेंड

ग्रेटर नोएडा। नोएडा पुलिस की कस्टडी में एक युवक की मौत हो गई। जिसके बाद पूरे पुलिस डिपार्टमेंट में हड़कंप मच गए। उच्च अफसरों ने हाथ-पांव फूल गए। अब इस मामले में बिसरख थाना क्षेत्र में स्थित चिपियाना पुलिस चौकी को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया है। इसके साथ ही इस मामले में रिपोर्ट दर्ज भी की जा रही है। नोएडा पुलिस ने इस सनसनीखेज घटना के बाद बयान जारी करते हुए कहा है कि पूरी चौकी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। मृतक के शव का पोस्टमार्टम मजिस्ट्रेट द्वारा करवाया जा रहा है। शव का पोस्टमार्टम के लिए डॉक्टरों का एक पैनल बनाया गया। पोस्टमार्टम की वीडियोग्राफी भी की जाएगी। पीड़ित जितेंद्र ने बताया कि पुलिस उनके भाई को बुधवार की शाम को लेकर आई थी। उनके भाई को छोड़ने के एवज में 5 लाख रुपये की पुलिस ने रिश्वत मांगी। जिसमें से 50 हजार रुपये जितेंद्र ने बुधवार की देर रात को ही दे दिए थे। पुलिस ने कहा था कि उनके भाई को गुरुवार की सुबह छोड़ दिया जाएगा, लेकिन पुलिस ने उनके भाई को नहीं छोड़ा। अब उसकी लाश पुलिस चौकी में फांसी से लटकी हुई मिली। इस बड़ी घटना के बाद पुलिस अफसरों की नींद उड़ गई है। इस बड़ी घटना के बाद एसीपी हेमंत उपाध्याय ने मोबाइल फोन उठाना बंद कर दिया। बताया जा रहा है कि एक लड़की के गायब होने के बाद युवक को पूछताछ के लिए बुलाया गया था, लेकिन पुलिस हिरासत में युवक की मौत हो गई। युवक की लाश पुलिस चौकी के अंदर फांसी पर लटकी हुई मिली है।

समिट इंडिया ने मुख्य भूमिकाओं में प्रतिष्ठित लीडर्स को नियुक्त किया

शोएब आलम, संद्भावना टुडे

नई दिल्ली। समिट इंडिया ने संगठन के अंदर कई प्रतिष्ठित लोगों को महत्वपूर्ण कार्यभार सौंपने की घोषणा की है, जिससे संगठन की लीडरशिप टीम मजबूत बनेगी। समिट इंडिया के अनुसार ब्रिगेडियर गौतम गांगुली को चेयरपर्सन, प्लानिंग एवं स्ट्रेट्जी काउंसिल; संजय श्रीवास्तव को चेयरमैन, उत्तराखंड चैप्टर; राम विलास वेदांती को इंटरनेशनल प्रेसिडेंट, अयोध्या प्रोजेक्ट; डॉ. आरके वर्मा को चेयरपर्सन, इंटरनेशनल काउंसिल फॉर हेल्थ एंड एजुकेशन और जिग्नेश विराडिया को चेयरपर्सन, घाना चैप्टर का कार्यभार सौंपा गया है।

इस नियुक्ति के बारे में महासचिव महेश वर्मा समिट इंडिया ने कहा ने कहा, ''हमें समिट इंडिया में महत्वपूर्ण पदों पर इन प्रतिष्ठित लोगों की नियुक्ति की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। इनमें से प्रत्येक के पास अपनी भूमिकाओं में विशेषज्ञता, नेतृत्व और प्रतिबद्धती की अद्वितीय पूंजी है। उनकी रणनीतिक दूरदर्शिता और वर्षों के अनुभव के साथ वो हमारे संगठन की वृद्धि और सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। हम उनके बहुमूल्य योगदान के साथ अपने मिशन को आगे बढ़ाने और अपने समुदायों में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए आशान्वित हैं। समिट इंडिया ने नए कार्यभार संभालने वालों के बारे में जानकारी दी है। इनमें संजय श्रीवास्तव पत्रकार, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्हें मीडिया में काम करने का 25 सालों का अनुभव है। जिग्नेश विराडिया जी एक डायनैमिक उद्यमी और बिज़नेस लीडर हैं, जो स्वास्थ्य, 'मेक इन इंडिया' कंपनियों और उत्पादों को बढ़ावा देने, फाइनेंसिंग एवं एग्रोकमोडिटीज़ जैसे क्षेत्रों में विस्तृत पोर्टफोलियो संभाल चुके हैं। वो घाना में भारतीय समुदायों में एक प्रतिष्ठित हस्ती हैं और सामुदायिक विकास एवं सांस्कृतिक एकीकरण के अनेक प्रभावशाली अभियानों में मुख्य भूमिका निभा चुके हैं। ब्रिगेडियर गौतम गांगुली सेना मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल के साथ रेजिमेंट ग्रेनेडियर्स से भारतीय सेना के एक अत्यधिक सम्मानित सैन्य अधिकारी हैं। वह नेशनल सिक्योरिटी गार्ड (एनएसजी) ब्लैक कैट कमांडोज़ में फोर्स कमांडर के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। उन्होंने भारत में एनएसजी ऑपरेशंस का, मुख्यत: पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा पठानकोट एयरबेस पर हुए हमले के दौरान नेतृत्व किया है।

नोएडा प्राधिकरण पहुंचे चेयरमैन मनोज सिंह, घर खरीदारों को परेशान करने वाले बिल्डरों पर गिरेगी गाज

अशोक कुमार, सद्भावना टुडे संवाददाता

नोएडा। गुरुवार को औद्योगिक विकास आयुक्त एवं प्राधिकरण के चेयरमैन मनोज सिंह नोएडा पहुंचे। वहां पर उन्होंने तमात मुद्दों पर अफसरों के साथ लम्बी बातचीत की है। बैठक में एक बार फिर घर खरीदारों के मुद्दे को उठाया गया। अब बकाए का भुगतान न करने वाले बिल्डरों पर नोएडा और ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण कार्रवाई करने की तैयारी कर रहा है। बकाया राशि के भुगतान में विफल रहने से फ्लैट खरीदारों की रजिस्ट्री भी प्रभावित हो रही है। इस मुद्दे पर समीक्षा करने के लिए चेयरमैन मनोज सिंह नोएडा आए हैं।

बकायेदार बिल्डरों के खिलाफ होगा एक्शन

मिली जानकारी के मुताबिक समीक्षा बैठक में बकाया राशि का भुगतान न करने वाले बिल्डरों के खिलाफ कड़े कदम उठाने की बात हुई हैं। यूपी सरकार ने अमिताभ कांत समिति की सिफारिशों पर आधारित एक पैकेज को दिसंबर 2023 में मंजूरी दी थी। इस शासनादेश के तहत बिल्डरों को 1 अप्रैल 2020 से 31 मार्च 2022 तक का गैर-दंडात्मक कालखंड (जीरो पीरियड) प्रदान किया गया था।

57 परियोजनाओं के बिल्डरों को नोटिस भेजा

शासनादेश आने के बाद नोएडा प्राधिकरण के वित्त विभाग ने बिल्डरों के बकाए की गणना शुरू की थी। फरवरी में गणना का पूरा ब्योरा तैयार कर लिया गया था। सभी 57 परियोजनाओं के बिल्डरों को बकाये से संबंधित पत्र भेजे गए। उसके बाद 12 फरवरी तक सभी बिल्डरों को बकाये की जानकारी दे दी गई थी। शासनादेश के मुताबिक बकाये की जानकारी दिए जाने के 60 दिनों के भीतर बिल्डरों को कुल बकाये का 25 प्रतिशत जमा करना था।

450 करोड़ रुपये नोएडा प्राधिकरण को मिलेंगे

इस आधार पर 12 अप्रैल तक बिल्डरों को राशि जमा करनी थी, लेकिन 15 मई तक केवल 20 में से 44 बिल्डरों ने ही भुगतान किया है। इन 20 बिल्डरों ने 170 करोड़ 77 लाख रुपये जमा कराए हैं। इनसे आगे चलकर प्राधिकरण को लगभग 450 करोड़ रुपये मिलेंगे। अब तक राशि जमा करा चुके बिल्डरों की परियोजनाओं में 530 फ्लैटों की रजिस्ट्री हुई है, जबकि लगभग 1500 फ्लैटों की रजिस्ट्री की जानी है। ऐसे में बकाया राशि न चुकाने वाले बिल्डरों पर अब प्राधिकरण सख्त कार्रवाई करने जा रहा है।

बढ़ती उम्र के साथ होने वाले बदलाव पर एम्स रखेगा नजर

शहजाद सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। बढ़ती उम्र के साथ शरीर में होने वाले बदलाव सहित दूसरे कारणों का पता लगाने के लिए एम्स शोध शुरू करेगा। इस शोध के लिए 10 साल से 80 साल की उम्र के लोगों का चयन किया जाएगा। शोध के दौरान इन चयनित लोगों के दिल, दिमाग, मन समेत शरीर के दूसरे अंगों की बनावट और उसमें होने वाले बदलाव का सूक्ष्म स्तर पर अध्ययन किया जाएगा। इसमें देखा जाएगा कि उम्र बढ़ने के साथ इनमें क्या बदलाव होता है। शोध के लिए कुल 200 लोगों का चयन होगा। इन 200 लोगों को उम्र के आधार पर पांच अलग-अलग ग्रुप में बांटा जाएगा। ग्रुप बनाने के दौरान एक ही परिवार के लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी, ताकि अध्ययन के दौरान पूरी पीढ़ी के कारकों का अध्ययन किया जा सके। यह अध्ययन तीन साल तक चलेगा। अध्ययन के बाद पता चलेगा कि बुजुर्ग होने के साथ शरीर की बनावट व दूसरे हिस्सों में क्या बदलाव आते हैं। इससे भविष्य में होने वाले रोग की पहले ही पहचान हो सकेगी। साथ ही उक्त रोग के कारणों का भी पता चल सकेगा।

विशेषज्ञ बताते हैं कि हर पीढ़ी में कोई न कोई कारण होते हैं जो उम्र बढ़ने के साथ शरीर को कमजोर बनाते हैं। साथ ही शरीर को रोगी भी बनाता है। कारण पता चलने पर उक्त

कारकों को पहले ही सुधारा जा सकेगा। वृद्धावस्था चिकित्सा विभाग की डॉक्टर राशि जैन ने बताया कि उम्र बढ़ने के साथ पीढ़ी में होने वाली जटिलताओं को सुलझाने में मदद मिलेगी। शोध के लिए अत्याधुनिक तकनीकों और बहु-विषयक दृष्टिकोण को चुना गया है। शोध के बाद कारणों का पता चल जाएगा। भविष्य में उन कारणों के आधार पर जांच की सुविधा विकसित की जाएगी। साथ ही वैज्ञानिक और स्वास्थ्य देखभाल को भी तैयार किया जा सकेगा।

इनका होगा सूक्ष्म विश्लेषण

-शारीरिक क्रिया विज्ञान
-पर्यावरणीय कारक
-शरीर के अंगों की नियमित जांच
-शरीर को बुजुर्ग बनाने वाले कारक की जांच
-उम्र के साथ ब्रेन के काम करने की क्षमता

क्या होगा फायदा

बुजुर्ग होने वाले रोग के लिए जिम्मेदार जीन की पहचान हो सकेगी। इसकी मदद से युवा उम्र में ही उसका इलाज हो सकेगा। इससे पीढ़ी में होने वाली समस्या को रोका जा सकता है।

बर्खास्त दरोगा को बहाल करने का आदेश

नोएडा। इलाहबाद हाईकोर्ट ने गौतमबुद्ध नगर पुलिस कमिश्नर द्वारा बर्खास्त किए गए दरोगा को बहाल करने का आदेश दिया है। हाईकार्ट ने बर्खास्तगी की इस कार्रवाई को नियम विरुद्ध माना है। हाईकोर्ट की ओर से आदेश की कॉपी गौतमबुद्ध नगर पुलिस को भेजी जा चुकी है। एंटी करप्शन की टीम ने 23 जनवरी 2023 को सेक्टर इकोटेक-1 थाने में तैनात वर्ष 2019 बैच के दरोगा गुलाब सिंह को चार लाख रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया था। आरोप था कि उन्होंने नेवी में तैनात रहे कमांडर राजीव सरदाना से एक मामले की विवेचना में लाखों रुपये मांगे थे। दरोगा ने रुपये देने के लिए उन्हें सूरजपुर बुलाया था। इसकी शिकायत राजीव सरदाना की ओर से एंटी करप्शन से की गई थी। एंटी करप्शन की टीम ने रिश्वत के रूप में दी जाने वाली रकम पर निशान लगा दिए थे। साथ ही, उनके नंबर भी नोट कर लिए थे। दरोगा द्वारा बताए गए स्थान पर एंटी करप्शन की टीम पहले से पहुंच गई थी। कुछ देर बाद दरोगा भी पहुंचा। दरोगा से कुछ देर बात करने के बाद राजीव ने उसे चार लाख रुपये दिए थे।

आजादी के बाद भारत में कम हुए देश की चिंता करने वा ले: प्रो. योगेश सिंह

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि आजादी के बाद भारत में अपनी चिंता करने वाले बढ़े हैं जबकि देश की चिंता करने वाले कम हुए हैं। प्रो. योगेश सिंह वी एंड द वर्ल्ड अराउंड पुस्तक पर चर्चा के के लिए आयोजित एक कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के कान्वेंशन हाल में आयोजित इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए पुस्तक के लेखक एवं आरएसएस के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ मनमोहन वैद्य ने कहा कि ईस्वी सन 01 से लेकर 1500 तक विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा 30त्न से अधिक था जोकि दुनिया में सर्वाधिक था। हम दुनिया में व्यापार करने गए, उपनिवेश नहीं बनाए। भारत ने लोगों को गुलाम बनाकर व्यापार नहीं किया। डॉ मनमोहन वैद्य ने कहा कि 1945 में दूसरा विश्व युद्ध समाप्त होने के पश्चात इंग्लैंड, जर्मनी और जापान जैसे देशों की ढांचागत क्षति बहुत हुई शुरुआत की। 1948 में इज़राइल ने 1800 वर्षों के पश्चात नया आरंभ किया। 1947 में भारत स्वाधीन हुआ। भारत की ढांचागत क्षति इंग्लैंड, जर्मनी और जापान जैसी नहीं हुई थी। लेकिन अब तक के वर्षों में इज़राइल, जर्मनी, जापान, इंग्लैंड जैसे देशों ने जितनी प्रगति की है भारत में उतनी नहीं हुई। इसका कारण है कि हमारे पास डायरेक्शन की कमी थी। इन चारों देशों में एकरूपता यह है कि हम कौन हैं, हमारा इतिहास क्या था और हमारे पुरखे कौन थे। इस बारे में सब लोग एकमत हैं। भारत में हम कौन हैं के बारे में हमारा सबका एक मत नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत अलग-अलग संस्कृतियों का देश नहीं है, भारत की संस्कृति एक है जिसका आधार अध्यात्म है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि अच्छी किताबों पर चर्चा लोगों की समझ और ज्ञान को विकसित करती है। उन्होंने उक्त पुस्तक के संदर्भ में चर्चा करते हुए कहा कि 'आई' से 'वी' तक की यात्रा बहुत महत्वपूर्ण है।

डीयू के पूर्व छात्रों ने आधुनिक सुविधाओं से लैस अध्ययन कक्ष एवं पुस्तकालय विकसित कराया

नई दिल्ली,एजेंसी। दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के छह पूर्व छात्र व शिक्षकों ने मिलकर पदमश्री डॉ.एस.आर.रंगनाथन के नाम पर डीयू के उत्तरी परिसर में आधुनिक सुविधाओं से लैस अध्ययन कक्ष एवं पुस्तकालय को गोद लिया है, जो पूरी तरह से डिजिटल होगी। विश्वविद्यालय में इस तरह का पहला अध्ययन कक्ष होगा जिसमें 100 छात्र एक साथ बैठकर अध्ययन कर सकेंगे। इस अध्ययन कक्ष में एक ओपन लाइब्रेरी, 10 से अधिक कंप्यूटर वर्क स्टेशन, इंटरनेट के अतिरिक्त ऑडियो -वीडियो की सुविधाएं उपलब्ध कराई है। दिल्ली विश्वविद्यालय की ट्यूटोरियल बिल्डिंग में बनाए गए अध्ययन कक्ष का उद्घाटन डीयू के कुलपति, प्रोफेसर योगेश सिंह ने किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि, दक्षिणी परिसर निदेशक, प्रोफेसर श्रीप्रकाश सिंह थे। कार्यक्रम में डीन, प्रोफेसर अमिताव चक्रवर्ती, प्रोफेसर रजनी अब्बी, प्रोफेसर गीता भट्ट, प्रोफेसर अनिल राय, प्रो.बीपी सिंह, प्रो.एन के. कक्कड़, प्रो.रविंद्र कुमार, प्रो.रूपम कपूर, प्रो.ममता शर्मा, प्रो.विजय लक्ष्मी सिंह, प्रो.अमित कुमार सिंह, प्रो.रंजन त्रिपाठी, प्रो.नीरा अग्निमित्र, डॉ. केपी चिन्दा, डॉ.हंसराज सुमन, डॉ. मनोज कुमार केन, आदि के अलावा डीन, कॉलेजों के प्रिंसिपल, विभागों के प्रोफेसर व पीएचडी शोधार्थी भी उपस्थित थे।

अध्ययन कक्ष के उद्घाटन अवसर पर कुलपति प्रोफेसर योगेश सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि किसी भी संस्थान में अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए आधुनिक सुविधाओं से लैस अध्ययन कक्ष एवं पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण संसाधन है, पुस्तकालय के बिना छात्र का ज्ञान अधूरा है उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास पुस्तकालय के माध्यम से ही होता है। उन्होंने बताया कि नई डिजिटल पुस्तकालय के खुलने से ऐसे लोगों को अवसर मिलेगा जो इस विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं या करके चले गए और अब वे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, वे इस अध्ययन कक्ष में बैठकर अध्ययन कर सकेंगे। प्रोफेसर सिंह ने पूर्व छात्रों द्वारा लिए गए निर्णय की सराहना करते हुए कहा कि हमारे बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए इस तरह की की संस्कृति को बढ़ाने के लिए हर कॉलेज/विभाग के पूर्व छात्रों को आगे आना चाहिए। उन्होंने यह आह्वान किया कि जिस तरह से हमारे छह पूर्व छात्रों ने आधुनिक सुविधाओं से अध्ययन कक्ष एवं पुस्तकालय

विकसित कराके इसे गोद लिया है, मुझे आशा है कि भविष्य में इस तरह के नेक कार्य से अवश्य कुछ लोग प्रेरणा लेंगे और विकसित भारत बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि आज हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि पढ़ने वाले लोगों के लिए अपने आसपास लाइब्रेरी का निर्माण अवश्य कराए और उस लाइब्रेरी में पुस्तकें दान करें ताकि ज्ञान का ज्यादा से ज्यादा विस्तार हो। पुस्तकालय विज्ञान विभाग के प्रोफेसर के.पी. सिंह ने कहा कि पुस्तकालय एक ऐसी संस्था है जिसके माध्यम से छात्रों को सूचना और संसाधनों को सभी तक पहुंचाना है।

पुस्तकें छात्र को पढ़ने के लिए तैयार करती है जिससे ज्ञान का विकास होता है, पुस्तकों के बिना छात्रों का कोई अस्तित्व नहीं है। पुस्तकें ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण कर उसे अपनी भाषा, साहित्य, संस्कृति व जन सरोकारों से जोड़ती है। वर्तमान पुस्तकालय में भौतिक और डिजिटल रूप में विभिन्न सेवाएं प्रदान की जायेगी। पुस्तकें, पत्र -पत्रिकाएं, ईबुक, ऑडियो बुक ही नहीं बल्कि लाइब्रेरी में कम्प्यूटर, स्मार्ट डिजिटल बोर्ड, डिजिटल पोडियम आदि की सुविधाएं उपलब्ध कराई जायेगी। प्रोफेसर सिंह ने बताया है कि दिल्ली विश्वविद्यालय के किसी विभाग ने/विश्वविद्यालय के इतिहास में यह पहली बार है कि अपने अल्मा मेटर के ऋण चुकाने और छात्रों और शोधार्थियों के लिए बुनियादी ढांचे का एक आत्मनिर्भर मॉडल बनाने के लिए इस तरह की नई पहल की शुरुआत की है। इसमें लेक्चर हॉल अत्याधुनिक सुविधाओं जैसे एयर-कंडीशन, ओपन लाइब्रेरी, वर्कस्टेशन, हाई कॉन्फ़िगरेशन स्मार्ट बोर्ड और शिक्षण और अनुसंधान के लिए अन्य आवश्यक सेवाओं से सुसज्जित बनाया है। उन्होंने यह भी बताया है कि इस अध्ययन कक्ष में किसी भी संकाय से स्नातकोत्तर व पीएचडी शोधार्थी आकर अध्ययन कर सकेंगे। प्रोफेसर के.पी. सिंह ने बताया कि डॉ. एस.आर. रंगनाथन व्याख्यान कक्ष एवं पुस्तकालय को पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के छह पूर्व छात्रों एवं शिक्षकों ने मिलकर इस अध्ययन कक्ष का निर्माण कर उन्हें समर्पित किया है।

चौथे स्तंभ की सजगता से ही जनतंत्र को मजबूती

विश्वनाथ सचदेव

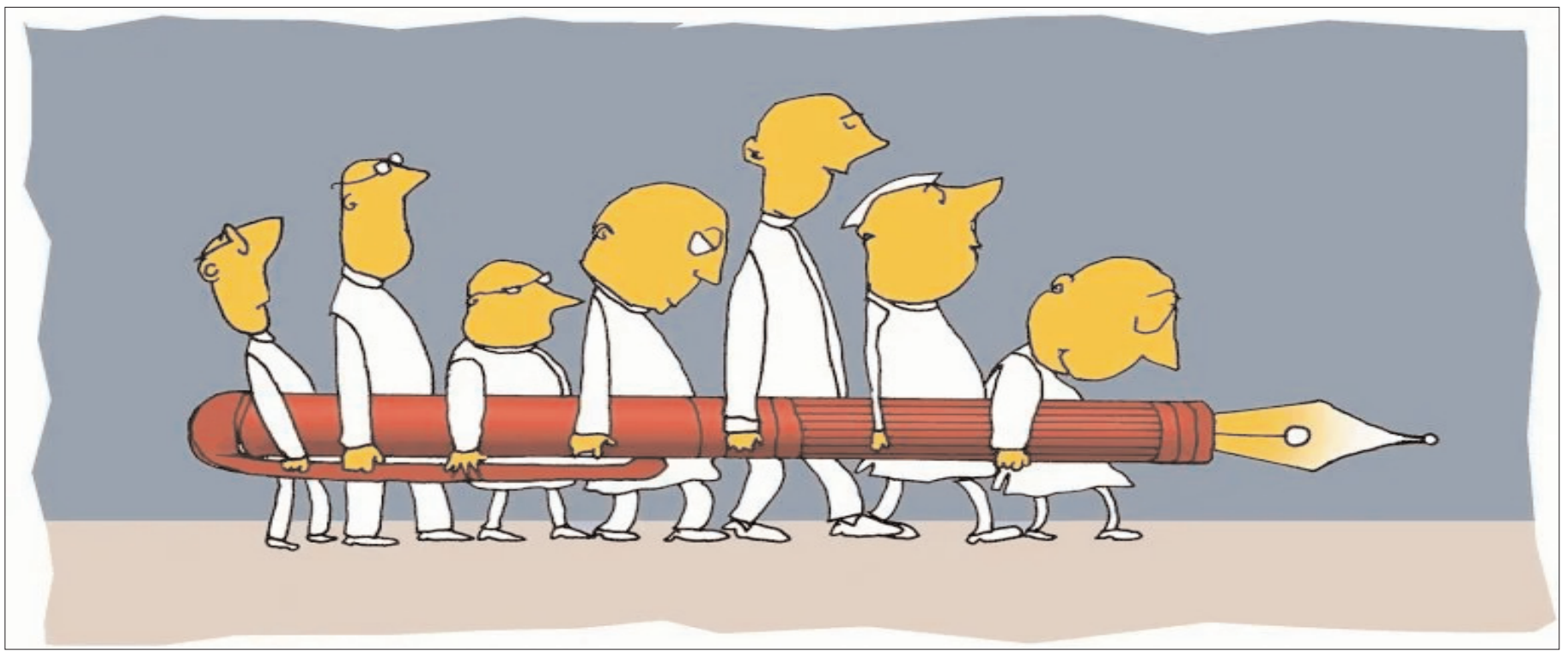

देश का प्रधानमंत्री कुछ भी कहे उसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए, उस पर चर्चा भी होनी चाहिए। पर हाल ही में पटना के एक चुनावी आयोजन में उन्होंने एक पत्रकार से जो कुछ कहा, उसके बजाय उनका एक पत्रकार से रोड शो के दौरान बात करना कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पिछले दस साल के शासनकाल में हमारे प्रधानमंत्री ने देश में एक भी प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित नहीं किया है। हां, कुछ पत्रकारों से अलग-अलग बातचीत अवश्य करते रहे हैं, पर इन सारी मुलाकातों को 'प्रायोजित' ही समझा जाता रहा है। यह भी अपने आप में कम महत्वपूर्ण नहीं है कि ऐसी मुलाकातों में से एक जो सबसे ज़्यादा चर्चित रही है उसमें प्रधानमंत्री से 'आप आम कैसे खाते हैं' जैसे सवाल पूछे गये थे! बहरहाल, एक टीवी चैनल के पत्रकार से रोड शो के दौरान हुई बातचीत की घटना को अखबारों की सुर्खी बनना ही था। चैनलों पर भी इस मुलाकात को लेकर विशेष चर्चाएं आयोजित हुईं। यह भले ही किसी को याद न रहा हो कि इस बातचीत में क्या मुद्दे उठाये गये, पर यह सब को याद होगा कि दस साल की चुप्पी के बाद प्रधानमंत्री ने इस तरह से पत्रकार के सवालों का जवाब दिया। महत्वपूर्ण यह भी है कि इस इंटरव्यू के बाद समाचार चैनलों और अखबारों के प्रतिनिधियों से प्रधानमंत्री की बातचीत का दौर-सा चल पड़ा। कयास इस बारे में लगाये जा रहे हैं कि अचानक प्रधानमंत्री जी को पत्रकारों से इस तरह बात करना ज़रूरी क्यों लगने लगा है। और चर्चा इस बात की भी है कि आम-चुनाव के तीन दौर समाप्त होने के बाद मतदाता की 'उदासीनता' देखकर राजनेताओं, विशेषकर सत्तारूढ़ दल भाजपा, के नेताओं को लगने लगा है कि रणनीति कुछ बदलने की ज़रूरत है।

इस बात को लेकर मतभेद हो सकते हैं, विभिन्न राय हो सकती हैं, पर मीडिया को लेकर प्रधानमंत्री के रुख में आया यह परिवर्तन स्वागतयोग्य है। उम्मीद की जानी चाहिए कि पत्रकार-समाज इस अवसर का समुचित उपयोग करने की कोशिश करेगा। उम्मीद यह भी की जानी चाहिए कि यदि पत्रकारों को आगे भी ऐसे अवसर मिलते हैं तो पत्रकार निर्भीकता और ईमानदारी के साथ सवाल पूछेंगे और उन्हें समुचित उत्तर मिलेंगे। बात सिर्फ सवाल पूछने और उत्तर मिलने तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, यदि किसी सवाल का सम्यक उत्तर नहीं मिलता तो पत्रकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह निर्भीकतापूर्वक पूरा उत्तर प्राप्त करने की कोशिश करेगा। इस संदर्भ में मुझे एक बड़े अखबार के बड़े पत्रकार की ऐसी ही बातचीत याद आ रही है। पत्रकार ने प्रधानमंत्री से पूछा था- चुनाव प्रचार में इस बार धर्म-आधारित भाषण ज़्यादा हो रहे हैं, आप इन्हें कैसे देखते हैं? इस प्रश्न का जो उत्तर प्रधानमंत्री ने दिया, वह इस प्रकार छपा है = 'आप कांग्रेस का मेनिफेस्टो देखिए। उसके शहजादे का भाषण देखिए। मनमोहन सिंह की सरकार का ट्रैक रिकॉर्ड देखिए। उसमें सिर्फ और सिर्फ तुष्टीकरण की भावना नज़र आयेगी। तुष्टीकरण कांग्रेस का मूल स्वभाव बन गया है। इसके बिना उनकी राजनीति नहीं चल सकती। यह मेरा दायित्व है कि मैं तथ्यों को देश के सामने रखूं। मैं उनका पिछला ट्रेक रिकॉर्ड जनता को बता रहा हूं। वो किस सोच के तहत काम करते हैं, ये देश को जानना आवश्यक है। पता नहीं जो चार सवाल और उनके उत्तर अखबार में छपे हैं इसके अलावा भी प्रधानमंत्री जी ने कुछ कहा था, लेकिन यह एक उत्तर पूछे गये सवाल के साथ न्याय नहीं करता। चुनाव में धर्म आधारित भाषण की बात सभी दलों पर लागू होती है। प्रधानमंत्रीजी से यह पूछा जाना चाहिए था कि सवाल भाजपा के नेताओं से भी संबंधित है और उनसे यह अपेक्षा है कि वे बतायेंगे कि भाजपा के नेता ऐसा क्यों कर रहे हैं? लेकिन यह पूछा नहीं गया और न ही स्वयं प्रधानमंत्री जी ने इस बारे में कुछ कहना जरूरी समझा। यह पहली बार नहीं है कि चुनाव प्रचार में राजनीतिक दलों द्वारा धर्म का सहारा लेने की बात उठी है। लगभग हर चुनाव में धर्म की बैसाखी का सहारा लेकर चुनावी लाभ लेने की कोशिशें हुई हैं। हमारा संविधान इस बात की इजाज़त नहीं देता। धर्म के नाम पर मतदाता को बांटना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं समझा जाना चाहिए। 'राम मंदिर पर बाबरी ताला' जैसी बात कहना अपने आप में मर्यादा की लक्ष्मण रेखा के उल्लंघन से कम नहीं है। किसी राजनेता का किसी भी मंदिर में जाना कतई ग़लत नहीं है। हर एक को अपनी आस्था और श्रद्धा का सम्मान करने का अधिकार है। इस संदर्भ में किसी को किसी से कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। शिकायत सिर्फ इस बात की होनी चाहिए कि हमारे राजनेता धर्म के नाम पर वोट मांगकर हमारे संविधान का अपमान कर रहे हैं। धर्म आधारित भाषण वाले सवाल के उत्तर में प्रधानमंत्री को यह बताना चाहिए था कि वह धर्म के इस दुरुपयोग का समर्थन नहीं करते; उन्हें कहना चाहिए कि पंथ-निरपेक्ष देश में धर्म के नाम पर राजनीति करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है। उदाहरण हैं हमारे यहां जब राजनेताओं को ऐसे अपराध की सज़ा मिली है, पर अधिसंख्य राजनेता ऐसे उदाहरणों की परवाह नहीं करते। धार्मिक आधार पर तुष्टीकरण की नीति का समर्थन नहीं किया जा सकता, पर धर्म के नाम पर ध्रुवीकरण की कोशिश भी तो छोटा अपराध नहीं हैं। यह सचमुच दुर्भाग्य की बात है कि आम चुनाव के अधबीच हिंदू-मुसलमान की बात होने लगी है। चुनाव प्रचार की शुरुआत में ऐसा नहीं था, पर पता नहीं शीर्ष राजनेताओं को इसकी जरूरत क्यों महसूस होने लगी है?

चुनाव के चार दौरों के पूरा होने के बाद यदि एक और बात जो सामने आयी है, वह मतदाता की अपेक्षाकृत उदासीनता है। अपेक्षा से कम मतदाताओं का मतदान के लिए आना सबके लिए चिंता की बात होनी चाहिए। अधिकाधिक मतदाता पोलिंग बूथ तक पहुंचें यह जनतंत्र की सफलता का एक संकेत है। लेकिन यदि धर्म के नाम पर मतदाताओं को लुभाने की कोशिश ज़रूरी है तो ऐसी राजनीति देश को नहीं चाहिए। हर नागरिक, चाहे वह किसी भी धर्म का हो, पहले भारतीय है। यह और ऐसी बातें प्रधानमंत्री को धर्म आधारित भाषणों वाले प्रश्न के उत्तर में कहनी चाहिए थीं। यदि उन्होंने अपने कुछ कारणों से ऐसा नहीं किया तो पत्रकार का काम था उन्हें यह अहसास कराना कि प्रश्न धर्म के नाम पर की जाने वाली राजनीति के औचित्य का था। बहरहाल, कारण कुछ भी रहे हों, प्रधानमंत्री की यह पहल एक अच्छी शुरुआत है। यह सिलसिला, दस साल पहले ही शुरू हो जाना चाहिए था। रहे होंगे कुछ भी कारण ऐसा न कर पाने अथवा न हो पाने के, पर स्वस्थ जनतंत्र में राजनीति और पत्रकारिता का स्वस्थ रिश्ता होना ज़रूरी है। पत्रकारिता का दायित्व है कि वह विधायिका को जागरूक बनाये रखने के प्रति सजग और सक्रिय रहे और विधायिका का कर्तव्य है कि वह इन स्वस्थ रिश्तों को कमज़ोर न पड़ने दे। पत्रकारिता को जनतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। इस स्तंभ की मज़बूती जनतंत्र की मज़बूती का एक आधार है। अर्सा हुआ, प्रधानमंत्री एक इंटरव्यू को अधूरा छोड़कर उठ गये थे। उठते-उठते उन्होंने कहा था, 'ज्हमारी दोस्ती बनी रहे।' उम्मीद की जानी चाहिए कि पटना की उस रैली में प्रधानमंत्री ने जो पहल की है, वह इस 'दोस्ती' को बनाये रखने में मददगार होगी। स्वस्थ राजनीति, स्वस्थ पत्रकारिता और स्वस्थ रिश्ते हमारे जनतंत्र को सार्थकता देंगे।

देश में घटती हिन्दू जनसंख्या के बारे में विचार किया जाए तो कई तथ्य दिखाई देते हैं। कश्मीर से विस्थापित हुए हिन्दुओं के बारे में अगर उसी समय समाधान निकलता तो संभवत- अन्य राज्यों में इसकी पुनरावृति रुक सकती थी, लेकिन समाधान निकालने के किसी भी तरीके पर सरकार की ओर से कोई चिंतन नहीं किया गया। इस कारण यह समस्या आज पूरे देश में तेजी से पैर पसारती जा रही है। इसका मुख्य कारण देश विरोधी कार्यों को अंजाम देने वाली राजनीति को माना जा सकता है। कश्मीर का सबसे जघन्य सच यह है कि वहां से जो हिन्दू धर्म को पूरी तरह से मानते थे, उन्हें ही भगाया गया, बाकी सब मुसलमान बन गए। यह एक प्रकार से धर्मान्तरण का ही खेल था। धर्मांतरण का खेल कौन चला रहा है, यह भी लगभग सभी जानते हैं। महात्मा गांधी ने धर्मान्तरण के बारे में कहा था कि धर्मांतरण के कारण एक व्यक्ति केवल दूसरे सम्प्रदाय को ही स्वीकार नहीं करता, बल्कि देश का एक और दुश्मन पैदा हो जाता है। इस बात से यह संदेश मिलता है कि ईसाई संस्थाएं और इस्लामिक संस्थाएं अपने विचार को फैलाने के लिए जो कार्यक्रम चलाती हैं, वह भारत के लिए किसी न किसी रुप से ठीक नहीं जा सकती हैं। क्योंकि इन संस्थाओं के विचार पूरी तरह से भारतीय विचार से सामंजस्य नहीं रखते। वास्तव में विश्व के किसी भी देश में सबसे पहले यही शिक्षा दी जाती है कि वह उस देश की संस्कृति से जुड़े रहे। चाहे वह ईसाई देश हो या फिर मुस्लिम देश ही क्यों न हो? सबसे पहली बात यही होती है कि देश भक्त बने, केवल अपने संप्रदाय का भक्त नहीं। लेकिन हमारे देश में क्या हो रहा है।

भारत में जनसंख्या असंतुलन के निहितार्थ

सुरेश हिन्दुस्थानी

अभी हाल ही में जनसंख्या पर आई एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में 43.15 प्रतिशत की दर से मुस्लिमों की जनसंख्या बढ़ रही है, जबकि हिन्दू की जनसंख्या में 7.82 प्रतिशत की गिरावट सामने आई है। यानी आनुपातिक दृष्टि से भारत में हिन्दुओं की संख्या लगातार कम होती जा रही है। चिंता यह नहीं है हिन्दू कम क्यों होते जा रहे हैं, बल्कि चिंता इस बात की है कि मुसलमानों की जनसंख्या में यह वृद्धि कहीं घुसपैठ के कारण तो नहीं है। अगर यह सत्य है तो और भी गंभीर चिंता का विषय है। इसी घुसपैठ के चलते भारत के नौ राज्यों में आज हिन्दू अल्पसंख्यक की श्रेणी में आ गया है। इसके कारण देश में विभिन्न प्रकार की समस्याएं पैदा हो रहीं हैं। सबसे बड़ी समस्या रोजगार की है, क्योंकि संसाधन सीमित होने के बाद भी जनसंख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

देश में घटती हिन्दू जनसंख्या के बारे में विचार किया जाए तो कई तथ्य दिखाई देते हैं। कश्मीर से विस्थापित हुए हिन्दुओं के बारे में अगर उसी समय समाधान निकलता तो संभवत- अन्य राज्यों में इसकी पुनरावृति रुक सकती थी, लेकिन समाधान निकालने के किसी भी तरीके पर सरकार की ओर से कोई चिंतन नहीं किया गया। इस कारण यह समस्या आज पूरे देश में तेजी से पैर पसारती जा रही है। इसका मुख्य कारण देश विरोधी कार्यों को अंजाम देने वाली राजनीति को माना जा सकता है। कश्मीर का सबसे जघन्य सच यह है कि वहां से जो हिन्दू धर्म को पूरी तरह से मानते थे, उन्हें ही भगाया गया, बाकी सब मुसलमान बन गए। यह एक प्रकार से धर्मान्तरण का ही खेल था। धर्मांतरण का खेल कौन चला रहा है, यह भी लगभग सभी जानते हैं। महात्मा गांधी ने धर्मान्तरण के बारे में कहा था कि धर्मांतरण के कारण एक व्यक्ति केवल दूसरे सम्प्रदाय को ही स्वीकार नहीं करता, बल्कि देश का एक और दुश्मन पैदा हो जाता है। इस बात से यह संदेश मिलता है कि ईसाई संस्थाएं और इस्लामिक संस्थाएं अपने विचार को फैलाने के लिए जो कार्यक्रम चलाती हैं, वह भारत के लिए किसी न किसी रुप से ठीक नहीं जा सकती हैं। क्योंकि इन संस्थाओं के विचार पूरी तरह से भारतीय विचार से सामंजस्य नहीं रखते। वास्तव में विश्व के किसी भी देश में सबसे पहले यही शिक्षा दी जाती है कि वह उस देश की संस्कृति से जुड़े रहे। चाहे वह ईसाई देश हो या फिर मुस्लिम देश ही क्यों न हो? सबसे पहली बात यही होती है कि देश भक्त बने, केवल अपने संप्रदाय का भक्त नहीं। लेकिन हमारे देश में क्या हो रहा है। ईसाई और मुस्लिम संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे शिक्षण केन्द्रों में भी भारत की संस्कृति से परिचय नहीं कराया जाता। इसके कारण ही देश में देश विरोधी नारे लगाने वाली जमात पैदा हो रही है। पूर्वांचल के राज्यों की स्थिति भी किसी से छिपी नहीं है, वहां लम्बे समय से ईसाई मिशनरियां मतांतरण के कार्यक्रम चलाती रही हैं। इसके कारण कई राज्यों में ईसाई बहुसंख्यक की स्थिति में आ गए हैं और हिन्दू लगातार कम होते जा रहे है।

देश के नौ राज्यों में हिन्दू समाज अल्पसंख्यक की स्थिति में आ चुका है। यह उस समय के आंकड़े हैं, जब देश में कांग्रेस नीत संप्रग की सरकार थी। मतलब 2011 की जनगणना के हैं। हम जानते हैं कि कांग्रेस की सरकार के समय ईसाई संस्थाओं को अप्रत्यक्ष संरक्षण मिलता रहा था। इस बात के संकेत दिल्ली के आर्कबिशप अनिल काउटो के पत्र से भी मिल गए थे। उन्होंने अप्रत्यक्ष तौर पर देश में होने वाले चुनावों के लिए प्रार्थना करके कांग्रेस को समर्थन देने की बात कही थी। अगर कांग्रेस को समर्थन देने की बात सही मानी जा सकती है तो यह भी तय है कि उनको हिन्दू समाज को ईसाई बनाने की खुली छूट भी मिल सकती है। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद से ही हिन्दुओं की संख्या में लगातार कमी होती जा रही है और जहां भी हिन्दू कम हुआ है, वहां समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। इसका मतलब यह भी है कि हिन्दू जिस राज्य में भी बहुतायत में होता है वहां शांति का वातावरण होता है, देश का हिन्दू समस्या नहीं समाधान का हिस्सा है, समाधान का हिस्सा हिन्दू समाज की संस्कृति है। आज कई राज्यों में हिन्दुओं की संख्या में बहुत बड़ी कमी देखी जा रही है। इस कारण देश के नौ राज्यों में हिन्दुओं का अल्पसंख्यक का दर्जा मिल सकता है। लक्ष्यद्वीप में 2.5, मिजोरम में 2.75, नागालैंड में 8.75, मेघालय में 11.53, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में 28.44, अरुणाचल प्रदेश में 29, मणिपुर में 31.39 और पंजाब में 38.40 प्रतिशत हिंदू हैं। इसके अलावा देश के अन्य राज्यों में भी कई जिलों में हिन्दुओं की जनसंख्या में कमी आती जा रही है। इसमें उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और केरल के जिलों के नाम शामिल किए जा सकते हैं। यहां चिंतन की बात यह नहीं है कि इन राज्यों में हिन्दुओं को अल्पसंख्यकों के अधिकार मिलने चाहिए, बल्कि चिंतन इस बात का करना चाहिए कि इन राज्यों में ऐसे कौन से कारण रहे, जिसके चलते हिन्दू अल्पसंख्यक हो गया। इसका मूल कारण क्या है, इसका उत्तर खोजा जाए तो स्ववाभाविक रुप से ऐसे कारण नजर आएंगे, जो देश के हित में नहीं हैं। कभी इसका कारण मतांतरण मिलेगा तो कहीं भय के कारण हिन्दू पलायन की स्थिति दिखाई देगी। कश्मीर इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, वहां एक समय हिन्दुओं की संख्या प्रभावी थी, लेकिन अलगाववाद को बढ़ावा देने वाले पाकिस्तान परस्त व्यक्तियों ने हिन्दुओं पर अत्याचार किए, इसके कारण आज घाटी हिन्दू विहीन हो गई है। पाकिस्तान परस्त मानसिकता वाले कट्टरपंथी मुसलमान आज भी देश के कई हिस्सों में योजनापूर्वक हिन्दुओं को प्रताड़ित करते हैं, जिससे हिन्दू किसी अन्य स्थान पर चले जाएं। उत्तरप्रदेश के कैराना और पश्चिम बंगाल के कई जिलों में ऐसे ही हालात निर्मित हुए। इतना ही नहीं कई स्थानों पर हिन्दू समाज अपने त्यौहार खुलकर मनाने की स्थिति में नहीं हैं। सवाल यह भी है कि भारत देश के कई हिस्सों में हिन्दू भय की स्थिति में जीने को मजबूर हो रहा है। सवाल यह है कि क्या हमारा देश अहिन्दूकरण की ओर कदम बढ़ा रहा है। यह देश के हिन्दुओं को समझना होगा। अगर ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है, जो कभी कश्मीर में हुआ था, वह पूरे देश में दिखाई दे सकता है। देश में इस बात के कई बार स्पष्ट प्रमाण मिल चुके हैं कि भारत में रोहिंग्या और बांग्लादेशी मुसलमानों की संख्या लगातार बढ़ रही है। कुछ राजनीतिक दल इस मामले पर खुलकर घुसपैठियों का समर्थन कर रहे हैं, और कुछ मौन रहकर इसको स्वीकृति दे रहे हैं। जो बहुत ही ख़तरनाक है। देश के राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि जनसंख्या का यह आनुपातिक असंतुलन क्यों पैदा हो रहा है। इसके निहितार्थ क्या हैं? अगर इस पर अभी विचार नहीं किया गया तो आने वाला समय बहुत ज्यादा ख़तरनाक हो सकता है।

विचार

महंगाई के खिलाफ उपजे आक्रोश की तपिश

विवेक शुक्ला

जब हमारी कश्मीर घाटी में लोकसभा चुनाव का प्रचार जारी है, तब पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) के बहुत बड़े हिस्से में अवाम सड़कों पर है। जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर से सिर्फ 130 किलोमीटर दूर पीओके की राजधानी मुजफ्फराबाद और मीरपुर जैसे प्रमुख शहरों में जनता सरकार से दो-दो हाथ करना चाहती है। जनता पीओके सरकार और देश की संघीय सरकारों से अपना हक मांग रही है। पीओके में जब आंदोलन चल रहा है, तब भारत में चल रहे लोकसभा चुनाव की कैंपेनिंग के दौरान पीओके का जिक्र आ रहा है। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बीते रविवार को कहा कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) भारत का है, उसे हम लेकर रहेंगे। उल्लेखनीय है कि पीओके को भारत से मिलाने पर भारतीय संसद का एक अहम प्रस्ताव भी है। बहरहाल, पीओके की बिगड़ती स्थिति की वजह से पाकिस्तान के रहनुमाओं की रातों की नींदें उड़ गई हैं। पाकिस्तान तो भारत के जम्मू-कश्मीर पर बार-बार अपना दावा करता है, पर दुनिया देख रही है कि उसके कब्जे वाला कश्मीर जल रहा है। पीओके की अवाम बिजली की भारी-भरकम बिलों और आटे के आसमान छूते दामों के कारण आक्रोशित है। वहां पर संकट गहराता जा रहा है। दरअसल, सोशल मीडिया के दौर में पीओके की जनता देख रही है कि भारत के कश्मीर में जनता कम से कम बिजली के बिलों या आटे की आसमान छूती कीमतों के कारण तो नाराज नहीं है। वहां अन्य मसले हो सकते हैं, पर कुल मिलाकर जीवन सुकून भरा है। पीओके में ताजा हिंसक आंदोलन की तात्कालिक वजह यह है कि पाकिस्तान सरकार ने आटे की कीमतों को कम करने की मांग को मानने से इंकार कर दिया है। बिजली के बिल कम करने पर तो सरकार आंदोलनकारियों से कोई बात करने तो वैसे भी तैयार नहीं है। दरअसल, पीओके में बवाल तब शुरू हुआ जब अवामी एक्शन कमेटी ने 8 मई, 2024 को अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन किए थे। इससे पहले, बीते साल अगस्त में बिजली बिलों पर नए करों को लगाने से स्थिति बिगड़ने लगी थी। इन करों के विरोध में मुजफ्फराबाद विश्वविद्यालय के छात्रों ने व्यापक विरोध प्रदर्शन शुरू किए थे, जिन्हें स्थानीय व्यापारियों का समर्थन मिला। ये प्रदर्शन जल्दी ही रावलकोट और मीरपुर जिलों तक फैल गए। पिछले साल 17 सितंबर को मुजफ्फराबाद में एक बैठक के बाद, अवामी एक्शन कमेटी ने अपने आंदोलन को राज्यव्यापी करने का फैसला किया। इसके बाद पीओके में बिजली बिल जलाये जाने लगे। इसके जवाब में, सरकार ने कई आंदोलनकारियों को गिरफ्तार किया, लेकिन जनता के दबाव के कारण उन्हें रिहा कर दिया। इसके बाद आंदोलनकारियों की तरफ से सरकार को 10 सूत्रीय मांगों की सूची सौंपी गई। इस सूची में आटे पर सब्सिडी और बिजली के बिलों में कमी करने की मांगें शामिल थीं। पर, सरकार बिजली बिलों में कमी और आटे के दाम कम करने के लिए तैयार नहीं हुई। यही वजह है कि सरकार की हठधर्मिता से नाराज अवामी एक्शन कमेटी ने मुजफ्फराबाद स्थित पीओके विधानसभा तक मार्च करने का आह्वान किया। 9 मई को डोडियाल में एक डिप्टी कमिश्नर पर उस समय हमला किया गया जब उन्होंने एक भीड़ को तितर-बितर करने के आदेश दिए। 10 मई को पीओके के प्रदर्शनकारी मुजफ्फराबाद की ओर मार्च करने के लिए निकले, जिसके कारण गंभीर झड़पें हुईं। एक आला पुलिस अफसर की मौत हो गई। इसके बाद पीओके के मुख्यमंत्री अनवर उल हक सरकार को जनता के गुस्से से दो-चार होना पड़ रहा है। हक की छवि एक बेहद कड़क नेता की है। वे बात-बात पर आपा खो देते हैं। पीओके के मीरपुर जिले में 9 मई को एक डिप्टी कमिश्नर को प्रदर्शनकारियों ने बुरी तरह पीटा और उसकी कार को फूंक भी दिया था। फिलहाल लगता तो यही है कि अवामी एक्शन कमेटी का अपनी मांगों के समर्थन में चल रहा आंदोलन तब तक जारी रहेगा जब तक उनकी मांगों को मान नहीं लिया जाता। हां, सरकार और प्रदर्शनकारियों के बीच रावलकोट में बातचीत फिर से शुरू हो गई। पर यह देखने वाली बात है कि क्या पाकिस्तान सरकार, जो पीओके सरकार के साथ खड़ी है, प्रदर्शनकारियों की मांगों को स्वीकार करेगी? फिलहाल लगता तो नहीं है। प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ तो प्रदर्शनकारियों पर एक्शन लेने के संकेत दे रहे हैं। पीओके में चल रहे प्रदर्शन पर हमारे उन कश्मीरियों को नजर रखनी चाहिए जिन्हें भारत से सिर्फ शिकायतें रहती हैं। इस बीच, लगता है कि कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर और फारूक अब्दुल्ला को पीओके पर भारतीय संसद में पारित प्रस्ताव की जानकारी ही नहीं है। इसलिए ही ये कह रहे हैं कि पाकिस्तान के पास परमाणु बम है। इन्हें पता होना चाहिए कि 22 फरवरी, 1994 बेहद खासमखास दिन है- भारत की कश्मीर नीति की रोशनी में। उस दिन संसद ने एक प्रस्ताव ध्वनिमत से पारित करके, पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) पर अपना हक जताते हुए कहा था कि पीओके भारत का अटूट अंग है। पाकिस्तान को उसे छोड़ना होगा जिस पर उसने कब्जा जमाया हुआ है।

एक नजर

दाखिल खारिज अधिकतम तीन दिनों में निष्पादित करने का आदेश

सहरसा,एजेंसी। समाहरणालय सभागार में अपर समाहर्ता ज्योति कुमार की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में राजस्व संबंधित कार्यों की समीक्षा की गई। दाखिल खारिज संबंधित मामलो अद्यतन निष्पादन स्थिति समीक्षा क्रम में क्रमशः सौर बाजार, सिमरी बख्तियारपुर एवं कहरा अंचलों में लंबित मामलों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। जिस कारण नाराजगी व्यक्त की गई है एवं संबंधित कर्मचारी के साथ साथ उक्त वर्णित अंचलों के अंचलाधिकारी से निर्धारित दायित्व में शिथिलता के कारण स्पष्टीकरण का निर्देश दिया गया है। साथ ही उक्त वर्णित अंचलों सहित अन्य अंचलों को दाखिल खारिज संबंधित लंबित मामलों को नियमानुसार सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर अविलंब निष्पादन हेतु आवश्यक करवाई का निर्देश दिया गया है। समीक्षा के क्रम में निर्देश दिया गया कि दाखिल खारिज संबंधित मामले को कर्मचारी एवं अंचलाधिकारी स्तर पर अधिकतम तीन दिनों में नियमानुसार निष्पादित करना अनिवार्य व अपेक्षित होगा। बैठक में आधार सीडिंग कार्य की भी समीक्षा की गई एवं उक्त कार्य में तेजी लाने का निर्देश दिया गया है। डीसीएलआर सदर एवं सिमरी बख्तियारपुर को नियमित रूप से राजस्व संबंधित कार्यों के समीक्षा, सतत पर्यवेक्षण एवं अनुश्रवण का निर्देश दिया गया है। सभी अंचलाधिकारी को राजस्व संबंधित कार्यों एवं संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन में और तेजी लाने का निर्देश दिया गया।बैठक में डीसीएलआर एवं अंचलाधिकारी उपस्थित थे।

देशी कट्टा, व दो जिंदा कारतूस के साथ दो गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण। जिले के पीपराकोठी थाना थाना क्षेत्र के सलेमपुर मठ से दो अपराधियों को एक देशी कट्टा व दो जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अपरधियों की पहचान पश्चिमी चंपारण जिले के योगापट्टी निवासी प्रदीप कुमार व दिलीप कुमार के रूप में हुई है। इस सबंध में एसपी कांतेश कुमार मिश्र ने बताया कि जिले में सोने की चेन छिनतई की घटना की रोकथाम एवं घटना में शामिल अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सदर-2 (पीपराकोठी) के नेतृत्व में विशेष टीम का गठन किया गया। टीम ने आसूचना संकलन कर त्वतरित कारवाई करते हुए छापेमारी कर दो अपराधियों को आग्नेयास्त्र एवं कारतूस के साथ गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ के क्रम में गिरफ्तार अपराधियों द्वारा बताया गया की उनके द्वारा न केवल मोतिहारी बल्कि बेतिया, बगहा एवं गोपालगंज जिलों में मोबाईल एवं चेन छिनतई की घटना को अंजाम दिया गया है। इस संदर्भ में पीपराकोठी थाना में कांड दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।अपराधियों के पास से एक देशी कट्टा, दो जिंदा कारतूस, लूटा गया दो मोबाइल, छीना गया एक बाइक व घटना में इस्तेमाल किया गया एक बाइक बरामद किया गया। दोनों ने अप्रैल में बखरी के नारायण कुमार सिंह की बाइक, मोबाइल व सोने की चेन छीना था। जिसकी प्राथमिकी पीपराकोठी थाना में दर्ज है। छापेमारी में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सदर-2 जीतेश कुमार पांडेय, थानाध्यक्ष खालिद अख्तर, पुअनि नन्दलाल पासवान, प्रमुख कुमार, राजवीर, सशस्त्र बल शामिल थे।

जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर मनाया गया विश्व डेंगू दिवस

पूर्वी चंपारण। जिले के सदर अस्पताल स्थित जीएनएम हॉस्टल परिसर,सदर स्वास्थ्य केंद्र सहित जिले के सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा गुरुवार को विश्व डेंगू दिवस मनाया गया। इस सम्बन्ध में जिले के डीभीडीसीओ डॉ शरत चंद्र शर्मा ने बताया कि आशा, नर्स, वीबीडीएस व अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के सहयोग से बैनर, पोस्टर, लीफलेट के साथ लोगों को डेंगू से बचाव की जानकारी दी गई। वीडीसीओ धर्मेंद्र कुमार ने बताया की डेंगू के मच्छर साफ पानी में पनपते है, इसलिए घरों के आसपास पानी जमा होने दें, किटनाशक का छिड़काव करें,रात को सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें। डेंगू का जाँच व इलाज सभी सरकारी पीएचसी में उपलब्ध है। वैसे व्यक्ति दुबारा डेंगू बुखार की शंका होने पर तुरंत ही सरकारी अस्पताल चिकित्सक से संपर्क करें,सरकारी अस्पतालों में है उपचार व जांच हेतु किट निःशुल्क उपलब्ध है। बरसात बाद ज़ब डेंगू के ज़ब मामले आते तब सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर मरीजों की सुविधाओं के लिए अलग से बेड की व्यवस्था की जाती है। वही अनुमण्डलीय अस्पताल ढाका में विश्व डेंगू दिवस के मौके पर उपाधीक्षक एवं प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ सुधीर कुमार गुप्ता, स्वास्थ्य प्रबंधक विनय कुमार गुप्ता व उपस्थित स्वास्थ्य कर्मियों ने मरीजों को बताया कि डेंगू मादा एडीज़ मच्छर के काटने से फैलता है,डेगू के शिकार होने पर तेज बुखार, बदन, सिर एवं जोड़ों में दर्द त्वचा पर लाल धब्बे या चकते का निशान, काला पखाना होना जैसे लक्षण देखा जाता है। मरीज के शरीर में प्लेटलेट काउंट कम होने लगता है, जिससे रोगी की स्थिति गंभीर हो जाता है। डेंगू से बचाव के उपाय बताते हुए स्वास्थ्यकर्मियो ने कहा कि सोते समय मच्छरदानी का इस्तेमाल करें। इसके साथ-साथ मच्छर भगाने वाली क्रीम या दवा का प्रयोग दिन में भी करें। पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनें। घर के सभी कमरों को साफ-सुथरा रखें। टूटे-फूटे बर्तनों, कूलर, एसी, फ्रीज में पानी जमा नहीं होने दें। पानी टंकी और घर के आसपास अन्य जगहों पर भी पानी नहीं जमने दें। घर के आसपास साफ-सफाई का ध्यान रखें और कीटनाशक दवा का इस्तेमाल करें।

राजद और कांग्रेस वाले ही हिन्दू-मुस्लिम में झगड़ा कराते हैः नीतीश कुमार

पूर्वी चंपारण। पश्चिमी चंपारण लोकसभा के एनडीए प्रत्याशी डा.संजय जयसवाल के समर्थन में रक्सौल के भेलाही स्थित नथुनी दुर्गा हाई स्कूल के मैदान में गुरूवार को एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कांग्रेस और राजद की तीखी आलोचना करते कहा कि हिन्दू मुस्लिम के झगड़े यही लोग कराते थे।हमने कब्रिस्तान की घेराबंदी कराई। राज्य में महिलाओं को पंचायत में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया। अनुसूचित जाति, जन जाति और अति पिछड़ों को 65 प्रतिशत, और गरीब सवर्ण को 10 प्रतिशत यानी 75 प्रतिशत आरक्षण दिया। जातीय जनगणना हमने कराया। आर्थिक जनगणना भी कराई। जिसमे पता लगा कि 95 लाख परिवार की आर्थिक स्थिति काफी खराब है। उन्हे मदद दी जायेगी।

उन्होंने ऐलान किया कि बिहार के प्रत्येक गरीब परिवार को दो लाख रुपए मिलेंगे। सभी पंचायत में पंचायत सरकार भवन बनेगा। हम काम करने वाले हैं। आगे भी काम करेंगे। हमने बीच मे दो बार गलती किया है। इधर उधर चले गए। आश्वस्त करने आए हैं कि अब कहीं नही जायेगे। दूसरी बार जब गए तो ई सब गड़बड़ करने लगा। चुनाव बाद सबका जांच कराएंगे। उन्होंने लालू परिवार पर निशाना साधते कहा कि 9/9गो बाल बच्चा पैदा किया। बेटा बेटी को ई ऊ बनाता रहता है। ऊ सब अंट संट बोलते रहता है। उन्होंने कहा कि हमारे लिए तो पूरा बिहार एक परिवार है। एनडीए ने ही बिहार का विकास किया है। उन्होंने कहा कि याद कीजिए 2005 से पहले राज्य में कैसी स्थिति थी.. कोई घर से निकल पाता था? कोई काम हुआ था? हमने करके दिखाया। यह कहने नही, महसूस करने की बात है। उन्होंने कहा कि आप सब गड़बड़ लोगों के चक्कर में मत आइए.. एनडीए को फिर से लाइए। उन्होंने डा संजय जायसवाल को विजयी बनाने की अपील करते हुए उपस्थित लोगों से हाथ उठा कर वोट देने के लिए आश्वस्त कराया। कहा कि देश पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ही आगे बढ़ेगा। देश में तीसरी बार एनडीए की ही सरकार बनेगी। बिहार में हम 40 में 40 सीट जीतेंगे।

सभा को बिहार सरकार के मंत्री विजय चौधरी, कृष्ण नंदन पासवान, राज्य सभा सदस्य संजय झा, सांसद सह भाजपा प्रत्याशी डा संजय जायसवाल सहित अन्य ने भी संबोधित किया।

पीपरा कोठी में शराब कारोबारियों ने उत्पाद टीम पर किया हमला,तीन जवान जख्मी,एक गंभीर

पूर्वी चंपारण। जिले के पीपराकोठी थाना क्षेत्र के बलथरवा गांव में शराब कारोबारियो के विरूद्ध छापेमारी करने गई उत्पाद विभाग की टीम पर कारोबारियो ने हमला कर दिया और टीम में शामिल जवानों और वाहन पर जमकर पथराव किया गया, जिससे तीन जवान घायल है,वही वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गया।घायल जवानो में दो महिला सिपाही व एक होमगार्ड का जवान हैं। घायल होमगार्ड जवान मनीष कुमार की हालत गंभीर बनी हुई है। हमले के बाद पुलिस ने इस मामले में कारवाई करते हुए तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। गुप्त सूचना परउत्पाद पुलिस टीम दारोगा नीतू कुमारी के नेतृत्व में बलथरवा के राजेश पासवान व विकेश पासवान नामक शराब कारोबारी के विरूद्ध छापेमारी करने पहुंची। जहां शराब के साथ बलथरवा के बिगन प्रसाद, पीपराकोठी के चांद सरैया निवासी सगीर आलम व रमेश साह को गिरफ्तार कर वापस लौट रही थी। इसी बीच धंधेबाजों ने उत्पाद टीम हमला कर दिया और गिरफ्तार तीनों को छुड़ाने की कोशिश करते हुए उत्पाद विभाग की टीम पर पथराव करने लगे। इसमें सिपाही बंदना कुमारी कुमारी व ज्योति कुमारी के अलावा होमगार्ड जवान मनीष कुमार जख्मी हो गए। मनीष का उपचार मोतिहारी के एक निजी अस्पताल में चल रहा है।जबकि दो सिपाहियों को उपचार के बाद मुक्त कर दिया गया। घटना की बाबत दारोगा नीतू कुमारी ने पीपराकोठी थाने में आवेदन दिया है, जिसके बाद पुलिस धंधेबाजों की तलाश में जुटी है। उत्पाद निरीक्षक दीपक कुमार सिंह ने बताया कि छापेमारी के दौरान तीन धंधेबाजों को गिरफ्तार किया गया है। 16 बोतल अंग्रेजी व 72 बोतल नेपाली शराब जब्त की गई है।

बिहार में सारण जिले के मोतिराजपुर गांव के मदरसे में धमाका, मौलवी की मौत

पटना। बिहार में सारण जिले के गड़खा थाना क्षेत्र के मोतिराजपुर गांव के मदरसा परिसर में बुधवार रात हुए धमाके में ओल्हनपुर गांव निवासी मौलाना इमामुद्दीन की मौत हो गई, वहीं 10 वर्षीय बालक मुजफ्फरपुर निवासी नूर आलम गंभीर रूप से घायल हो गया। यह जानकारी पुलिस ने दी। पुलिस के अनुसार, मदरसा परिसर में विस्फोट से हुए धमाके की आवाज सुनकर आसपास के लोग एकत्र हो गए। सूचना मिलने पर गड़खा थाना के एसआई अमान अशरफ वहां पहुंचे, लेकिन उससे पहले स्थानीय लोग दोनों घायलों को लेकर पटना रवाना हो चुके थे। लोगों ने बताया कि पहले घायलों को छपरा सदर अस्पताल ले जाया गया। उसके बाद वहां से पटना ले जाया गया। सारण के पुलिस अधीक्षक डॉ गौरव मंगला ने बताया कि धमाके के बाद लोगों ने साक्ष्य को मिटा दिया है। पुलिस के अनुसार, घायल मौलाना इमामुद्दीन की इलाज के दौरान गुरुवार को मौत हो गई। स्थानीय लोगों ने बताया कि छात्र नूर आलम ने मदरसा के पीछे गेंद जैसी दिख रही वस्तु को हाथ में उठा लिया और मदरसे के अंदर आ गया। मौलाना की नजर पड़ी तो उन्हें बम की आशंका हुई और छात्र के हाथ से गेंदनुमा बम अपने हाथ में लेकर फेंकना चाहा। इतने में बम नूर आलम के पैर पर गिरकर फट गया। इस घटना में नूर आलम का पैर व मौलाना का हाथ क्षतिग्रस्त हो गया। हालांकि, कुछ लोग इसे सिलेंडर का विस्फोट बता रहे हैं। मौके पर पहुंची पुलिस को सिलेंडर फटने या विस्फोट के कोई साक्ष्य नहीं मिले। उल्लेखनीय है कि आगामी 20 मई को ही सारण लोकसभा क्षेत्र में मतदान होना है। लोग इस घटना को लोकसभा चुनाव से जोड़ रहे हैं। इस बात चर्चा है कि आखिर वहां बम क्यों रखा गया था।

पकड़ीदयाल अनुमंडल के दो अलग अलग थाना क्षेत्र से दो अपराधी गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण,एजेंसी। पकड़ीदयाल डीएसपी सुबोध कुमार के नेतृत्व में पुलिस ने अनुमंडल के दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों से दो देसी पिस्टल के साथ दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। गुरुवार को इसकी जानकारी देते डीएसपी सुबोध कुमार ने बताया कि मधुबन थाना क्षेत्र के बरागोविंद और नन्हकार चौक के समीप एक अपाची बाइक सवार तीन बदमाशों के द्वारा हथियार दिखाकर ई-रिक्शा चालक से पैसा तथा ई-रिक्शा को लूट लिया गया था।इस मामले में ई-रिक्शा चालक चकिया थाना क्षेत्र निवासी सुरेंद्र दास ने मधुबन थाना में प्राथमिक की दर्ज कराया था। जिसके बाद एसपी के निर्देश पर एसआईटी टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा द्वारा लगातार बदमाशों के गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही थी।

इसी क्रम में गठित टीम ने उक्त कांड में शामिल नन्हाकर गांव निवासी अरुण कुमार सहनी को गिरफ्तार किया गया।जिसकी तलाशी के दौरान एक पिस्टल, दो जिंदा कारतूस, लूट हुआ ई-रिक्शा, अपाची मोटरसाइकिल, एक रिन्च बरामद किया है। पूछताछ के क्रम में गिरफ्तार बदमाश इस घटना में शामिल अन्य साथियों का नाम का खुलासा किया है। साथ ही मधुबन चकिया बॉर्डर पर लूटपाट, छिनतई की अन्य घटनाओं में अपनी संलिप्तता स्वीकार किया है। डीएसपी ने कहा कि गिरफ्तार बदमाश के उपर मधुबन, चकिया, ब्रहमपुरा थाना में कई अपराधिक कांड दर्ज है। वहीं डीएसपी ने कहा कि दूसरी तरफ राजपुर थाने की पुलिस ने गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए सहबजिया गांव निवासी वीरेंद्र कुमार के घर से अवैध देसी कट्टा व चार जिंदा कारतूस को बरामद किया है। उन्होंने कहा कि दोनों बदमाशों को पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। छापेमारी दल में मधुबन सर्किल इंस्पेक्टर अशोक कुमार पांडेय, मधुबन थानाध्यक्ष संजीव मौआर, राजेपुर थानाध्यक्ष संदीप कुमार सहित अन्य पुलिस बल के जवान शामिल थे।

कनेक्ट विथ कम्युनिटी, कंट्रोल डेंगू थीम के साथ मनाया गया डेंगू दिवस

किशनगंज। जिले में बारिश के मौसम की शुरुआत हो गई है। डेंगू का लार्वा मुख्य रूप से जमे हुए साफ पानी में पैदा होता है। मानसून के शुरू होते ही लोगों को डेंगू से ग्रसित होने का संभावना बढ़ जाता है। इस मौसम में घर के आसपास बहुत से कीटाणुओं के बढ़ने के कारण लोगों के बीमार होने की संभावना भी बढ़ जाती है। ऐसे मौसम में लोगों को डेंगू और चिकनगुनिया से ग्रसित होने की बहुत खतरा रहता है। लोगों को इसके प्रति जागरूक करने के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा 16 मई को राष्ट्रीय डेंगू दिवस के रूप में मनाया गया है, जिस दौरान लोगों को डेंगू होने के कारण, पहचानने के लक्षण के साथ साथ अस्पताल में इसके इलाज के लिए उपलब्ध सुविधाओं के प्रति जागरूक किया जाता है। राष्ट्रीय डेंगू दिवस पर जिले के सभी अस्पतालों में उपलब्ध मरीजों के साथ साथ आसपास के विद्यालयों में भी स्वास्थ्य अधिकारियों व कर्मियों द्वारा जागरूकता अभियान चलाया गया। जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी डॉ. मंजर आलम की अध्यक्षता में जिले के स्कूली विद्यार्थियों को डेंगू से सुरक्षा के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान बच्चों को बदलते मौसम में डेंगू या चिकनगुनिया से सुरक्षित रहने के लिए घर के आसपास सफाई रखते हुए जमा पानी एवं गंदगी पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करने की जानकारी दी गई।

उन्होंने बताया कि बारिश के मौसम में लोगों को मच्छर से सुरक्षित रहने के लिए पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़ों का उपयोग करना चाहिए। घर में सभी कमरों को साफ सुथरा और हवादार बनाये रखना चाहिए। टूटे-फूटे बर्तनों, कूलर, एसी, फ्रिज के पानी निकासी ट्रे, पानी टंकी एवं घर के अंदर और अगल बगल में पानी को जमा न होने दें। गमला, फूलदान इत्यादि में जमा पानी को हर दूसरे दिन में बदलना चाहिए। अगर घर के आसपास कोई तालाब या नली हो तो वहां नियमित रूप से जमे हुए पानी पर मिट्टी के तेल डालना चाहिए।

मतदाता जागरूकता को लेकर बेहतर काम करने वाले पुरस्कृत

पूर्वी चंपारण। जिले के रक्सौल अनुमंडल कार्यालय परिसर स्थित सभागार में गुरूवार को समारोह के बीच मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में बेहतर कार्य करने वाले कर्मियों को पुरस्कृत किया गया।लोकसभा चुनाव में मतदान का प्रतिशत बढ़ाने के लिये स्वीप कार्यक्रम के तहत कार्य करनेवाले कर्मियों की सूची तैयार की गयी थी, जिसके आधार पर विभिन्न प्रखंडों के जीविका दीदियों, कौशल विकास केन्द्र व विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के द्वारा विभिन्न तरह के आयोजित प्रतियोगिताओं में चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

इस दौरान एसडीओ शिवाक्षी दीक्षित व डीएसपी धीरेन्द्र कुमार ने सभी चयनित प्रतिभागियों को प्रशस्ति-पत्र व उपहार देकर सम्मानित किया।प्रतियोगिता में निबंध प्रतियोगिता में रामगढ़वा प्रखंड की साक्षी कुमारी, स्लोगन साक्षी कुमारी, पत्र में साक्षी, कविता में मौसमी कुमारी, पोस्टर में अनु कुमारी व रंगोली में पल्लवी तथा रंगोली में रक्सौल की चंद्रावती देवी व किरण देवी,को पुरस्कृत किया गया। मेहंदी प्रतियोगिता में कुमारी प्रियतमा, बिंदु देवी, निबंध में मीरा कुमारी एवं पत्र में अंतिमा कुमारी, आदापुर प्रखंड के निबंध में मरियम खातून, कविता में विश्वजीत सिंह, मेहंदी में नजमा हेपतुल्लाह, पत्र में अंजली कुमार, स्लोगन में सूरज कुमार, पोस्टर में पुष्पांजलि कुमारी एवं रंगोली में सुष्मिता कुमारी, छौडादानों प्रखंड के निबंध में सुप्रिया कुमारी, पत्र में सुरभि कुमारी, स्लोगन में गौतम कुमार, रंगोली में आरती शर्मा सहित लगभग 30 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

सरपंच संघ के बाद, व्यवसायी संघ ने दिनेश अग्रवाल को वाल्मीकि नगर लोकसभा चुनाव में अपना समर्थन दिया

पश्चिम चंपारण (बगहा)। वाल्मीकि नगर लोकसभा क्षेत्र से निर्दलीय उम्मीदवार दिनेश अग्रवाल को सरपंच संघ का समर्थन मिलने के बाद बगहा के व्यवसायी वर्ग का भी भरपूर समर्थन मिल गया है। बगहा नगर स्थित मारवाड़ी धर्मशाला में सभी प्रमुख व्यवसायियों ने हजारों की संख्या में एकत्रित होकर दिनेश अग्रवाल को सर्वसम्मति से अपना नेता मानते हुए लोकसभा चुनाव में समर्थन देने का ऐलान कर दिया है।

दिनेश अग्रवाल स्वयं वैश्य समाज से आते हैं और पहली बार वैश्य समाज से कोई उम्मीदवार वाल्मीकि नगर लोकसभा सीट पर चुनावी मैदान में है। फूलगोभी छाप निशान के साथ दिनेश अग्रवाल निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव में अपना दम आजमा रहे हैं। यह पहली बार है जब इस लोकसभा क्षेत्र में किसी निर्दलीय प्रत्याशी को इतने बड़े पैमाने पर विभिन्न संगठनों और जनता का जोरदार समर्थन मिल रहा है। उल्लेखनीय है कि 15 मई को ही सरपंच संघ के सभी 208 सदस्यों ने दिनेश अग्रवाल से मिलकर उन्हें विजयश्री का माला पहनकर अपने नेता घोषित कर दिया। उसके बाद बगहा के व्यवसायी वर्ग ने भी उन्हें अपना नेता चुना है। इस पक्ष में दिनेश अग्रवाल ने भी यह भरोसा दिलाया है कि वह व्यवसायियों के हितों की रक्षा और उनकी सुरक्षा के लिए सड़क से लेकर संसद तक संघर्ष करेंगे। यह सुनिश्चित करेंगे की सरकार व्यवसायियों के हितों के लिए कार्य करें और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करे।

एक नजर

कविता कृष्णमूर्ति को ब्रिटेन में 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया

लंदन,एजेंसी। प्रसिद्ध गायिका कविता कृष्णमूर्ति को लंदन में वार्षिक 'यूके एशियन फिल्म फेस्टिवल (यूकेएएफएफ)' में संगीत में उनके योगदान के लिए 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया है। 'मिस्टर इंडिया' और 'हम दिल दे चुके सनम' जैसी कई हिंदी फिल्मों के गीतों को अपनी आवाज दे चुकीं 66 वर्षीय गायिका को सप्ताहांत में एक शानदार समारोह में 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' प्रदान किया गया। कविता कृष्णमूर्ति को चार दशक के करियर में उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया है। उन्होंने लगभग 45 भारतीय भाषाओं में 50,000 से अधिक गाने गाए हैं। कृष्णमूर्ति ने लंदन के ताज होटल में एक विशेष संवाद कार्यक्रम में कहा, 'मेरा रुख इस बात को लेकर हमेशा साफ रहा है कि कोई भी फिल्मी गाना जिसे सुनकर मेरे भाई या मां को शर्मिंदगी महसूस होगी, मैं उसे नहीं गाऊंगी।'

लेबनान में इज़रायली हवाई हमले में एक व्यक्ति की मौत

बेरूत। दक्षिणी लेबनान के मंसूरी मैदान पर बुधवार को इजरायली हवाई हमले में एक व्यक्ति की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। लेबनानी सैन्य सूत्रों ने यह जानकारी दी है। सूत्रों ने कहा कि घायल सीरियाई लोगों को लेबनानी नागरिक सुरक्षा द्वारा दक्षिण-पश्चिमी शहर टायर के एक अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। सूत्रों ने कहा कि इज़रायल ने जेज़िन क्षेत्र के जबल अल-रेहान क्षेत्र सहित पांच कस्बों और गांवों पर सात हवाई हमले किए और दक्षिणी लेबनान के सीमावर्ती क्षेत्र में 11 कस्बों और गांवों की ओर लगभग 50 गोले दागे। इजरायल द्वारा मंगलवार को दक्षिणी लेबनान में एक कमांडर की हत्या के जवाब में हिजबुल्लाह ने कहा कि उसके लड़ाकों ने मेरोन हवाईअड्डे पर निगरानी इकाई के मुख्यालय तबरैय्या शहर के पश्चिम में इलानिया हवाईअड्डा सहित 91वीं डिवीजन की कमान का मुख्यालय बरनिट बैरक में कई जगहों पर हमला करने के लिए मिसाइलों और ड्रोन का इस्तेमाल किया था। उल्लेखनीय है कि इज़रायल पर हमास के हमले के साथ एकजुटता दिखाने के लिए लेबनानी सशस्त्र समूह हिज्बुल्लाह द्वारा इज़रायल की ओर दागे गए रॉकेटों की बौछार के बाद 8 अक्टूबर, 2023 को लेबनान-इज़रायल सीमा पर तनाव बढ़ गया। इसके बाद इज़रायल ने जवाबी कार्रवाई करते हुए दक्षिणपूर्वी लेबनान की ओर भारी गोलीबारी की। लेबनानी सुरक्षा सूत्रों के अनुसार हिज़्बुल्लाह और इज़रायल के बीच टकराव में लेबनानी पक्ष के 463 लोग मारे गए हैं, जिनमें 291 हिज़्बुल्लाह सदस्य और 86 नागरिक शामिल हैं।

फलस्तीन समर्थक प्रदर्शनकारियों ने मिशिगन विश्वविद्यालय के अधिकारी के घर के बाहर किया प्रदर्शन

मिशिगन,एजेंसी। मास्क पहने फलस्तीन समर्थक प्रदर्शनकारियों ने मिशिगन विश्वविद्यालय की एक अधिकारी के घर के बाहर तंबू गाड़कर और नकली शव रखकर प्रदर्शन किया, जिससे विश्वविद्यालय में तनाव बढ़ गया है। विश्वविद्यालय के संचालक मंडल की अध्यक्ष सारा हब्बार्ड ने कहा कि बुधवार को ओकेमोस में उनके घर के बाहर सुबह छह बजे हुए प्रदर्शन में 30 लोग शामिल थे। हब्बार्ड ने एसोसिएटेड प्रेस को बताया, वे मेरे घर पहुंचे और मेरे सामने के दरवाजे पर एक पत्र चिपका दिया और तंबू लगाने के लिए आगे बढ़े। उन्होंने (प्रदर्शनकारियों) कई अन्य चीजें सामने वाले प्रांगण में छोड़ दीं। हब्बार्ड ने कहा मेरिडियन टाउनशिप पुलिस वहां पहुंची जिससे प्रदर्शनकारी 30 से 45 मिनट बाद वहां से चले गए। एन आर्बर परिसर में प्रदर्शनकारियों ने एक प्रमुख सार्वजनिक स्थान डायग पर अपना डेरा जमा रखा है। प्रदर्शनकारियों का यह समूह मांग कर रहा है कि विश्वविद्यालय के धन को इज़राइल से जुड़ी कंपनियों में निवेश करना बंद किया जाए लेकिन विश्वविद्यालय का कहना है कि उसने कोई प्रत्यक्ष निवेश नहीं किया है, महज डेढ़ करोड़ अमरीकी डॉलर से भी कम धनराशि ऐसी है जो इज़राइल की कंपनियों में लगी हो सकती है।

ईरान ने हौथी को हथियार हस्तांतरित करने के अमेरिकी आरोपों को खारिज किया

तेहरान,एजेंसी। ईरान ने यमन स्थित हौथी को हथियार हस्तांतरित करने के अमेरिका के आरोपों को खारिज कर दिया है। आधिकारिक समाचार एजेंसी आईआरएनए ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

ईरान के संयुक्त राष्ट्र राजदूत अमीर सईद इरावानी ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस और मई 2024 के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष पेड्रो कोमिसारियो अफोंसो को लिखे एक पत्र में यह टिप्पणी संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी उप स्थायी प्रतिनिधि रॉबर्ट वुड द्वारा सोमवार को यमन की स्थिति पर सुरक्षा परिषद की बैठक में की गई टिप्पणियों के जवाब में की।

श्री वुड ने बैठक में कहा कि इस बात के व्यापक सबूत हैं कि ईरान संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों का उल्लंघन करते हुए हौथी के सदस्यों को बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलों सहित उन्नत हथियार प्रदान कर रहा है। श्री इरावानी ने अफसोस जताया कि अमेरिकी प्रतिनिधि ने एक बार फिर सुरक्षा परिषद के मंच का इस्तेमाल ईरान के खिलाफ ऐसी गलत सूचना फैलाकर, अमेरिका के अदूरदर्शी राजनीतिक हितों की रक्षा करने और यमन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के खिलाफ अपनी अवैध कार्रवाई और निरंतर सैन्य आक्रामकता को उचित और वैध बनाने के लिए किया। उन्होंने कहा कि ईरान ने इस तरह के निराधार दावों को दृढ़ता से खारिज कर दिया और इस बात पर जोर दिया कि उनका देश यमन पर सुरक्षा परिषद के

प्रस्तावों के लिए प्रतिबद्ध है और उनके साथ विरोधाभास में कोई गतिविधि नहीं की है। उन्होंने कहा कि ईरान ने राजनयिक चैनलों के माध्यम से यमन के संकट के शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन किया और समुद्री सुरक्षा और नेविगेशन की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उल्लेखनीय है कि पिछले नवंबर से हौथी ने इजरायली हमलों के तहत गाजा में फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता दिखाने के संकेत के रूप में लाल सागर और अदन की खाड़ी में वाणिज्यिक जहाजों पर हमले शुरू कर दिए हैं। हमलों के जवाब में अमेरिका और ब्रिटेन ने जनवरी के मध्य से यमन में हौथी ठिकानों के खिलाफ हवाई और मिसाइल हमले किए हैं।

कश्मीर में तीन महीने से बंधक बनाए गए 35 नेपाली वतन लौटे, दो एजेंट गिरफ्तार

काठमांडू,एजेंसी। अच्छे वेतन के साथ रोजगार का वादा कर कश्मीर ले जाए जाने के बाद तीन महीने तक बंधक बनाए गए 35 नेपाली मजदूर रिहा हो गए हैं। उन्हें 3 फरवरी को बिहार के चार एजेंटों के माध्यम से कश्मीर ले जाया गया था। इन सभी को कश्मीर के बड़गांव से बचाया गया, जो बीते बुधवार की रात घर लौट आए हैं। कश्मीर पुलिस ने इनको बंधक बनाने वाले दो एजेंटों को गिरफ्तार भी किया है।

नेपाली दूतावास, किन इंडिया और जम्मू-कश्मीर पुलिस की पहल पर पांच बच्चों समेत बचाए गए सभी 35 लोग नेपाल के सर्लाही, धनुषा और महोत्तरी जिले के रहने वाले हैं। इन लोगों ने बताया कि कुल 43 लोगों को 720 रुपये की दैनिक मजदूरी पर कश्मीर ले जाया गया था। दिल्ली में नेपाली दूतावास के परामर्शदाता, नेपाल पुलिस की एसएसपी उमा चतुर्वेदी ने टेलीफोन पर बताया कि इन सभी मजदूरों को कश्मीर में बंधक बनाकर लगातार प्रताड़ित किया जा रहा था। चतुर्वेदी ने बताया कि बचाए गए लोगों को उनके काम के लिए भुगतान भी नहीं किया गया। उनके मुताबिक 43 बंधकों में से सात पहले ही भाग निकले थे। नेपाली दूतावास की तरफ से बताया गया है कि एक एजेंट का रिश्तेदार एक नेपाली लड़का कश्मीर में रहता है। रिहा कराए गए एक मजदूर ने बताया कि कश्मीर पहुंचने के बाद हम लोगों को पीटा गया और मोबाइल फोन, पैसे और नागरिकता के दस्तावेज छीन लिए। मजदूर ने यह भी बताया कि हम लोगों को अच्छा खाना भी नहीं मिलता था। साइट पर न कहीं भोजन उपलब्ध

था और ना पानी। भोजन न मिलने पर भूखा रहना पड़ता था। खाने के लिए एक-दो समोसे और जूस देकर पूरे दिन काम कराते थे। बचाए गए एक अन्य नेपाली मजदूर रंजीत चौधरी ने बताया कि उन लोगों को जान से मारने की धमकी दी जाती थी। वे कहते थे कि उन्होंने सात नेपालियों को गोली मारकर और बोरे में भरकर मार डाला।

नई दिल्ली स्थित किन इंडिया के अध्यक्ष नवीन जोशी ने टेलीफोन पर बताया कि रिहा कराये गए मजदूर सुरक्षित रूप से अपने गांव लौट गए हैं। उन्होंने बताया की हमने 18 साल से कम उम्र के पांच बच्चों समेत 35 नेपाली लोगों को कश्मीर से दिल्ली के रास्ते उनके गांव लौटाया है। उन्होंने कहा की इन मजदूरों को बेहद अमानवीय परिस्थितियों में बंधक बनाकर रखा गया था। हम नेपाली दूतावास, कश्मीर पुलिस और अन्य एजेंसियों के समन्वय से उन्हें बचाने में कामयाब रहे। कश्मीर पुलिस ने इनको बंधक बनाने वाले दो एजेंटों को गिरफ्तार भी किया है।

नासा ने ध्रुवीय क्षेत्रों के ताप उत्सर्जन का अध्ययन करने के लिए नया मिशन शुरू करने की योजना बनाई

लॉस एंजिल्स। अमेरिका में नासा ने पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों से गर्मी के नुकसान का अध्ययन करने और बदलती जलवायु पर जानकारी प्रदान करने के लिए इस महीने एक नया मिशन शुरू करने की योजना बनाई है। नासा की जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी (जेपीएल) ने बुधवार को यह जानकारी दी।

मिशन का नाम पोलर रेडिएंट एनर्जी इन द फार-इन्फ्रारेड एक्सपेरिमेंट (पीआरईएफआईआरई) है। यह पृथ्वी पर दो सबसे दूरस्थ क्षेत्रों का आर्कटिक और अंटार्कटिक का अध्ययन करेगा। जेपीएल ने बताया कि पीआरईएफआईआरई के प्रत्येक क्यूब उपग्रह या क्यूबसैट पृथ्वी की सतह और वायुमंडल द्वारा अंतरिक्ष में उत्सर्जित दूर-अवरक्त ऊर्जा के रूप में गर्मी को मापने के लिए एक थर्मल इंफ्रारेड स्पेक्ट्रोमीटर का उपयोग करेंगे। जेपीएल के अनुसार मिशन का डेटा ध्रुवों पर ग्रीनहाउस प्रभाव के बारे में हमारी समझ को बेहतर बनाने में विशेष रूप से जल वाष्प, बादलों और पृथ्वी के वायुमंडल के अन्य तत्वों की गर्मी को फंसाने और इसे अंतरिक्ष में विकीर्ण होने से रोकने की क्षमता में मदद करेगा। शोधकर्ता इस जानकारी का उपयोग जलवायु और बर्फ मॉडल को अद्यतन करने के लिए करेंगे जिससे इस बात का बेहतर अनुमान लगाया जा सकेगा कि गर्म होती दुनिया में समुद्र के स्तर, मौसम और बर्फ के आवरण में कैसे बदलाव होने की संभावना है।

नागापट्टिनम और केकेएस के बीच नौका सेवा की बहाली में देरी

कोलंबो,एजेंसी। विमानन मंत्री निमल सिरिपाला डी सिल्वा ने कहा है कि भारत में नागापट्टिनम और श्रीलंका के उत्तर में जाफना के पास कांकेसंथुराई क्षेत्र के बीच यात्री नौका सेवा की बहाली में फिर से अनिश्चित काल के लिए देरी हो गई है। डी सिल्वा ने बुधवार को कहा कि तमिलनाडु के नागापट्टिनम और जाफना जिले के कांकेसंथुराई (केकेएस) उपनगर के बीच यात्री नौका सेवा में 'तकनीकी खामियों' के कारण विलंब हुआ है। यह सेवा 13 मई को फिर से शुरू होनी थी। मंत्री ने इस बात का खुलासा नहीं किया कि किस तरह की 'तकनीकी खामियां' थीं।

लगभग 40 वर्षों के बाद पिछले साल अक्टूबर में शुरू की गई यह सेवा खराब मौसम के कारण कुछ ही दिनों बाद रोक दी गई थी। तब से नौका सेवा बहाली में तीन बार देरी हो चुकी है। इसकी बहाली भारत-श्रीलंका समुद्री सहयोग का एक महत्वपूर्ण घटक है। भारत ने उत्तरी प्रांत में कांकेसंथुराई बंदरगाह के पुनर्वास के लिए श्रीलंका को 63.65 मिलियन अमेरिकी डॉलर की अनुदान सहायता भी बढ़ा दी है। श्रीलंका के उत्तरी क्षेत्र में स्थित, कांकेसंथुराई बंदरगाह लगभग 16

एकड़ क्षेत्र में फैला है। इसे केकेएस बंदरगाह भी कहा जाता है। यह पांडिचेरी में कराईकल बंदरगाह से 104 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। तमिलनाडु में नागापट्टिनम को जाफना के पास कांकेसंथुराई बंदरगाह से जोड़ने वाली सीधी यात्री नौका सेवा साढ़े तीन घंटे में लगभग 111 किलोमीटर की दूरी तय करती है। नौका सेवा एक निजी ऑपरेटर, इंडश्री फेरी सर्विसेज द्वारा संचालित की जाएगी, जिसे श्रीलंका सरकार (जीओएसएल) के परामर्श से शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एससीआई) द्वारा चुना गया है।

टेनेसी में छोटे विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से 3 की मौत

फ्रैंकलिन (अमेरिका)। विलियमसन काउंटी में बुधवार को एक छोटे विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से तीन लोगों की मौत हो गई। स्थानीय अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की। विलियमसन काउंटी के प्रमुख डिप्टी मार्क एलरोड ने संवाददाताओं को बताया कि विमान ने बैटन राउज, लुईसियाना से उड़ान भरी थी और लुइसविले, केंटकी की ओर जा रहा था।

उन्होंने बताया कि विमान स्थानीय समयानुसार दोपहर के आसपास नैशविले से लगभग 48.28 किलोमीटर दक्षिण में टेनेसी में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। एलरोड ने कहा कि विमान का मलबा एक मील से अधिक क्षेत्र में फैला है, लेकिन किसी

इमारत के क्षतिग्रस्त होने की सूचना नहीं है।

मृतकों के नाम जारी नहीं किये गये हैं। विलियमसन काउंटी आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी के प्रवक्ता जिल बर्गिन ने कहा कि उन्हें दोपहर करीब 12:05 बजे फोन आया था। बर्गिन ने बुधवार को संवाददाता सम्मेलन के दौरान कहा, 'फोन करने वाले ने बस एक विमान दुर्घटना की आशंका जताई और उनके पास बहुत अधिक विवरण नहीं था। उन्होंने बस एक आवाज सुनी और मलबा देखा। उन्होंने बस यही जानकारी दी। फेडरल एविएशन एसोसिएशन (एफएए) ने विमान की पहचान सिंगल-इंजन बीचक्राफ्ट V35 के रूप में की है। एफएए और राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड घटना की जांच कर रहे हैं।

इस समय खतरे से बाहर हैं स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री फिको, उप प्रधानमंत्री ताराबा ने कहा

बांस्का बिस्त्रिका (स्लोवाकिया)। स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री रॉबर्ट फिको बुधवार को हुए एक हमले में कई गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन उप प्रधानमंत्री टॉमस ताराबा ने विश्वास जताया है कि उन्हें (फिको को) कुछ नहीं होगा। जब प्रधानमंत्री एक कार्यक्रम में समर्थकों का अभिवादन कर रहे थे, उसी दौरान उनकी हत्या करने का प्रयास किया गया। स्लोवाकिया के उप प्रधानमंत्री ताराबा ने बीबीसी से बातचीत में कहा, 'मुझे विश्वास है कि वह बच जाएंगे। इस समय वह खतरे की स्थिति से बाहर हैं। सरकारी अधिकारियों ने बताया कि राजधानी से लगभग 140 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में हैंडलोवा शहर में एक सांस्कृतिक केंद्र के बाहर प्रधानमंत्री फिको पर पांच गोलियां चलाई गईं। फिको के फेसबुक अकाउंट से जारी एक संदेश में बताया गया कि उन्हें हैंडलोवा से 29 किलोमीटर दूर बांस्का बिस्त्रिका में एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है क्योंकि राजधानी ब्रातीस्लावा ले जाने में काफी समय लगता। यह हमला ऐसे समय हुआ है जब यूरोपीय संसद के लिए सांसदों को चुनने के वास्ते पूरे यूरोप में होने वाले चुनावों से तीन हफ्ते पहले राजनीतिक प्रचार अभियान तेज हो गया है। कुछ विपक्षी नेता अब इस तरह की बात कर रहे हैं कि फिको इस स्थिति का चुनाव में लाभ उठा सकते हैं।

अमेरिका में निर्वाचित पदों पर भारतीय अमेरिकियों की संख्या उनकी बढ़ती आबादी को नहीं दर्शाती है: हैरिस

वाशिंगटन,एजेंसी। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने बुधवार को कहा कि निर्वाचित पदों पर भारतीय मूल के अमेरिकियों की संख्या उनकी बढ़ती आबादी को नहीं दर्शाती है। इसी के साथ उन्होंने ज्यादा से ज्यादा भारतीय अमेरिकियों को राजनीति में सक्रिय होने की अपील की। कमला हैरिस ने डेमोक्रेटिक पार्टी के थिंक टैंक 'इंडियन अमेरिकन इंपैक्ट' के वार्षिक सम्मेलन 'डेसिस डिसाइड' में यह बात कही थी। यह संगठन देश भर में निर्वाचित पदों के लिए चुनाव में उतरने वाले भारतीय अमेरिकियों को समर्थन और धन मुहैया कराता है।

अमेरिका में भारतीय और अफ्रीकी मूल की पहली महिला उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने राष्ट्रीय राजधानी में भारतीय मूल के अमेरिकियों से खचाखच भरे कक्ष में उन्हें संबोधित करते हुए कहा, पिछले कुछ सालों के दौरान बड़ी संख्या में भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिक निर्वाचित पदों के वास्ते चुनाव प्रक्रिया में शामिल हुए, लेकिन फिर भी यह संख्या उनकी बढ़ती जनसंख्या के सही अनुपात को नहीं दर्शाती है। वर्तमान में अमेरिकी संसद में भारतीय

मूल के पांच निर्वाचित सदस्य हैं, जिसमें डॉ. अमी बेरा, राजा कृष्णमूर्ति, रो खन्ना, प्रमिला जयपाल और श्री थानेदार शामिल हैं। 'अमेरिकन इंपैक्ट' का मानना था कि 2024 में अमेरिकी संसद में भारतीय मूल के अमेरिकियों की संख्या बढ़कर 10 हो जाएगी। राष्ट्रपति पद के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा के संबंध में 'इंडियन अमेरिकन इंपैक्ट' का कहना कि अमेरिका में भारतीय मूल का समुदाय, जो दूसरा सबसे बड़ा अप्रवासी समुदाय है और देश के कई राज्यों में इसकी जनसंख्या लगातार बढ़ रही है, चुनाव परिणाम को भी प्रभावित कर सकता है। कमला हैरिस ने 'इंडियन अमेरिकन इम्पैक्ट' के काम की सराहना करते हुए कहा कि उसने न केवल समुदाय के सदस्यों को चुनने में बल्कि जॉर्जिया जैसे प्रांतों में सीनेटर के चुनाव में भी अहम भूमिका निभाई है। हैरिस ने कहा, आपको पता होना चाहिए कि आप अकेले नहीं हैं। एक देश के रूप में हमें अभी भी बहुत कुछ करना है, जिसके कारण हम यहां एक साथ हैं।

नेपाल में गृहमंत्री लामिछाने के खिलाफ विपक्ष का सड़क से संसद तक विरोध

काठमांडू। नेपाल के उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ विपक्ष ने कांग्रेस संसद के दोनों सदनों से लेकर सड़क तक मोर्चा खोल दिया है। विपक्ष संयुक्त संसदीय जांच समिति की मांग पर अड़ा है। नेपाली कांग्रेस तो संसद के पिछले सत्र से लेकर इस बार के बजट सत्र तक लगातार सदन की कार्रवाई अवरूद्ध कर प्रदर्शन कर रही है। विपक्ष ने बजट सत्र में कार्यवाही एक मिनट के लिए भी नहीं चलने दी है। संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को राष्ट्रपति संबोधित जरूर कर चुके हैं पर धन्यवाद प्रस्ताव की औपचारिकता अब तक पूरी नहीं हो पाई है। नेपाली कांग्रेस के प्रमुख सचेतक रमेश लेखक ने कहा कि जब तक हमारी मांग पूरी नहीं हो जाती सदन की कार्यवाही नहीं चलने दी जाएगी। कांग्रेस ने सरकार पर दबाब बढ़ाने के लिए अपनी पार्टी के सभी संगठनों को सड़क पर उतार दिया है। आज सुबह से ही कांग्रेस के छात्र और युवा संगठनों के कार्यकर्ता लामिछाने के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। तरुण दल के नेता काठमांडू के अलग-अलग इलाके में गृहमंत्री के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं।

इमरान की आज सुप्रीम कोर्ट के सामने वीडियो लिंक के माध्यम से पेशी

इस्लामाबाद। जेल में बंद मुल्क के पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के संस्थापक इमरान खान आज वीडियो लिंक के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश होंगे। यह जानकारी यहां के प्रमुख समाचार पत्र डान ने अपनी रिपोर्ट में दी है। उनके खिलाफ कई गंभीर मामले विचाराधीन हैं। वह करीब नौ महीने से सलाखों के पीछे हैं। वह आज एनएबी कानून में बदलाव के एक मामले में याचिकाकर्ता के रूप में पेश होंगे। सनद रहे, दो अदालतों ने एक दिन बाद पहले उन्हें अल-कादिर ट्रस्ट मामले सहित अलग-अलग मामलों में राहत प्रदान की है। इस बीच, जज सुहैब बिलाल रांझा ने भी खान को 2022 में आजादी मार्च के संबंध में खन्ना पुलिस स्टेशन में दर्ज एक मामले में बरी कर दिया। खान और उनकी पार्टी के नेताओं के खिलाफ धारा 144 के उल्लंघन के मामले दर्ज किए गए थे। पिछले साल अगस्त में जमान पार्क से गिरफ्तारी और इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बारे में कानून मंत्री द्वारा व्यक्त की गई आपत्तियों के बावजूद तोशाखाना मामले में दोषी ठहराए जाने के बाद पीटीआई संस्थापक की शीर्ष अदालत के समक्ष यह पहली उपस्थिति होगी।

एक नजर

हैदराबाद और गुजरात मैच हुआ रद्द, दिल्ली, लखनऊ प्लेऑफ से हुए बाहर

हैदराबाद,एजेंसी। लगातार हो रही बारिश के करण गुरुवार को सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस के बीच होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का 66वां मैच रद्द घोषित कर दिया गया। इसी के साथ ही दिल्ली कैपिटल्स और लखनऊ सुपर जायंट्स की टीमें प्लेऑफ से बाहर हो गई है। हैदरबाद में लगातार हो रही बारिश के कारण मैच में एक भी गेंद फेंकी नहीं जा सकी और अंपायर नंद किशोर और विरेंद्र शर्मा ने मैदान का निरीक्षण किया। अंतः आधिकारिक रूप से मैच को रद्द घोषित कर दिया गया। आज का मैच रद्द होने के बाद प्लेऑफ के बने समीकरण के अनुसार दिल्ली कैपिटल्स की टीम नेट रन रेट (-0.377) होने के कारण आधिकारिक तौर पर बाहर हो गई क्योंकि उनका रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) (+0.387) से काफी पीछे है और उनके पास कोई मैच भी नहीं बचा है। जबकि लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के लिए प्लेऑफ में प्रवेश मुश्किल होगा। लखनऊ का नेट रन रेट -0.787 है। उन्हें बेंगलुरु से ऊपर जाने के लिए कम से कम 400 रन से मैच जीतना होगा।

एक बार काम पूरा हो गया तो चला जाऊंगा, फिर कुछ समय नजर नहीं आऊंगा : कोहली

बेंगलुरू। भारत के सुपरस्टार बल्लेबाज विराट कोहली को पता है कि वह हमेशा खेलते नहीं रह सकते लेकिन विदा लेने से पहले वह अपना सबकुछ क्रिकेट कैरियर को देना चाहते हैं और उनका कहना है कि एक बार जाने के बाद वह कुछ समय नजर भी नहीं आयेंगे। कोहली आईपीएल में इस सत्र में अब तक का रिकॉर्ड आठवां शतक जड़ चुके हैं। उन्होंने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के लिये 13 मैचों में 661 रन बनाये हैं। आरसीबी द्वारा सोशल मीडिया पर डाले गए वीडियो में 35 वर्ष के कोहली ने कहा कि मलाल के बिना जीने की ललक ही उनकी प्रेरणा है। उन्होंने कहा, ''मैं कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ना चाहता ताकि बाद में कोई पछतावा नहीं हो। एक बार काम पूरा हो जाये तो मैं चला जाऊंगा और फिर कुछ समय नजर नहीं आऊंगा।'' उन्होंने कहा, ''जब तक मैं खेल रहा हूं, अपना सब कुछ खेल को देना चाहता हूं। यही मेरी प्रेरणा है। कोहली ने कहा, ''हर खिलाड़ी के कैरियर का अंतिम समय आता है। मैं भी हमेशा खेलता नहीं रहूंगा लेकिन मैं इस सोच के साथ विदा नहीं लेना चाहता कि अगर मैने उस दिन ऐसा किया होता तो अच्छा होता।'' कोहली अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप में भारतीय टीम के सदस्य हैं।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने एनआरएआई की ओलंपिक चयन नीति को बरकरार रखा

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) द्वारा बनाई गई 2024 पेरिस ओलंपिक चयन नीति को बरकरार रखा है। कोर्ट ने यह आदेश एक शूटर द्वारा उसे ओलंपिक चयन ट्रायल में शामिल न किए जाने को लेकर दायर की गई याचिका खारिज होने के बाद सुनाया। घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, एनआरएआई के महासचिव के. सुल्तान सिंह ने गुरुवार को एक आधिकारिक बयान में कहा, ओलंपिक खेलों 2024 के लिए हमारी चयन नीति निष्पक्ष, उचित और पारदर्शी है। सभी एथलीटों को उचित मौका दिया गया है। निशानेबाजों के क्वालीफाई करने के लिए पॉलिसी (नीति) अधिक समावेशी है। भारतीय निशानेबाजी दल ने 26 जुलाई, 2024 को शुरू होने वाले आगामी पेरिस 2024 खेलों के लिए प्रत्येक राष्ट्र के लिए अधिकतम 24 कोटा में से रिकॉर्ड 21 ओलंपिक कोटा स्थान हासिल किए हैं। जबकि राइफल और पिस्टल में से प्रत्येक ने अधिकतम आठ कोटा हासिल किए हैं। शॉटगन निशानेबाजों ने अब तक का अपना सर्वोच्च पांच कोटा हासिल कर लिया है। टीम चार ओलंपिक पदकों (एक स्वर्ण सहित) की संख्या में और पदक जोड़ने की कोशिश करेगी जो इस खेल ने अब तक इस प्रतिष्ठित खेल प्रतियोगिता में जीते हैं।

जीत के साथ आईपीएल से विदा लेना चाहेंगे मुंबई इंडियंस और लखनऊ सुपर जाइंट्स

मुंबई,एजेंसी। आईपीएल प्लेआफ की दौड़ से बाहर हो चुकी मुंबई इंडियंस और लखनऊ सुपर जाइंट्स शुक्रवार को वानखेड़े स्टेडियम पर अपने आखिरी मैच में जीत के साथ टूर्नामेंट से विदा लेने की कोशिश करेंगी। मुंबई इंडियंस काफी पहले ही प्लेआफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है जबकि लखनऊ सुपर जाइंट्स अगर आखिरी मैच में भारी अंतर से जीत दर्ज करती है तो भी उसके अंतिम चार में पहुंचने की संभावना नगण्य हैं। तीन मैचों में लगातार हार से लखनऊ ने अंक भी गंवाये और रनरेट भी खराब हो गया।

केकेआर से 98 रन से हार के बाद उसे सनराइजर्स हैदराबाद ने दस विकेट से और दिल्ली कैपिटल्स ने 19 रन से हराया। सातवें स्थान पर काबिज लखनऊ का नेट रनरेट माइनस 0.787 है जबकि छठे स्थान की टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू का रनरेट 0.387 है। पांच बार की आईपीएल चैम्पियन मुंबई इंडियंस प्लेआफ की दौड़ से बाहर होने वाली पहली टीम थी। नये कप्तान हार्दिक पंड्या के साथ इस सत्र में टीम का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। अब तक 13 मैचों में बस चार जीत सकी मुंबई इंडियंस शुक्रवार को जीत जाती है तो उसके दस अंक होंगे जिससे वह आखिरी स्थान पर रहने से बच सकती है।

सत्र से पहले रोहित शर्मा की जगह पंड्या को कप्तानी सौंपे जाने से मुंबई के प्रशंसकों में काफी आक्रोश था जिसका टीम के प्रदर्शन पर भी असर पड़ा। बल्लेबाजों ने पूरी तरह निराश किया तो गेंदबाजी में जसप्रीत बुमराह (13 मैचों में 20 विकेट)दूसरे गेंदबाजों को अच्छे प्रदर्शन के लिये प्रेरित नहीं कर सके। इस मैच में फोकस विश्व कप टीम में शामिल पंड्या, रोहित , बुमराह और सूर्यकुमार यादव पर रहेगा। रोहित पिछली छह पारियों में नाकाम रहे हैं और उनका सर्वोच्च स्कोर 19 रन रहा। वहीं पंड्या

भी हरफनमौला की भूमिका बखूबी नहीं निभा सके। सूर्यकुमार यादव ने तीन अर्धशतक और एक शतक जमाकर आत्मविश्वास हासिल किया है। लखनऊ के कप्तान केएल राहुल ने तीन अर्धशतक समेत 136.36 के स्ट्राइक रेट से 465 रन बनाये। उनका स्ट्राइक रेट हालांकि चर्चा का विषय रहा। निकोलस पूरन (168.92 के स्ट्राइक रेट से 424 रन) ने अच्छा प्रदर्शन किया लेकिन एक ईकाई के रूप में टीम नाकाम रही।

टीमें

मुंबई इंडियंस

हार्दिक पंड्या (कप्तान), रोहित शर्मा, सूर्यकुमार यादव, डेवाल्ड ब्रेविस, जसप्रीत बुमराह, पीयूष चावला, गेराल्ड कोएट्टी, टिम डेविड, श्रेयस गोपाल, इशान किशन, अंशुल कंबोज, कुमार कार्तिकेय, आकाश मधवाल, क्वेना मफाका, मोहम्मद नबी, शम्स मुलानी, नमन धीर, शिवालिक शर्मा, रोमारियो शेफर्ड, अर्जुन तेंदुलकर, नुवान तुषारा, तिलक वर्मा, हार्विक देसाई (विकेटकीपर), नेहल वढेरा और ल्यूक वुड।

लखनऊ सुपर जाइंट्स

केएल राहुल (कप्तान), क्विंटन डिकॉक, निकोलस पूरन, आयुष बदोनी, काइल मेयर्स, मार्कस स्टोइनिस, दीपक हुडा, देवदत्त पडिक्कल, रवि बिश्नोई, नवीन उल हक, करुणाल पंड्या, युद्धवीर सिंह, प्रेरक मांकड़, यश ठाकुर, अमित मिश्रा, शमर जोसेफ, मयंक यादव, मोहसिन खान, के गौतम, शिवम मावी, अर्शिन कुलकर्णी, एम सिद्धार्थ, एश्टन टर्नर, मैट हेनरी, मोहम्मद अरशद खान।

मैच का समय: शाम 7.30 से।

छेत्री ने संन्यास का ऐलान किया, छह जून को खेलेंगे आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच

नई दिल्ली। महान खिलाड़ी सुनील छेत्री ने कुवैत के खिलाफ छह जून को फीफा विश्व कप क्वालीफाइंग मैच के बाद अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल को अलविदा कहने का फैसला लिया है जिससे उनके लंबे और सुनहरे कैरियर पर विराम लग जायेगा। भारतीय टीम के कप्तान छेत्री ने सोशल मीडिया पर डाले वीडियो के जरिये यह घोषणा की। 2005 में अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में पदार्पण करने वाले छेत्री ने भारत के लिये 94 गोल किये हैं। उनके नाम भारत के लिये सबसे ज्यादा गोल और सर्वाधिक अंतरराष्ट्रीय मैच है।

सक्रिय फुटबॉल खिलाड़ियों में क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेस्सी के बाद उनके नाम सबसे ज्यादा गोल हैं। वह सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय गोल करने वाले खिलाड़ियों की सूची में चौथे स्थान पर हैं। 39 वर्ष के छेत्री करीब दो दशक से भारतीय फुटबॉल को अपनी सेवायें दे रहे हैं। उनके योगदान को इससे आंका जा सकता है कि आज भी भारतीय टीम गोल के लिये पांच फुट सात इंच के इस फॉरवर्ड पर निर्भर करती है। छेत्री का आखिरी मैच कोलकाता के साल्टलेक स्टेडियम पर होगा। जिस शहर में उन्होंने इतना फुटबॉल खेला, वहीं से विदा लेने से बेहतर इस स्वर्णिम यात्रा की परिणिति नहीं हो सकती। भारत इस समय चार अंक लेकर कतर के बाद ग्रुप ए में दूसरे स्थान पर है। छेत्री ने मार्च में 150वां अंतरराष्ट्रीय मैच खेला था और गुवाहाटी में अफगानिस्तान के खिलाफ मैच में गोल भी किया था। भारत हालांकि वह मैच 1.2 से हार गया था। देश के सबसे उम्दा स्ट्राइकर में से एक बने छेत्री ने पाकिस्तान के खिलाफ 2005 में अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में पदार्पण मैच में गोल किया था। उन्होंने कहा, ''उस दिन को मैं कभी नहीं भूल सकता। मुझे याद है जब मैं देश के लिये पहली बार खेला था। यह अविश्वसनीय था। उन्होंने कहा, ''एक दिन पहले सुबह भारतीय टीम के मेरे पहले कोच सुक्खी सर (सुखविंदर सिंह) मेरे पास आये और बोले कि तुम खेल रहे हो। मैं पता नहीं सकता कि कैसा महसूस हुआ था।'' उन्होंने कहा, ''मैने अपनी जर्सी ली, उस पर परफ्यूम छिड़का। पता नहीं क्यो। उस दिन जो कुछ भी हुआ, उनका मुझे यह बताना, नाश्ते से लंच तक, मेरा पहला गोल और 80वें मिनट में गोल गंवाना। वह दिन मैं कभी नहीं भूल सकता और राष्ट्रीय टीम के साथ मेरे सफर के सर्वश्रेष्ठ दिनों में से वह एक था। भारतीय फुटबॉल के भविष्य के बारे में उन्होंने कहा कि अब देश को नौ नंबर की जर्सी के लिये अगला खिलाड़ी चुनना होगा। उनका मानना है कि टीम में फिलहाल ऐसे स्ट्राइकर की कमी है जो अपने क्लब के लिये मुख्य स्ट्राइकर के तौर पर खेलता हो। छेत्री ने कहा कि हाल ही में उन्हें अहसास हुआ कि अब सफर खत्म करने का समय आ गया है। उन्होंने कहा, ''पिछले 19 साल में मैने कर्तव्य, दबाव और आनंद की अनुभूति की है। मैने कभी व्यक्तिगत रूप से नहीं सोचा। पिछले डेढ दो महीने से मुझे ख्याल आ रहा था कि अब समय आ गया है। जैसे ही यह ख्याल आया, अतीत की सारी यादें मेरे दिमाग में चलने लगी।'' उन्होंने कहा, ''मैने खुद से कहा कि यह मेरा आखिरी मैच होने वाला है। बहुत अजीब लग रहा था।

विनेश फोगाट ने 2024 ओलंपिक से पहले ट्रायल की तारीखों, स्थान और प्रारूप की घोषणा करने का किया आग्रह

नई दिल्ली। विश्व चैंपियनशिप पदक विजेता पहलवान विनेश फोगाट ने बुधवार को केंद्रीय खेल मंत्रालय, भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) और अन्य संबंधित अधिकारियों से 2024 पेरिस ओलंपिक ट्रायल से पहले तारीखों, स्थान और प्रारूप की घोषणा करने का आग्रह किया है। पेरिस ओलंपिक 2024 का आयोजन इस साल 26 जुलाई से 11 अगस्त तक होगा।

विनेश ने केंद्र, डब्ल्यूएफआई, भारतीय ओलंपिक संघ और भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) से यह अपील करने के लिए सोशल साइट्स एक्स का सहारा लिया। उन्होंने सबसे पहले कुश्ती में छह 2024 ओलंपिक कोटा पर भारत की जीत पर खुशी व्यक्त की और कोटा विजेताओं को बधाई दी। विनेश ने बुधवार को एक्स पर लिखा, प्रिय शुभचिंतकों, आपके अटूट समर्थन और हमारे एथलीटों के समर्पण के लिए धन्यवाद, भारत ने कुश्ती में कुल छह ओलंपिक कोटा हासिल किए हैं। मैं हमारे देश के लिए कोटा अर्जित करने वाले पांच उल्लेखनीय महिला पहलवानों और उत्कृष्ट पुरुष पहलवानों को हार्दिक बधाई देती हूं। उनकी कड़ी मेहनत, बलिदान और जीत ने न केवल भारतीय कुश्ती को गौरव दिलाया है, बल्कि देश भर में अनगिनत लोगों को प्रेरित भी किया है। उन्होंने आगे लिखा, हालांकि, पेरिस ओलंपिक से सिर्फ तीन महीने दूर होने के बावजूद, भारतीय कुश्ती महासंघ ने अभी तक तारीख, समय और स्थान सहित आधिकारिक ट्रायल प्रारूप की घोषणा नहीं की है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि अन्य सभी महासंघों ने दिसंबर 2023 या नवीनतम जनवरी 2024 में एक स्पष्ट प्रारूप के साथ योग्यता मार्ग और परीक्षण प्रक्रिया की घोषणा कर दी है। विनेश ने कहा कि ऐसे महत्वपूर्ण बिंदु पर, सभी योग्य पहलवानों को ओलंपिक के रास्ते और प्रक्रिया के बारे में स्पष्टता होनी चाहिए।

उन्होंने कहा, इस तरह की स्पष्टता न केवल निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करती है बल्कि हमारे देश के पदक हासिल करने और वैश्विक मंच पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की संभावनाओं को भी अधिकतम करती है। मैं भारत के खेल मंत्रालय, आईओए, भारतीय खेल प्राधिकरण और भारतीय कुश्ती महासंघ से इस मामले को प्राथमिकता देने का अनुरोध करती हूं कि तुरंत आधिकारिक तौर पर ट्रायल के लिए तारीखों, समय, स्थान और सटीक प्रारूप की घोषणा करें, हमारे एथलीटों ने अपना कोटा हासिल करने के लिए अथक प्रयास किया है, और वे एक पारदर्शी और अच्छी तरह से परिभाषित चयन प्रक्रिया के आश्वासन और समर्थन के पात्र हैं। जैसा कि हम आशावाद के साथ आगे बढ़ रहे हैं, मैं सभी से अनुरोध करती हूं कि वे हमारे पहलवानों के पीछे एकजुट रहें और उन्हें पेरिस में चमकने के लिए आवश्यक समर्थन प्रदान करें। आइए, हम सब मिलकर महानता के लिए प्रयास करें और अपने देश को गौरवान्वित करें। हार्दिक धन्यवाद। भारत ने 12 मई को इस्तांबुल में आयोजित विश्व ओलंपिक कुश्ती क्वालीफायर में अपना अभियान दो पेरिस ओलंपिक 2024 कोटा के साथ समाप्त किया, जो पहलवान अमन सहरावत और निशा दहिया ने पुरुष और महिला कुश्ती में हासिल किए।

मैं एक दिन भारत के लिए ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतना चाहता हूं- प्रिंस दीप सिंह

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम इस महीने के अंत में होने वाले अपने यूरोप दौरे के लिए तैयारी कर रही है और टीम के गोलकीपर प्रिंस दीप सिंह अन्य देशों की टीमों के खिलाफ खेलने का मौका पाकर रोमांचित हैं। रोहित की अगुवाई में भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम 20 से 29 मई के बीच बेल्जियम, जर्मनी और नीदरलैंड में मैच खेलेगी। दौरे का हिस्सा बनने के लिए चुने गए बीस खिलाड़ियों में प्रिंस दीप सिंह भी शामिल हैं, जिन्हें गोलकीपिंग की जिम्मेदारी निभाने के लिए बिक्रमजीत सिंह के साथ चुना गया है। पंजाब के पठानकोट जिले की एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले प्रिंस दीप सिंह ने 2016 में पहली बार हॉकी स्टिक उठाई थी। उन्होंने गुरुवार को हॉकी इंडिया के हवाले से कहा, मैंने टीवी पर भारतीय टीम को खेलते हुए देखा और विशेष रूप से पीआर श्रीजेश के खेल का शौकीन था। इससे हममें इस खेल को खेलने की इच्छा पैदा हुई। जैसे ही मैंने अपने दोस्तों के साथ खेलते हुए इसका आनंद लेना शुरू किया, मैं एक अकादमी में चला गया।

प्रिंस दीप सिंह धीरे-धीरे रैंक में आगे बढ़े और ग्वालियर में हुए 5वें खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2022 में पंजाब का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिलने से पहले मध्य प्रदेश में आयोजित दूसरी हॉकी इंडिया जूनियर पुरुष अकादमी नेशनल चैंपियनशिप 2022 में राउंडग्लास पंजाब हॉकी क्लब अकादमी का प्रतिनिधित्व किया। जहां उनकी टीम ने कांस्य पदक जीता। उन्होंने जून 2023 में राउरकेला, ओडिशा में हुई 13वीं हॉकी इंडिया जूनियर

पुरुष राष्ट्रीय चैंपियनशिप में हॉकी पंजाब का भी प्रतिनिधित्व किया। हालाँकि टीम पांचवें स्थान पर रही, प्रिंस दीप ने टूर्नामेंट के दौरान और साल भर अन्य घरेलू टूर्नामेंटों में अपने गोलकीपिंग कौशल से छाप छोड़ी, जिसके परिणामस्वरूप इस साल की शुरुआत में बेंगलुरु में राष्ट्रीय कोचिंग शिविर में उन्हें 40 सदस्यीय जूनियर पुरुष का हिस्सा बनने के लिए तैयार किया गया। शिविर के दौरान अपने अनुभव को लेकर प्रिंस दीप ने कहा, मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

देश के सर्वश्रेष्ठ जूनियर खिलाड़ियों में शामिल होने से आप अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहते हैं। मैंने प्रत्येक अभ्यास सत्र के साथ बेहतर होने पर काम किया और इससे इसमें शामिल सभी लोगों को मुझे प्रेरित करने में मदद मिली। हम सभी खिलाड़ी और व्यक्ति दोनों के रूप में एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं। इससे टीम में सकारात्मक माहौल बनाने में काफी मदद मिलती है। भारतीय जूनियर पुरुष टीम के यूरोप दौरे से खिलाड़ियों को अपना खेल विकसित करने और यह सीखने में मदद मिलेगी कि सीज़न में उन्हें क्या काम करने की ज़रूरत है। प्रिंस का मानना है कि यह उनके लिए अपने खेल को अगले स्तर पर ले जाने का एक अवसर है। उन्होंने कहा, जब आप दूसरे देशों की टीमों के खिलाफ खेलते हैं तो आपको अपना ए-गेम लाना होता है। मैं इसे टीम के साथ-साथ खुद के लिए भी यह पहचानने का एक अवसर मानता हूं कि हम क्या अच्छा कर रहे हैं और खेल में अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचने में सक्षम होने के लिए हमें क्या बदलाव करने की जरूरत है। यही इस दौरे का कारण है और मेरा मानना है कि हम इसका पूरा उपयोग करेंगे। उन्होंने कहा, फिलहाल, मैं जूनियर स्तर पर देश के लिए अच्छा प्रदर्शन करना चाहता हूं और जब भी मौका मिले टूर्नामेंट जीतने में हमारी मदद करना चाहता हूं और फिर सीनियर भारतीय पुरुष हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व करना चाहता हूं। मैं एक दिन भारत के लिए ओलंपिक में गोल्ड जीतना चाहता हूं। यह मेरा अंतिम सपना है।

बलात्कार मामले में बरी होने पर लामिछाने ने कहा-पहले दिन से ही खुद को समझा रहा था कि कुछ गलत नहीं किया

काठमांडू। बलात्कार के मामले में पाटन उच्च न्यायालय द्वारा बुधवार को बरी किए जाने के बाद, नेपाल के स्टार स्पिनर संदीप लामिछाने ने कहा कि पहले दिन से ही वह खुद को आश्वस्त कर रहे थे कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। उन्होंने यह भी कहा कि वह आने वाले वर्षों में अपने खेल में अपने देश के लिए अच्छा प्रदर्शन करने की पूरी कोशिश करेंगे।

लामिछाने को बलात्कार के एक मामले में पाटन उच्च न्यायालय ने बरी कर दिया था और अब वह 1 जून से वेस्टइंडीज और अमेरिका में शुरू होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के लिए चयन के लिए उपलब्ध हैं। टी20 वर्ल्ड कप के लिए क्रिकेट एसोसिएशन (सीएएन) ने पहले ही टीम की घोषणा कर दी थी। रोहित पौडेल उन खिलाड़ियों के युवा समूह का नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं जिन्हें मई की शुरुआत में टीम में नामित किया गया था। हालांकि, 25 मई तक टीम में बदलाव किया जा सकता है और संदीप टीम में जगह बना सकते हैं। अपने बरी होने के बाद लामिछाने ने बुधवार को इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में कहा, डेढ़ साल से ज्यादा समय हो गया; पहले दिन से ही मैं खुद को समझा रहा था कि मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है। मुझे उस मामले में फंसाया गया जहां मैंने कुछ भी गलत नहीं किया था। आखिरकार हम यहां तक पहुंचे हैं। मैं जिला अदालत के तत्कालीन फैसले का सम्मान करता हूं और उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए फैसले का भी मैं सम्मान करता हूं। मैं देश को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाने की पूरी कोशिश करूंगा। नेपाल क्रिकेट एसोसिएशन (सीएएन) ने भी नेपाली लेग स्पिनर संदीप लामिछाने का निलंबन रद्द कर दिया। एक प्रेस बयान में, सीएल ने घोषणा की कि उसका निर्णय पाटन उच्च न्यायालय के फैसले के अनुरूप है, जिसने लामिछाने को सभी आरोपों से बरी कर दिया।

हमें अगले मैच में स्मार्ट क्रिकेट खेलना होगा: सैमसन

गुवाहाटी,एजेंसी। लगातार 9 मैचों में से 8 मैच जीतने वाली टीम राजस्थान रॉयल्स ने अंत में अपने लिए रास्ता मुश्किल कर लिया है। अब यह हालत हो गई है कि तय नहीं है कि राजस्थान क्वालिफायर खेलेगी या फिर एलिमिनेटर। वह तो भला हो दिल्ली की जीत ने राजस्थान को स्वत प्लेऑफ के लिए क्वालिफाए करवा दिया। राजस्थान का अंतिम मैच इस ही मैदान पर कोलकाता के साथ है अगर यह मैच राजस्थान जीत जाती है तो फिर वह क्वालिफायर खेलेगी। अन्यथा उसे बैंगलूरू या चेन्नई की विजेता से अहमदाबाद में एलिमिनेटर खेलना पड़ेगा।

राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने कहा कि हमें अपनी योजनाओं पर कायम रहते हुए अगले मैच में स्मार्ट क्रिकेट खेलना होगा। उन्होंने पंजाब किंग्स के हाथों मिली हार के बाद कहा, ईमानदारी से कहूं तो हम एक अच्छे विकेट की अपेक्षा कर रहे थे। यह 140 रन वाली यह पिच नहीं थी, लेकिन हमें 160-170 तो बनाने ही चाहिए थे। हम ऐसे विकेटों पर खेलने के आदी नहीं हैं। हमें यहां पर अगले मैच में स्मार्ट क्रिकेट खेलना होगा। सैमसन ने कहा, ईमानदारी से कहूं तो हमें स्वीकार करना होगा कि हमें असफलता मिली है। हमें अपनी योजनाओं पर कायम रहना होगा। जब आप लगातार चार मैच हारते हैं तो आपको देखना होगा कि कहां कमी हो रही है, टीम के लिए क्या अच्छा नहीं जा रहा है। किसी

एक को आगे आकर कहना होगा, 'मैं टीम के लिए मैच जीतने जा रहा हूं।' हां, यह टीम गेम है लेकिन हमारे पास कई मैच विजेता खिलाड़ी हैं। इनमें से ही किसी एक को आगे आना होगा और हमारे लिए मैच जीतने होंगे। अगर हम ऐसा करने में कामयाब हो गए और कुछ खिलाड़ी अपना फॉर्म सुधार सकें तो फिर परिणाम में अंतर आने लगेगा।

एक नजर

आपका एक एक वोट बनाएगा केंद्र में मजबूत मोदी सरकारः कंगना

कुल्लू,एजेंसी। मंडी से भाजपा प्रत्याशी कंगना रनौत ने कांग्रेस नेताओं को उनके पाकिस्तान समर्थित बयान को लेकर तीखा हमला किया है। आनी विधान सभा क्षेत्र के अंतर्गत चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कंगना ने कहा कि वे कहते हैं कि पाकिस्तान ने चूड़ियां नहीं पहनी हैं। अरे भाई, नहीं पहनी हैं तो हम पहना देंगे। पाकिस्तान को आटा चाहिए, बिजली चाहिए, हमें क्या पता उनके पास चूड़ियां भी नहीं हैं। देश कांग्रेस नेतृत्व वाली अस्थिर व कमजोर सरकार नहीं चाहता। देश का प्रधानमंत्री डरपोक नहीं चाहिए। ये लोग इतने डरे हैं कि इन्हें सपने में भी पाकिस्तान का परमाणु बम दिखाई देता है। रनौत ने कि कहा जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम फारूक अब्दुल्ला ने था कि पाकिस्तान के पास भी एटम बम है और उसने चूड़ियां नहीं पहन रखी हैं। कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर का भी एक वीडियो प्रसारित हुआ था, जिसमें वह कहते दिख रहे हैं कि आतंकवाद को खत्म करने के लिए चर्चा बहुत जरूरी है। वर्ना पाकिस्तान सोचेगा कि भारत अहंकार के साथ हमें दुनिया में छोटा दिखा रहा है। ऐसे में पाकिस्तान में कोई भी पागल इन बम का इस्तेमाल कर सकता है। कंगना ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के नेता दलित, महादलित, आदिवासी के आरक्षण को उनसे लेकर मुसलमानों को देना चाहते हैं। यह देश ऐसी हरकत नहीं चलने देगा। पीएम मोदी जान की बाजी लगा देंगें, ना संविधान में हाथ लगाने देंगे ना आरक्षण छीनने देंगे। भाजपा धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा कि आपका एक-एक वोट केंद्र में पीएम नरेंद्र मोदी की मजबूत सरकार बनाएगा। कांग्रेस का किसी ने गलती से भी बटन दबा दिया तो उसका वोट बेकार जाना तय है।

नरसिंहपुर में दो बाइकों के बीच जोरदार भिड़ंत, मां-बेटे समेत चार लोगों की मौत

भोपाल। मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जिले में गुरुवार शाम को स्टेट हाइवे 44 पर एक भीषण सड़क हादसा हो गया। यहां दो बाइकों के बीच जोरदार भिड़त हो गई। इस हादसे में मां-बेटे समेत चार लोगों की मौत हो गई। वहीं एक बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई, जिसे जबलपुर रेफर किया गया है। हादसे के बाद शवों को रखने के लिए शव वाहन या एंबुलेंस की भी व्यवस्था नहीं की गई। शवों को लोडिंग ऑटो में जिला अस्पताल ले जाया गया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, हादसा गुरुवार शाम करीब साढ़े चार बजे साईंखेड़ा-झिकोली मार्ग पर हुआ। साईंखेड़ा में रहने वाले परिवार के चार लोग एक बाइक पर सवार होकर इलाज के लिए भोपाल जा रहे थे।

इसी दौरान उनकी बाइक सामने से आ रही एक अन्य बाइक से टकरा गई। इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। मृतकों में एक बाइक पर सवार मां-बेटे, नातिन और दूसरी बाइक पर सवार एक युवक शामिल है। एक बाइक पर सवार तीन मृतकों की पहचान मुन्नी बाई (50 वर्ष) पत्नी मोती लाल नौरिया, कृष्णपाल (19 वर्ष) पुत्र मोती लाल नौरिया और नातिन हेमलता (10 वर्ष) पुत्री नंदूलाल नौरिया के रूप में हुई है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नागेंद्र पटेरिया ने बताया कि दो बाइकों के बीच टक्कर में चार लोगों की मौत हुई है। जिसमें एक ही परिवार के मां, बेटा और नातिन शामिल हैं। वहीं, दूसरे वाहन सवार एक युवक की मौत हुई है और हादसे में एक बच्ची घायल हुई है। बच्ची की हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया है और घायल का इलाज जारी है। घायल बच्ची का नाम राधिका पुत्री मानसिंह है। उसका जबलपुर की अस्पताल में इलाज किया जा रहा है।

डराना छोड़, अपने वादों का लेखाजोखा जनता के समक्ष रखें पीएम मोदीः आनंद शर्मा

धर्मशाला,एजेंसी। कांगड़ा-चंबा लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने जिला चंबा के डलहौजी विधानसभा के विभिन्न क्षेत्रों में चुनाव प्रचार किया। इस अवसर पर आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनावों में सत्तारुढ़ दल के नेता अपने कटु भाषणों से निरंतर देश और समाज में लकीरें खींच रहे हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव तो हो जाएगा, मगर जो कटुता पैदा की जा रही है उससे तनाव पैदा हो जाएगा, जिससे देश और समाज का अहित होगा। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व अन्य भाजपा नेताओं का नाम लिए बिना कहा कि वे अपने विचारों में ऐसा खौफनाक मंजर दिखाकर देश की जनता को डाराते हैं कि अगर वो ना आए तो क्या होगा। उन्होंने सवाल किया कि क्या नरेंद्र मोदी के पीएम बनने से पहले भारत की पहचान नहीं थी? उन्होंने देश की जनता को आगाह करते हुए कहा कि सत्तारुढ़ दल के नेता ऐसा माहौल बनाने की कोशिशों में लगे हैं कि जैसे उनकी सरकार बनने से पहले देश में कुछ नहीं हुआ था, जो सरासर झूठ है।

आनंद शर्मा ने कहा कि आजादी के बाद कांग्रेस ने देश की नींव रखी। कांग्रेस की सोच समावेशी है। समाज के हर वर्ग को जाति, धर्म और क्षेत्र के भेदभाव के बिना बराबरी का दर्जा दिया गया। हमारा संविधान भी इसी को मानता है, मगर दुर्भाग्य से कोई ऐसे तीखे शब्द कह रहा है, जिसकी सोच समावेशी नहीं है। चुनावी फायदे के लिए देश और समाज में निरंतर लकीरें खींची जा रही हैं। आनंद शर्मा ने कहा कि वक्त की पुकार के चलते तमाम दल एक साथ आकर प्रजातंत्र को बचाना चाहते हैं। देश में खौफ का वातावरण है। सरकारी संस्थाओं का दुरुपयोग हो रहा है। विरोधियों पर निशाना लगाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इन परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें चुनाव मैदान में उतरना पड़ा। उन्होंने कहा कि पुराने लोगों ने देश और हिमाचल को आगे बढ़ते हुए देखा है। उन्होंने कहा कि देश के हर नागरिक को बिना भेदभाव के संवैधानिक अधिकार दिए गए हैं, जिन्हें कोई नहीं छीन सकता। अगर कोई ऐसा प्रयास भी करता है तो सुप्रीम कोर्ट हस्तक्षेप करके उसे रोक देता है। हर नागरिक का एक-एक वोट मिलकर सरकार बनाता है। आनंद शर्मा ने कहा कि मोदी प्रधानमंत्री बने तो कहते हैं हमसे पहले भारत कमजोर था। जबकि सच्चाई यह है कि उनके पीएम बनने से पहले देश परमाणु शक्ति था, अंतरिक्ष शक्ति था और चंद्रयान भी चांद पर जा चुका था चांद पर तिरंगा उतर चुका था।

सरकार ने गोपालकों की धनराशि बढ़ाकर 1200 रुपये कीः सीएम

शमला,एजेंसी। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविन्दर सिंह सुक्खू ने वीरवार को यहां कहा कि भाजपा ने गाय के नाम पर केवल राजनीति की है, जबकि गाय और गोपलकों के कल्याण के लिए वर्तमान कांग्रेस सरकार ने अनेकों योजनाएँ बनाई है। उन्होंने कहा कि बेसहारा पशुओं की समस्या का निदान करने के लिए राज्य सरकार ने निजी गौ-सदनों में आश्रित गौवंश को दिए जाने वाले अनुदान को भी 700 रूपये से बढ़ाकर 1200 रूपये प्रतिमाह करने का निर्णय लिया है।

उन्होने कहा कि इसके अतिरिक्त राज्य में बेसहारा पशुओं की समस्या से निपटने के लिए एक राज्य स्तरीय टास्क फोर्स का गठन किया जाएगा, जो इन पशुओं को किसानों तथा स्थानीय समुदायों से परामर्श के के बाद गौ-अभ्यारण्यों तथा गौशालाओं में रखने बारे अपने सुझाव देगी, जिसका प्रावधान बजट 2024-25 में किया गया है। इन कदमों से बेसहारा पशुओं की समस्या से निपटने में मदद मिलेगी और किसान फिर से खेती-बाड़ी की ओर आकर्षित होंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए अनेक प्रभावी पग उठा रही है ताकि गांवों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में आशातीत सुधार लाया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में बसती है तथा सरकार की नीतियां एवं कार्यक्रमों को उनके आर्थिक स्तर को सशक्त करने के लिए बनाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार ने पशुपालन तथा दूध उत्पादन को प्राकृतिक खेती से जोड़कर किसानों की आय में वृद्धि को सुनिश्चित किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पशुपालकों को उत्तम नस्ल के पशु उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सोलन जिले के दाड़लाघाट में कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जाएगा, जहां कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश देश का पहला राज्य है जहां दूध पर समर्थन मूल्य प्रदान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने गाय के दूध पर 45 रूपये प्रति लीटर तथा भैंस के दूध पर 55 रूपये प्रति लीटर समर्थन मूल्य पशु पालकों को सुनिश्चित किया जा रहा है। ठाकुर सुखविन्दर सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार किसानों और पशु पालकों को दूध उत्पाद को उचित मूल्य सुनिश्चित करेगी तथा दूध से बनने वाले उत्पादों की गुणवता पर भी ध्यान देगी।

लोस चुनावः भाजपा का दांव पड़ेगा उल्टाः प्रदीप यादव

दुमका,एजेंसी। संथाल परगना के तीन लोकसभा सीटों पर एक जून को मतदान होना है। चुनाव की तारीखे जैसे-जैसे करीब आ रही है। वहीं आरोप-प्रत्यारोप से संथाल परगना की राजनीतिक तपिश भी बढ़ती जा रही है। अब गोड्डा लोकसभा सीट से इंडी गठबंधन के तहत कांग्रेस प्रत्याशी एवं पोडैयाहाट विधायक प्रदीप यादव ने भाजपा प्रत्याशी एवं सांसद डॉ निशिकांत दुबे पर नामांकन में जानकारी छुपाने का आरोप लगाया है। प्रदीप यादव ने मामले में चुनाव आयोग से कार्रवाई की मांग करते हुए निशिकांत दुबे का नामांकन रद्द करने की मांग की है। इस मामले में प्रदीप यादव ने गोड्डा के जिला निर्वाची पदाधिकारी सह उपायुक्त से शिकायत की है। वहीं मनी लोंड्रिग मामले में इडी द्वारा गिरफ्तार राज्य के ग्रामीण विकास मंत्री आलमगीर आलम के मामले में प्रदीप यादव ने कहा कि देश में जितनी गिरफ्तारियां हो रही है।

सब गिरफ्तारी का एक ही पार्ट है कि देश में एक ऐसा माहौल बनाया जाए कि लगे कि गठबंधन पूरी तरह से भ्रष्टाचार में संलिप्त है और भाजपा पूरी तरह दूध की धुली हुई है। प्रदीप यादव ने कहा कि यह सब दांव उल्टा पड़ेगा। दुमका के एमपी एमएलए की विशेष कोर्ट में गुरुवार को एक मामले में पेशी के बाद मीडिया से बात करते हुए प्रदीप यादव ने कहा कि निशिकांत दुबे ने क्रिमिनल केस से जुड़ी दो मामलों का अपने नामांकन में जिक्र नहीं किया है। कांग्रेस के पोड़ैयाहाट विधायक प्रदीप यादव की छेड़खानी समेत अन्य दो मामले में गुरुवार को पेशी हुई। विधायक की पेशी दो अलग-अलग मामले में तृतीय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह एमपी एमएलए के विशेष न्यायाधीश राजेश सिन्हा के न्यायालय में हुई। दोनों मामले गवाही के लिए निर्धारित था। लेकिन न्यायालय में एक भी केस में कोई गवाह अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत नही किया गया। अगली तिथि 11 जून को निर्धारित हुई। पहला मामला गोड्डा मुफस्सिल थाना में दर्ज प्राथमिकी 37/17 से संबंधित है। जिसमें अडानी पावर प्लांट के विरोध में किए गए आंदोलन को लेकर सरकारी संपत्ति नुकसान, धक्का-मुक्की समेत अन्य आरोपों में दर्ज हुआ था। इसमें प्रदीप यादव, धर्मेन्द्र राय एवं कैलाश मंडल थे। वही दूसरा मामला में महिला कार्यकर्ता द्वारा प्रदीप यादव पर दुष्कर्म का प्रयास के लगाये गये आरोप से जुड़ा है। मामला में देवघर साइबर थाना कांड संख्या 13/2019 में दर्ज हुआ था। जिसका सेशन ट्रायल 127/21 है। दुष्कर्म के प्रयास आरोप से जुड़ा यह मामला 20 अप्रैल 2019 का है।उस समय प्रदीप यादव झारखंड विकास मोर्चा प्रजातांत्रिक के महासचिव पद पर काबिज थे। उसी दौरान उनकी ही पार्टी की एक महिला नेत्री ने होटल में बुलाकर उनसे दुष्कर्म का प्रयास करने का आरोप लगाया था।

मोदी के रहते कोई भी आदिवासी, दलित और ओबीसी आरक्षण को खत्म नहीं कर सकता हैः बाबूलाल मरांडी

पाकुड़,एजेंसी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने राजमहल लोकसभा के पाकुड़ जिले में बूथस्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन को गुरुवार को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के रहते कोई भी आदिवासी, दलित और ओबीसी के आरक्षण को खत्म नहीं कर सकता है। इंडी गठबंधन वालों की दुकान बंद हो रही है। उनके साथ जनता खड़ी नहीं है। इसलिए भी दुष्प्रचार कर रहे हैं। उनकी साजिश को समझें।

मरांडी ने कहा कि विपक्षी दल प्रधानमंत्री मोदी को हटाने के लिए साजिश कर रहे हैं। पिछले 10 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी ने भ्रष्ट मंत्रियों, अफसरों और नेताओं पर कार्रवाई की है। जो जेल में बंद हैं। आज इस लोकसभा क्षेत्र से दो-दो लोग जेल में बंद हैं। राजमहल लोकसभा के बरहेट विधायक और पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जेल में बंद है। लोग कहते हैं कि उन्हें फंसा दिया गया है परन्तु वे अपनी करनी से जेल में है। उन्होंने राजमहल के पहाड़ों को अवैध रूप से खनन कर पत्थरों को बिहार और बांग्लादेश को बेच दिया। पैसे अपनी तिजोरी में भर लिये। नदी का बालू यूपी और बिहार ले जाते रहे परन्तु यहां के लोगों को बालू नहीं मिलती है। बालू लाने पर उन पर कार्रवाई की जाती है। झारखंड के लोगों को प्रधानमंत्री आवास बनाने के लिए बालू नहीं मिलती है। लोगों को परेशानी हो रही है। उन्होंने कहा कि हेमंत अमरापाड़ा, लिट्टीपाड़ा में रात में कोयला की चोरी कराते थे। फर्जी कागज बनाकर जमीन को बेचने और बेचवाने का काम किया। पकुड़िया में 800 से 900 बीघा जमीन अपने भाई और बाकी लोगों के नाम से कराए हैं। ऐसे में झारखंड के लोग क्या करेंगे। संताल परगना के लोग क्या करेंगे। जिस प्रकार से हेमंत सोरेन ने झारखंड को लूटा है, उसके कारण आज वे जेल में हैं। उन्होंने कहा कि आईएएस पूजा सिंघल के घर से 20 करोड रुपये मिले। वह भी जेल में हैं। अभी-अभी इस क्षेत्र से विधायक और सरकार में दूसरे नंबर के मंत्री आलमगीर आलम के निजी सचिव के नौकर के घर में 35 करोड़ रुपये मिले। ये आप सबों से लूटा हुआ पैसा है। चोरी किया हुआ पैसा है। अवैध बालू, पत्थर, जमीन, कोयला से कमाया हुआ पैसा है। ठेकेदारी में कमीशन से लिया हुआ पैसा है। ब्लॉक से कमीशन के रूप में लिया हुआ पैसा है। मनरेगा के कमीशन का पैसा है। वेतन डेढ़ लाख रुपये मिलता है। वैसे में इतना पैसा कहां से आया। वेतन के हिसाब से 10 साल में या जीवन भर में भी इतना पैसा जमा नहीं होगा। यह पैसा राज्य की गरीब जनता का है। ये लोग आरोप लगाते हैं कि फंसाया जा रहा है, जिसके पास भी ग़लत ढंग से कमाया हुआ पैसा मिलेगा, उसको जेल जाना ही पड़ेगा। उसको कोई बचा नहीं सकता है। मरांडी ने कहा कि एक नौकर के घर में इतना पैसा मिला है। मंत्रियों, सचिव, दलाल, बिचौलियों के घर में जिस दिन तलाशी होगी, तो कोई बचेगा नहीं। हर भ्रष्ट लोगों के यहां तलाशी होगी। जनता मोबाइल पर दलाल, गुंडागर्दी, घूसखोर, कमीशनखोर की सूची भेज दे, निश्चित तौर से उसे भारत सरकार की एजेंसी को देंगे। विश्वास दिलाते हैं कि एक-एक कर भ्रष्ट और दलाल अफसरों, दलाल नेताओं को जेल में बंद करा देंगे।

डॉ. एंजल भाटी चौहान के मार्गदर्शन में सेंट्रल जोन एमसीडी द्वारा राष्ट्रीय डेंगू दिवस 2024 का आयोजन

सद्भावना टुडे, संवाददाता

नई दिल्ली। जन स्वास्थ्य विभाग सेंट्रल जोन एमसीडी ने डॉ. एंजल भाटी चौहान आईएएस, डिप्टी कमिश्नर सेंट्रल जोन एमसीडी के मार्गदर्शन में 16 मई 2024 को एब्सोल्यूट ह्यूमन केयर फाउंडेशन (एएचसीएफ) और इंद्रप्रस्थ इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी दिल्ली (IIITD) के सहयोग से राष्ट्रीय डेंगू दिवस 2024 मनाया। कार्यक्रम में जीएनसीटीडी की स्वास्थ्य इकाइयों से 150 से अधिक प्रतिभागियों, एमसीडी स्वास्थ्य इकाइयों के चिकित्सा अधिकारियों, मध्य क्षेत्र के निजी अस्पतालों के नोडल वीबीडी डॉक्टरों, प्रमुख संस्थानों और संकाय के नोडल अधिकारियों, छात्रों और आईआईआईटीडी के रखरखाव कर्मचारियों ने भाग लिया। परिचयात्मक सत्र के दौरान, डॉ. एनआर तुली डीएचओ सीएनजेड एमसीडी ने राष्ट्रीय विषय समुदाय से जुड़ें, डेंगू को नियंत्रित करें के साथ राष्ट्रीय डेंगू दिवस के महत्व पर संबोधित किया।

उन्होंने मध्य क्षेत्र में मच्छर प्रजनन मुक्त संस्थानों पर भी चर्चा की। डॉ. रूप कुमारी, एनपीओ, डब्ल्यूएचओ इंडिया ने सत्र को संबोधित किया और भारत में डेंगू की रोकथाम में डब्ल्यूएचओ की भूमिका के बारे में जानकारी दी। उन्होंने दिल्ली में डेंगू नियंत्रण के लिए डब्ल्यूएचओ के सहयोग का आश्वासन दिया।। एनसीडीसी के पूर्व अतिरिक्त निदेशक और डब्ल्यूएचओ सलाहकार और सीसीसीओ डॉ. आरएस शर्मा ने समुदाय के सदस्यों और हितधारकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ सलाहकार और पूर्व अतिरिक्त निदेशक एनसीवीबीडीसी डॉ. कल्पना बरुआ ने डेंगू नियंत्रण में राष्ट्रीय परिदृश्य और चुनौतियों पर जानकारी दी। उन्होंने डेंगू नियंत्रण में सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग (एमसीडी) से सामुदायिक जागरूकता मेगा अभियान शुरू करने को कहा।। डब्ल्यूएचओ एसईएआरओ के पूर्व तकनीकी अधिकारी डॉ. बीएन नागपाल ने डेंगू वेक्टर बायोनोमिक्स, सामान्य प्रजनन स्थलों और उनके निवारक उपायों पर विचार-विमर्श किया। द्धद्धद्धञ्चष्ठ के मुख्य अभियंता श्री. संजय रॉय ने मच्छर प्रजनन मुक्त परिसर क्षेत्र के लिए आईआईआईटीडी के प्रयासों की जानकारी दी और मध्य क्षेत्र क्षेत्र में वीबीडी नियंत्रण के लिए सभी क्षमताओं में मदद के लिए प्रतिबद्धता जताई। उनके प्रयासों की सभी विशेषज्ञों ने सराहना की। खुली चर्चा का संचालन आरएमआरसी, गोरखपुर के पूर्व निदेशक डॉ. रजनीकांत ने किया।। खुली चर्चा में सभी विशेषज्ञ और प्रतिभागी शामिल हुए और उन्हें स्रोत कटौती में उनकी भूमिका के बारे में बताया गया।वेक्टर जनित रोग की रोकथाम और नियंत्रण के प्रमुखों ने राष्ट्रीय डेंगू दिवस मनाने में सेंट्रल जोन एमसीडी के प्रयासों की सराहना की। मध्य क्षेत्र के उपायुक्त ने मच्छरों के प्रजनन मुक्त परिसर की पहल के लिए जन स्वास्थ्य विभाग मध्य क्षेत्र के प्रयासों की सराहना की। डॉ. पृथ्वी राज कीटविज्ञानी मध्य क्षेत्र द्वारा जीवित मच्छरों के प्रजनन और आईईसी गतिविधियों पर एक प्रदर्शनी प्रदर्शित की गई। राष्ट्रीय डेंगू दिवस के दौरान मध्य क्षेत्र के सभी 25 वार्डों में कई अन्य आईईसी गतिविधियाँ भी की गईं।

सावधान रहें नागरिक मोबाइल पर एनीडेस्क ऐप से हो सकती ठगीः मोहित हांडा

हिसार। पुलिस अधीक्षक मोहित हांडा ने कहा है कि ऑनलाइन खरीदारी या खाते से पैसे ट्रांसफर करने के लिए ज्यादातर लोग मोबाइल ऐप का इस्तेमाल करते हैं। अगर मोबाइल पर किसी सोशल मीडिया के जरिए एनी डेस्क मोबाइल ऐप का लिंक फॉरवर्ड होकर आ जाए तो उस पर क्लिक करने से बचें। यह एप बैंक खाते के लिए घातक हो सकता है। पुलिस अधीक्षक मोहित हांडा ने गुरुवार को कहा कि आजकर साइबर ठग ठगी के लिए एनी डेस्क ऐप का ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि साइबर ठग प्रतिदिन धोखाधड़ी कर रहे हैं। पैसे हड़पने के लिए नए-नए हथकंडे अपना रहे हैं। ऐसे में किसी भी दूरस्थ डेस्कटॉप ऐप को अपने डिवाइस में डाउनलोड न करें, किसी भी व्यक्ति को अपनी आईडी, पासवर्ड, पिन, खाता संख्या आदि की जानकारी न दें। उन्होंने एनीडेस्क नाम के एक रिमोट डेस्कटॉप ऐप बारे आगाह किया है। एनीडेस्क ऐप ठगों के लिए एक बहुत ही सरल साधन है, क्योंकि यह उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट पर अलग-अलग मोबाइल और सिस्टम से कनेक्ट करने की अनुमति देता है। आम शब्दों में यह एक स्क्रीन शेयरिंग प्लेटफॉर्म की तरह है। अपराधी इसका उपयोग धोखा देने और ऑनलाइन ठगी के लिए कर रहे हैं।

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि साइबर थाना में इस संबंध में एक शिकायत आई है कि एक साइबर अपराधी ने हिसार निवासी एक युवक के मोबाइल फोन में एनिडेस्क ऐप डाउनलोड करवाकर 83 हजार 112 रुपए की ठगी की है। युवक ने ऐसे साइबर ठगों की शिकायत पुलिस से की है। पुलिस अधीक्षक का कहना है कि कुछ व्यक्ति गूगल पर मौजूद कस्टमर केयर का नंबर सर्च करके इस्तेमाल करते हैं और कुछ मामलों में पीड़ित खुद कुछ समस्याओं के समाधान के लिए कस्टमर केयर को कॉल करता है। ऐसे में धोखाधड़ी करने वाले का मकसद पीड़ित के मोबाइल फोन पर एनी डेस्क या टीम वीवर ऐप डाउनलोड करने के लिए बाध्य करना होता है। कोई भी ऐप डाउनलोड करने के बाद धोखाखड़ी करने वाले को 9 अंकों के रिमोट डेस्क कोड की आवश्यकता होती है। इसलिए वह उसके लिए पीड़ित से पूछताछ करेगा।

मुद्रक, प्रकाशक, स्वामी, सैफुल्लाह सिद्दिकी द्वारा आरडी प्रिंटिंग एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-08, नोएडा (यूपी), से छपवा कर एन-81, बटला हाउस, जामिया नगर पुलिस स्टेशन, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित किया। सर्वाधिकार सुरक्षित, किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। (संपादक- सैफुल्लाह सिद्दिकी)